'कटिया' के बहाने, मोती बी.ए. के कविता पर चर्चा

लोक के संस्कृति, लोक-हृदय के भीतर निरन्तर बहत रहे वाली आत्मीय अन्तर्धारा हऽ। जीवन में तमाम आधुनिक बदलाव का बादो ई अन्तर्धारा, संवेदन-स्तर पर, लोगन का मन के बन्हले, अपना धारा में अपने आप बहाइ ले जाले। ऋतु चक्र आ मौसम का फेर बदल का साथ, प्रकृति से आपरूपी सटाव, लगाव का कारन, खेतिहर-संस्कृति जीवन के हर उत्सव आ अनुष्ठान, उछाह से करेले। फागुन आ चइत के हुलास में अन्तर लउकेला, चइत में हुलसल गँवई सरेह लोकमन में जागरन के एगो नये हलचल पैदा करेला। खेतन में गदराइल पाकत फसल, 'कटिया' का अनुष्ठान खातिर नेवतेले आ जब सुतार आ जाला त लोक-धड़कन तेज हो जाले। मोती बी०ए० के एगो कविता हऽ 'कतिया के सुतार'। जवना घरी मोती जी एकर रचना कइले रहलन, ओघरी के गाँव के समय-सन्दर्भ तनी दोसर रहे। तब हर-फार, फरुहा-कुदार, खुरुपी-हँसुआ क चलती रहे। आज एकर मोल तनी कम हो गइल बा।

आग-पाछ होत मौसम आ ट्रैक्टर-हार्वेस्टर का जमाना में खेती-बारी क पुरनकी तकनीकी आ ब्यवहार बदल गइल बा, लोक-संबेदन आ ओकरा उमंग-उछाह में कमी आ गइल बा। ऊ आपुसी आत्मीयता आ प्रेम घटल बा, जवन खेतिहर के सामूहिक आ पारस्परिक भाव में एक-दुसरा से नथले-जोरले रहे, जवन बोअनी, रोपनी, कटिया का समय होखे वाला 'जन-जागरन' के उछाह-उमंग से भरत रहे। समय-साँच आजु ले नइखे बइलल। अभाव आ औचक नियति के मार का बावजूद कबो निराश ना होखे वाला किसान, हर आफत-बीपत आ चुनौती से जूझत, अपना कृषि-कर्म से बिमुख ना होला। पाथर-पाला, अति-बरखा, बेमौसम बरसात, बाढ़ आ सूखा सब किसाने का खेत-खरिहान से होके गुजरेला। सगरी बिपरीत स्थिति का बादो किसान कबो जोते-बोवे से ना चूके, ऊ हर 'रिस्क' उठाइ के आपन धरम निभाई- बोई, रोपी आ कवनो उपाइ से जियका जियावत, फसल के अंत ले अगोरिया करी। खाली एही उमेद में कि फसल तेयार होते ओकरा हर समस्या आ दुख के अंत होई। सचहूँ जब फसल तइयार होले त खेत में झपर-झपर झूमत बालियन के देखते-मातर, स्रम सुफल हो जाला- खाली खेतिहरे ना, ओकर पूरा परिवार मगन हो जाला, एगो नया आत्मविश्वास उमगि आवेला -

गाँठे खइनिया, माथे पगरिया
हाथे हँसुववा काँखे लउरिया
ले लिहले बलमा हमार हो सजनी
कटिया के आइल सुतार।

ई 'स्केच' हऽ ओह किसान के अगराइल भाव-भंगिमा के, जवना में स्रम-साधना फुरला के

आत्मविश्वास आ उछाह बा। 'कटिया' के 'सुतार' ऊ शुभ घड़ी हऽ, जवन समूचा वातावरन के नया चेतना, नया हुलास से भर देत बा, जइसे कवनो पुनीत अनुष्ठान होखे जा रहल होखे आ घर क मलिकार उछाह से तइयार हो गइल होखे, ओकरा सँग-सँग पूरा घरवे एकाएक क्रियाशील हो उठल होखे। 'कटिया' से जुड़ल लोक-संबेदन आ क्रियाशीलता के जियतार-उरेह करत मोती जी एह अवसर के साक्षी बाड़न-

कोरा के बचवा के हाली पिया द ऽ
बड़का लरिकवा के बसिया खिया द ऽ
गइया-बछरुआ के नादे लगा द ऽ
बैला के नादे में सानी चला द ऽ
कबके भइल भिनुसार हो सजनी
कटिया के आइल सुतार!

XXXX XXXXX XXXXX

मोटे-मोटे लिटिया पर नून-मरिचाई
खाये के बेरिया ना होला ओझाई
बनि, घरे आई, पिटाई-कुटाई,
गोहुआँ पिसाई त गितिया गवाई
भइले मगन बनिहार हो सजनी
कटिया के आइल सुतार!

ई क्रियाशील जन-जागरन, फजीर होते खेत में तइयार फसल का कटिया वाला अनुष्ठान खातिर बा। गौर करे वाली बात बा कि ई पारस्परिकता कुछ दशक पहिले खेतिहर आ खेतिहर-बनिहारन का परिवार में आत्मीय तत्परता का साथ कायम रहे। पूर्वांचल का भोजपुरी भाषा-समाज के अब नवका पीढ़ी तइयार हो गइल बा। शहरी-रुझान वाली आधुनिकता आ जातीय आधार पर घर-घर में घुसल राजनीति एह साझा-संस्कृति का आपुसी ताना-बाना के तूरि चुकल बिया।

कविता के समय आ समय के कविता दूनों कसौटी पर मोती बी०ए० के ई कविता 'कटिया के सुतार' जियतार आ अरथवान कविता बिया। एम्में भोजपुरी लोक आ ओकरा भाषा के क्रियाशीलता के सुभाविक शब्द-स्पन्दन आ ओकर जीवन 'लय' बा। ऋतु-चक्र महीना के ज्ञान, बोध आ अनुभूति बा। जवना संपृक्ति आ आत्मीयता से कवि स्मृति-चित्रन से अपना भावाभिव्यक्ति के सजावत बा, ओइसहीं अगर पढ़हूँ वाला का भीतर रचना के ग्रहणशीलता आ आत्मीयता रहे त ओकर आस्वाद बढ़ जाई। 'कटिया' का पाछा के वृत्तान्त, वर्तमान के चोट आ भविष्य के चिन्ता के समेटत ई कविता समय का साँच के बहुत कुछ बयान करत लउकी-

चितरा-सेवाती में सेवता घुमवलीं
अगहन में मरि-मरि पानी चलवलीं
ताले के लेंड़ई आ नेती के छींटा
गोरुवा-बछरुवा-लइकवा जियवलीं
अब लागी मुँहें अहार हो सजनी
कटिया के आइल सुतार!

चइती में जौ-मटर, गेहूँ-चना, अरहर, सरसों सब कुछ बा। सिंचाई क पुरान, परंपरिक साधन गड़ही, ताल कुआँ। बरखा क बटुराइल पानी उबिछि के भा, 'ढेंकुल' - 'मोट' चला के पहिल सिंचाई होइयो जाय त पूस-माघ का सितलहरी के दुख अलगे बा। नियति के मार कहहीं लायक नइखे, कबो-कबो कम बरखा का चलते कुइँयों क पानी पताले चल जाला.... "गइले पताले इनार हो सजनी!" कटिया का पाछा के दुख आ चिन्ता-फिकिर कवि का भीतर अलग बा आ, अनाज होते बसूली, मलगुजारी आ साहू क तगादा के भय अलग। किसान का अंतरमन का व्यथा-कथा के उकेरत खा कवि केहू के नइखे बकसत। हाकिम, दइब, सरकार सबका हृदयहीनता पर किसान का मुँहें कारुणिक टिप्पनी जरूर करावत बा-

पुसवा आ मघवा बिपतिया क खनिया
एही में कुड़की सभापति के घुड़की
ढेबुआ की खातिर उजारे पलनिया
हाकिम दइब हतियार हो सजनी
कटिया के आइल सुतार!

'कविता' के 'गुनीजन' लोग सहिये कहले बा कि 'जथारथ' के जस क तस परोस दिहल कविता ना हऽ। परोसहूँ के लूर-ढंग चाहीं। मोती बी०ए० कविता- कला के सिद्ध; कइले रहलन। उनका पता रहे कि उक्ति के काव्यात्मक बनावे खातिर 'जथारथ' से कतना लेबे आ कतना छोड़े के चाहीं। कविता खाली कवि का इच्छा जगले से ना बने, रचना-रूप में आवत-आवत ऊ 'कला' में बदल जाले, जवना के कवि क काव्य-विवेक साधेला। मोती जी अपना एह लमहर कविता में खेतिहर जिनिगी के जथारथ का उल्लास, प्रेम आ सपना का साथ, चिन्ता-फिकिर आ बिसंगतियनो के उकेरे के कोसिस कइले बाड़न। उनका कविता में स्रम-संघर्ष का संगे भविष्य के आस आ उमेद बा, नीमन के कामना बा। संकेत भा उक्ति-वक्रता का जरिये, बिडम्बना पर प्रतिरोध खातिर अइसन टिप्पनियो बा, जवना से पाठक का मन में करुण टीस उदबेग आ क्षोभ पैदा होत बा। एह लमहर कविता का कुछ 'बन्द' के आखिरी पाँतियन से एह बात के खुलासा होत बा-

बिटिया न रहिहें कुँवार हो सजनी
कटिया के आइल सुतार!

XXXX XXXXX XXXXX
रोवें किसान धके हाथे कपरवा
छवलसि अकासे अन्हार हो सजनी...
XXXX XXXXX XXXXX
दुअरा उदास, सून लागे खरिहनवा
बउक भइल सरकार हो सजनी
कटिया के आइल सुतार!

स्रमजीवी किसान भा बनिहार का नियति, दुख आ पीर का दिसाईं साहूकार, सरकारी नुमाइन्दा आ हाकिम के हृदयहीन व्यवहार, सीधा-सादा भोला-भाला गँवई लोगन से ओके दूर क' देला आ उनहन लोग क 'छवि' 'हतियार' क बना देला। इहे ना एह सब से आँख मूने वाली सरकार 'बउक' (मूरुख) के संज्ञा पावेले।

मोती बी०ए० 'लोक' का भाव-भूमि से जवन जीवन-रस पवले रहलन, संवेदन आ अनुभूति का स्तर पर जवन जियले-बुझले रहलन, ओके इमानदारी से उरेहे के सार्थक कोसिस कइलन।उनका कवि-कर्म में निष्ठा आ लोक का प्रति आत्मीय 'प्रतिबद्धता' (कमिटमेन्ट) रहे, ठीक ओइसहीं, जइसे कवनो स्रमजीवी-किसान के अपना खेत आ कृषि-कर्म से होला। खाँटी खेतिहर-किसान, 'बलाय टारे वाला ढंग से' खेती क काम ना करे, ऊ जवन करेला मन-प्रान से करेला, अपना जीवे-जँगरे उठा ना राखे। ओके अपना कर्म पर आस-भरोस रहेला। मोती जी अइसने निष्ठा से 'कविता' रचलन। कृषि-कर्म में लागल लोगन का प्रति उनका आत्मीय-भाव के दरसावे वाली उनकर अउरियो कविता बाड़ी सऽ, जवना पर आगा चर्चा होई। अभी त हमहूँ उनका कवि का सँगे-सँगे स्रम-शक्ति आ स्रम-औजारन के धन्य-धन्य कहत नइखीं अघात-

"धनि रे गुजरिया के खुरुपी पियारी
धनि रे सँवरिया के फरुहा कुदारी!
चलऽ, चलीं बैलन के ले लीं बलइया!!"

अशोक द्विवेदी

आनन्द संधिदूत के
दू गो कविता

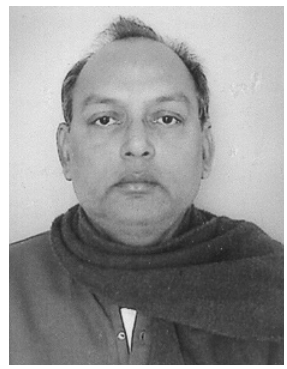

(एक) दीयर कथा

एही दीयर में बा
हमरो खेत क एगो छोट-मोट टुकड़ा
जवन हम देखले नइखीं।

ओही खेत क गोजई-रहिला
जब हमरा आँगन में गिरे त
हमार माई ओइसहीं खुस हो जाय
जइसे कवनो लइका खेलवना पाके अगरा जाला
ऊ कुछ झारे कुछ झूरे
कुछ कूटे कुछ पीसे
कुछ अँगऊ निकाले
हमनियो का अनाज का राशि पर
गाल रगड़-रगड़ के लोटीं जा
आ अँजुरी में भर के अनाज
हुर-हुर हुर-हुर ओही अनजबे पर गिराईं जा
बाप बिहीन आँगन में बाप के बिरह
ओही अनजवे से खेल के भुलवाईं जा।

स्वतंत्रता का बाद
लाला क खेत
समाज का दया आ करुणा से हरियर
बोवनिहार निठाली बतावसु
फलाना दू हाथ बढ़ के जोत लिहलन
भा, घोड़रज-निलगाय फसल लँहेद दिहलन स
भा, गंगा माई बोवल साँवाँ पर ओलर परली
चाहे समय का पहिले पछुआ हवा का बहि गइले
मोसल्लम गोजई पइया हो गइल।
हमार माई निठाली का सूचना पर
अपना आँख क आधा पलक नीचे गिरवले
धरती मइया के ताकत चुप हो जाय
जइसे भारत माता
अपना देस क झण्डा आधा झुका के ।
पटुआ गइल होखसु
थउस के मौन शान्त हो गइल होखसु।

हम देखले नइखीं
लेकिन एही दीयर में बा
हमरो खेत क एगो छोट-मोट टुकड़ी
जवन चकबन्दी में दस मण्डा का बजाय
आठ मण्डा क बिगहा भइला का बाद
कई मन अनाज कम देबे लागल
लेकिन ए बेरी हमार माई उदास ना भइलि
ऊ कहलसि अब कवन चिन्ता बा
हमार बच्चा नोकरी धऽ लिहलन!

ओही खेत क एगो हिस्सा
जब कई जुग खातिर
गंगा का पानी में डूब गइल
त सरकार नोटिस भेजलसि
पुछलसि कि बतावऽ
खेत रखबऽ कि छोड़बऽ
छोड़बऽ त लगान ना लागी
हमार माई कहलसि
बेमार सवाँग घर से निकालल ना जाय
बालू पानी में डूबल जमीन छोड़ल ना जाय
जा सरकार से कह आवऽ
हम मालगुजारी देब!
जमनियाँ तहसील में
बयान दर्ज करावत घोषणा पत्र भरत
हमके अइसन लागल
कि अबतक ई खेत हमार गार्जियन रहल हऽ
अब हम एकर गार्जियन बानी।

लेकिन झूठ, सरासर झूठ
चालिस साल बाद उहे जमीन
अब पानी में से झाँकतिया
हिंगुआना-पहलेज से लथरल बिया
सवखीन परवर बोवले बाड़न
आ मलाह बोरो धान
आ प्रकृति बोवले बा
हिंगुआ, डिंभुकी, नारुन, नखदौन आ दुधकांड़र
आ एही कंचन हरियरी में बा
हमरो खेत क एगो छोट-मोट टुकड़ी
जवन हम देखले नइखीं।
जवना का पाछा दू लाठी खइले नइखीं
दू गारी सहले नइखीं
हमके लागऽता
जइसे अगल-बगल के हरेक गाँव-मौजा
हमरा पर हँसऽता
आ हँसि-हँसि के कहऽता
कि एही दीयर में बा
एही का खेत के एगो छोट-मोट टुकड़ी
जवन ई देखले नइखे।

(दू) बगड़ी- गउरइया संबाद

जब आँगन का बीच में डँड़वार
आ खेत का बीच में सड़क निकललि
त खेत क बगड़ी
आँगन का गउरइया किहें आके कहलसि कि
लऽ ए बहिनी
तोहके त आराम हो गइल
एक बखरी से दू बखरी हो गइल
दूनो ओर दाना-दूनी, जूठ-कांठ गिरी
आ तोहार बाल बच्चा मजे में रहिहन
मरन त हमार बा
खेत क जोत जेतने कम भइल जाता
लिट्टी पर लासा ओतने बढ़ल जाता
आगे भगवान मालिक बाड़न।

गउरइया खरहरा धरती पर
चोंच रगरत कहलसि
कवन आराम भइल ए बहिनी
अब सिरमिट कंकरीट के स्लैब ढराता
एतना ऊँच पर कबूतर बटुराता
बाज-चिल्होर मँड़राता
हमनी के त कहीं रहबासे नइखे
मूँड़ी ढँके भर, अण्डा सेवे भर
छान्ह-छप्पर पास नइखे
खेतवो का बस्ती भइले कौन फायदा भइल?
कहीं लोहा बिकाता कहीं लक्कड़
कहीं जहर धइल बा कहीं माहुर
गांव के बाल गोपाल त शहर चलि गइलन
अब गाँव में के बा
जे जूठ गिराई दाना दूनी छिंटवाई,
शहर सुरसा हो गइल
आ गाँव बाँझ
अब अइसन बेमारी, आवतिया कि हम चिरई-चुरगुन के
परिवार ना जाति के जाति साफ हो जाति बा
अब सब अपना में लागल बा
हमनी के चिन्ता करे वाला के बा?

बगड़ी दूनो बखरी का डँड़वार पर धइल लिट्टी पर चपकल
दूनो ओर तकलसि
आ गउरइया से बोललि कि
जब बीच खेत में सड़क
आ बीच आँगन में डँड़वार पड़ल
त जवना जानी का पइसा रहे ऊ खुस भइली कि चलऽ
हँउजार से जीवन बाँचल
अब सान्ती से दू कवर खाइल जाई
हाड़ा का झोंझ से बरकल जाई
जे टिटकउड़ी रहल
दीन हीन रहल
ऊहो खुस भइल कि
चलऽ डँड़वार पार के राजपाट देख के
लइका त ना अहकिहन सऽ
धरती चिराइल त सब खुस भइल ए बहिनी
एगो हमरा छोड़ के
हम जानत रहलीं कि खाली हमरे गोड़
लिट्टी का लासा पर ना चपकी
ऊहो लोग चपके वाला बा
जे धरती के बँटले बा
सड़क ढरले बा
डँड़वार जोड़ले बा।

जे खुसहाल रहल ऊ सड़क का जरी
हिस्सा लेके दोकान निकाले चाहल

जे फटेहाल रहल
ऊहो गाँजा क बिहटी बम से बार के कहल कि, कवन
सरवा सड़क का जरी हिस्सा लेही
अभी बाप-दादा का लाठी-लउर के
बँटवारा नइखे भइल।
आ देखते देखत
डँड़वार त अउर पोख्ता हो गइल
बाकिर खेत का बीच के सड़क
खून से लाल होके ओदरि गइलि।

आ एही खून के झँखत
बहेलिया के इन्तजार करत
बगड़ी बोललि
कि, लऽ ए बहिनी
आंगन में डँड़वार पड़ले
आ खेत का बीच से सड़क निकलले
न तुहीं खुस भइलू न हम
न डँड़वार डाल के खुसी चाहत देयाद
सब लिट्टी का लासा में चपक गइल
गउरइया डूबत सूरज के ताकत बोललि
हमहूं ना रहब ए बहिनी
खाल में भूसी भरल अजायब घर में लउकब
डँड़वार पारल आँगन में ना! ••

❑ पदारथलाल की गली, वासलीगंज, मिर्जापुर (उ०प्र०)

सपना के फेंड़

✍ ऋचा

चलऽ, फेरु सपनन के फेंड़ लगाईं जा !
मउरल-दनात अमराई से अलगा
सड़की का गुलमुहरन का नीचे
लुकवा दीं जा कूल्हि पुरान योजना
हरियर सुतरी अस लटकत सहजन का झोंप में
बान्हि आईं जा आपन चाह-चिन्ता
जवन होई, तवन होई
आवऽ रेंगनी का काँटन से लथरल जथारथ में
फेरु से नया पौध लगाईं जा
सपनन के !

इच्छा त हइये हई से अनन्त
कहाँ पूरेली सन, कबो !
अब आधी-अधूरी, बसिया -ताजा जवन होखँ सन
दे दीं जा फिलहाल उनहन के
टेसू- फूलन के बिस्तार
बस बीनि-बीछि के मूर्त्त करीं जा
एक-एगो सपना
पारा-पारी ।
ओमें भराय अमलतास आ गुलमुहर का
फूलन के रंग आ गन्ध
उन्हन के रहस भरल पँखुरिन से
कुछ न कुछ लेके
गूँथि लीं जा एगो माला
ओही में ठाँवाँ ठाईं गूँथ लियाई
एकाध गो मोती अपना बीनल-बीछल इच्छा के
मन के पूरल धागा में
के जाने, कब सुतत-जागत
पूरिये जाय कवनो सपना !

चलऽ, आजुये बो आईं जा
कवनो सपन-बीज कहीं
कोड़ि के माटी एही राह, एही घाट, एही मैदान में
एकोरा
हो सकेला ऊ एक दिन
बन जाय बिरिछ
फूल-फर से लदरियो जाय
आ लवट आवें सँऽ
हमन के छोड़ि के गइल चिरई- चुरुँग ।।

••

❑ श्री विजय दुबे, भरून्धा कछार, वाराणसी रोड,
'कार फाइन एसेसरीज' के पीछे, मिर्जापुर 231001 उ०प्र०

(हालांकि ई वैचारिक लेख डेढ़ दशक पहिले के लिखल हऽ, बाकिर आज ई अउर ज्यादा सामयिक आ प्रासंगिक बाटे। ई लेख ''रसबोध के एने ओने'' में संग्रहीत बा।)

ई बिभाजन काहें ?

✍ डा0 (श्रीमती) शारदा पाण्डेय

कबो कबो सोचऽतानी कि ई देश कहाँ जाई ? का बा एकर नियति ? अखण्ड भारत के नारा का थाला में इ धरम, जाति के विभाजन कइसन दीमक नियर जमकि गइल बा कि ऊपर से खाड़ देश भितरे भीतर धर्म से खूँख, जाति से रूख आ भाव से सूखल जाता । इ कइसन क्षयरोग बा, जवन देश का देह के खोंखड़ बनवले जाता । हम चेतत नइखीं आ अब दु चार बरिस से नया अभियान चलावल आरंभ क देले बानी, साहित्य के बिभाजन का रूप में,' दलित साहित्य' के अभियान। ई का हो गइल बा?

जदि साहित्यो ..जाति आ वर्ण का आधार पर बाँट के देखल जाई त भारतीय भाषा का साहित्य के नष्ट भइला में कवनो सन्देह ना रही साहित्य का हित का भावना के जरिये परफरुआ (टाँगा) चलावत कवना चौतन्य मानस के अभिव्यक्ति कहल जाई ? जवना देश में 'कविर्मनीषीपरिभूः स्वयम्भू' के ऋषि कल्पी चेतना साहित्यकार के संगे आबद्ध बा, ओ देश में वैचारिक उर्जा में ओकरा ब्यंजना में बिभाजन के प्रयास क्षम्य कइसे होई ?

जर्मनी अइसन देशन में बर्लिन के दीवार गिरा दिहल गइल बाह्य आ आन्तरिक एकात्मकता खातिर आ एह देश में जवना क मूल सांस्कृतिक आत्मा एक बा ,वैचारिक विविधता के धार एकता का गंगासागर में समाहित बा,ओजू जान–बूझ के गतिरोध आ अलगाव क द्वीप–दीवार रचे के प्रयास हो रहल बा ई कइसन विसंगति बा ? साहित्य के सृजनात्मक रूप खातिर ई बिभाजन वैचारिक विकृति के संकेत देता । ई देश आ साहित्य खातिर उचित नइखे ।वोट के राजनीति के कीड़ा समाजिक सौहार्द के चटले जाता । राजनीति के ई शतरंजी चाल आपुस में भय–शंका के बीज बोअता आ विश्वास के स्वाहा कइले जाता जाति–विद्वेष का आगि में । कवनो अँग्रेज विचारक के ई कहनाम साँचे बुझाता कि जदि कवनो देश के नष्ट करे चाहऽ तारऽ त सबसे पहिले ओकरा साहित्य के नष्ट क दऽ !साहित्य कवनो देश के आत्मा हऽ, संस्कृति के प्राण हऽ ।

उत्तर प्रदेश में' दलित के बेटी' का नाँव पर जवन प्रतिहिंसा आ विनाश के ताण्डव चल रहल बा, ऊ पूरा संसार देखि रहल बा, जवना का चलते विकास गतिरोधित हो गइल बा। भारतीय संस्कृति के उदारता क जवं वितान सगरो विश्व में भारतीय दर्शन का मानवीय मूल्य के पूँजी रहल आ श्रेष्ठता, सहिष्णुता, समरसता के झंडा फहरवले रहल ओह दृष्टिकोण के वर्ण संकीर्णता का गड़हा में लभेरल कवन आध्यात्मिक आ उदात्त ऊँचाई दी, इ स्पष्ट नइखे होत ।

ऋषि लोगन का गोत्र के आधार, रचनात्मक आधार पर बनल, जाति का आधार पर ना । रचनाकार के पहिचान प्रतिष्ठा ओकरा सन्देश के आधार पर भइल, जाति आ कर्म का आधार पर ना । कबीर, रैदास, पीपा, पलटू, नामदेव के जातग जनता के

दिशा देबे में बाधक ना भइल। जतना आदर से 'बन्दउँ गुरु पद पदुम परागा' गवाला, ओतने आदर भाव से, 'गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े 'के ज्ञान–गरिमा, भाव–समृद्धि के सराहल जाला।' प्रभु जी मेरो अवगुन चित ना धरो' के आर्त्तता जतना मन के छुवेले ओतने 'प्रभु तुम चन्दन हम पानी' के आतमसमर्पणो आँखि से लोर ढरकावे के बाध्य कऽ देला । कवनो सहृदय भक्त विद्वान से, जन सामान्य से ना सुनाइल कि जोलहा क गुरु बन्दना अछूत बा आ बिप्र के वन्दना उच्चता से मुद्रित । कबो ना सुनाइल कि सूरदास के भजन ब्राह्मण–क्षत्रिय किहाँ गवाई आ रज्जब, रैदास के भजन खाली दलित गइहें। ई कुल्हि लोग समान रूप से संत आ भक्त कहाइल। ओह जुग में जबकि देश मुगलिया अत्याचार–अनाचार का आगि में जरत–धुँधुआत रहे ।जातिगत सीमा बन्धान के लाँघत मीरा ,रैदास से भेंट कइली, देवनदी के सुपाड़ी हाथ बढ़ा के लिहली । नाभादास के वैष्णवन के वार्ता में एह भक्तन क सुयश सँजोवल गइल बा। रामानन्द के उद्घोष कुल्ही जातिगत के मेटावत इहे बा कि ––––'' जात–पाँत पूछै नहिं कोई ।हरि को भजै सो हरि को होई ।।''

कूल्हि सिद्ध, नाथ साहित्य केकर रचल हऽ ? ई के ना जानेला । ओकरा बिना आदिकाल के एगो पक्षे अधूरा रहि जाई, बाकिर आजु नियर अलगाववादी आगि के अइसन लुतकारी त कबो भारतीय समाजत्रका मन के छान्ही पर ना धराइल, जइसन कि एह जुग के सुशिक्षित संस्कारित लोग लगावे का तइयारी में बा। बुझाता कि चिन्तन क कूल्हि राह, विचार के कूल्हि दिशा कुण्ठित होत जा रहल बा, विषय के टोटा परि गइल बा कि 'दलित साहित्य' का नाँव पर भारतीयता के अखण्ड मानसिक पर्यावरण के प्रदूषित करे क उतजोग हो रहल बा ।

जइसन आगि आरक्षण आ मण्डल का नाँव पर लगाइ के समाजिक पारस्परिक भावात्मकता के बिनासे के प्रयास भइल बा, जदि उहे दृष्टि अब साहित्य का क्षेत्र में होई त भारत के, कतो अखण्ड अविचल दृढ़ता से खड़ा होखे खातिर धरती ना मिली। गंगा के आँचर नियर सभके अपना वात्सल्य–छाँह–सुरक्षा देबे क भाव दहि जाई । साम्प्रदायिकता के आगि त समय समय पर दहकावले जाता, अब ई साहित्यिक बैमनस्य अलगाव देश आ जनता का मन में जवन दरार डाली, ऊ देश का वैचारिक एकता के थाती के लवना बना दी । जीवन–मूल्य के भूँजे खातिर, साँस्कृतिक एकता के राख करे खातिर।

भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया' का खाली दलिते के अमानत हऽ ! ओमे पूरा देश के जनता क मन के कुँहुक आ झलक नइखे? का, सभके समाजिक समस्या के दरपन नइखे देखावल गइल ? कबीर क कबीरा जोगीड़ा, सबद जीवन के ललक आ आध्यात्म के जवन पंख पसरले बा ऊ केकरा से अछूत रही ? नामदेव के अभंग का खाली महाराष्ट्रे का धरती के रस में डुबाई, सवर्ण का बीना पर ऊ रागिनी का बाजे से कतराई ? जाति,स्थान का सीमा का पार साहित्यकार का भाव के उदात्तता आ सन्देश पूरा विश्व के थाती बनेला । आजु 'तिरुवल्लरि' के छन्द के गूँज उनके प्रान्त में ना, उत्तर प्रदेश आ बिहार में सुनाता । ठेठ भोजपुरी के भाषा के देवार तूरि के। एतनो पर हमार मन काहे ए एकता के नकार के, विस्तार के धकिया के एगो संकीर्णता के बाड़ बनावल चाहऽता, नइखे बुझात । एह पर शोध होखे के चाहीं आ एकर मार्जन होखे के चाहीं ।

साँच पूछीं त एह' दलित साहित्य' के बिस्फोटक ध्वनि के असर आज के साहित्य पर ,जनता का मन पर पड़े लागल बा। जवन समाज आ साहित्य खातिर शुभ शकुन नइखे। अबहियें एही बिषय से सन्दर्भित नैमिष राय के पुस्तक पर ध्यान गइल । विद्वान लेखक के विद्वत्ता आ संग्रही वृत्ति त प्रभावित कइलस, बाकिर ओकरा पाछा के व्यंजना ऐतिहासिकता का नाँव का आड़ में हमरा देश के गौरवास्पद विभूतियन का त्याग–बलिदान–पराक्रम पर एगो छद्म प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिहलस । ई दृष्टि (नजरिया) प्रशंस्य नइखे । झाँसी के रानी के पूरा व्यक्तित्व उनका सखी झलकारी आ उनका पति के पराक्रम का आगा बौना बना दिहल गइल बा । बनवासी, अनुसूचित, जनजाति सबका सहजोग से स्वतंत्रता के ध्वजा लहराइल बा, एम्में सन्देह नइखे, बाकिर कूल्ही श्रेष्ठ ऐतिहासिक पुरुष दलित के कान्ही बन्दूखि राखि के स्वतंत्रता के लड़ाई लड़ल, ई सत्य नइखे, ना एके स्वीकारल जा सके। हम एगो गोड़ के बड़ आ एगो के छोट कइ के सन्तुलन ना राख सकीले, ई सच्चाई बा, बाकिर दोसरका के काटि के सन्तुलन बनावल कवन बुद्धिमानी बा? उचित बा कि छोटको गोड़ के ऊँचाई दीहल जाव, ताकि व्यक्तित्व छोट ना होके उन्नत होखो। हमरा साहित्य में दलित के अइसन हेयता,उच्चता के नाँव पर कतों नइखे मिलत, जइसन कि आजु महिमा मंडित करे का बहाने, ओकरा प्रति वितृष्णा आ द्वेष क भाव पनपावल जा रहल बा। ऋषि पाराशर के बेटा व्यास का नाँव पर आजु ले कथावाचक के पीठासन ब्यास–पीठ कहाला।

सत्यकाम जाबालि के प्रातः स्मरणीय ऋषि मानल जाला। ऐतरेय उपनिषद्, जवन भारतीय दर्शन के रीढ़ कहल जाला, अपना महतारी' इतरा 'के नाम अमर करत जाति –धर्मातीत रचना हऽ। नारद ब्रह्मा के मानस पुत्र कहइलन, उनकर संहिता, भक्तिसूत्र आपन विशेष महत्व राखेले। भारतीय समाज वैचारिक समृद्धि आ क्रियात्मक सर्जना के, चाहे ऊ केहू के अर्पण होखे, सम्मान कइले बाकबो हमरा देश के मनीषा रचनात्मकता पर अइसन बान्ह ना बन्हलस, ना दलित के नाम पट्ट लगवलस । तब आज ,जबकि देश में भीतर बाहर दूनो ओर अलगाववादी तत्व अनेक तरह के जाति, सम्प्रदाय के नाम से आगि लगावऽतारन । के बा जे साहित्यकारन का जरिये समन्वय के पानी ना डालि के, ई नया बिध वंसक परमाणु छोड़त बा आ काहें ?

देश के ओह वातावरण, समुझ आ उदारता के धन्यवाद करे के चाहीं,जे अपना कुल्ही बेटन खातिर यथासंभव विकास क अवसर, साधन उपलब्ध करावे में कोताही ना करे । जहाँ वाणी–भाव–कर्म क अइसन स्वतंत्रता बा कि व्यक्ति अपना अभिव्यक्ति के साधन आ अवसर जोहि लेता। अइसन विवशता आ जीवान्तक भय नइखे कि समानता के दर्शन बघारे वाली धर्मान्धता, अभिव्यक्ति का नाँव पर देश से पलायन के राह धराइ दे, जइसन कि 'सेटेनिक वर्सेज' आ 'लज्जा' का रचनाकारन का सँगे अबहिंये एह आधुनिक जुग में भइल ।एहिजा त ऊ हर रचनाकार ,जे समाज आ देश के कवनो सन्देश देले बा ,प्रशंसित आ प्रतिष्ठित भइल आ ओकर प्रशंसक बिपरीते वर्ग के लोग भइल ,जे जोहि जोहि के अइसन सर्जक पर श्रद्धा के फूल चढ़ावल । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डा०हजारी प्रसाद द्विवेदी, श्री परशुराम चतुर्वेदी, श्याम सुन्दर दास,मिश्र बन्धु जइसन लोग अपना सारग्राही दृष्टि, सहृदयता आ प्रतिष्ठा देबे वाली वृत्ति खातिर का संकेत के मुखापेक्षी नइखन ।

हो सके त, एह दृष्टि से काम कइल जाव कि 'रचनात्मकता' आ प्रतिभा कवनो जाति, वर्ग के थाती ना हऽ, ऊ हर जाति–वर्ग में संभव बा । एह भाव से अइसन रतनन के खोजि खोजि के सोझा ले आवल जाव, बाकिर इनका के महिमामण्डित करे के अतिवगदी प्रयास में महान विभूतियन के छोट बनावे के प्रयास मत होखो । इ तबे संभव बा जब आलोचक भा रचनाकार खुला भाव आ पक्षपातरहित होई, पूर्वाग्रह से ग्रसित ना होई । ओकर खोजी दृष्टि निर्मल आ बिचार यथार्थ पर आधारित होई, प्रतिक्रियावादी चश्मा ना होई। ••

225/142, बाघम्बरी हाउस स्कीम, अल्लापुर,
इलाहाबाद 211006

चैत-राग

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

गिरलीं विरह-कूप गहिरा,
बलमुआँ, सँग नाहीं हमरा!

सूझे ना कुछ, रहि-रहि अफनाईं
निकलबि कहाँ ले, अउर बिछलाईं,
निकसल कठिन बाटे बहरा,
बलमुआँ, सँग नाहीं हमरा!

करिया अन्हरिया गरसलस चननियाँ,
शीतल जल लागे, खउलत पनियाँ,
चहुँओर सुनगल अहरा,
बलमुआँ, सँग नाहीं हमरा!

कवना जदुइया से उनके भोरवलसि
कवन सवतिया जे, रूपवे लुभवलसि,
पिहिकेला मन के पपिहरा,
बलमुआँ, सँग नाहीं हमरा!

मैरीटार, बलिया, उ. प्र.

कविता आ कुदार के प्रेमी आचार्य धरीक्षण जी

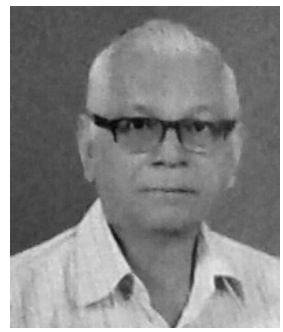

डॉ. अर्जुन तिवारी

गाँव के बिधाता भगवान जी हईं आ शहर के बिधाता हमनी सब बानी। गाँव तऽ पवित्र मंडप हऽ, एही माटी से धान होला, जवन 'कलावन्तगताः प्राणाः' के मूल हऽ। आपन गाँव जीवन के विशाल पोथी बा, जेकरा हर पन्ना में यज्ञशाला खेत आ ओमे पसीना बहावत किसान रूपी भगवान के दर्शन होला। एही ग्रंथ में आपन सभ्यता सुरक्षित बा, संस्कृति आरेखित बा, जवना के चिन्तन–मनन, ऋषि–महर्षि, मुनि–महामुनि कइले बा लोग। देवारण्य, सारण्य, चम्पारण्य, बिन्ध्यारण्य में भोजपुरी संस्कृति के मंत्रद्रष्टा विलक्षण–कवि धरीक्षण मिश्र रहलीं, जे श्रमशील आ शास्त्रवेत्ता के पर्याय बनके एह अंचल के गौरवदीप्त बनवले बानी। उहाँ के कहनाम रहे–

कर्मठ किसान कृपाकोर हूँ कपाली का
कीड़ा कविता का किन्तु कोरा हूँ, कुपात्र भी।
xxxx xxxxx xxxxx
कविता और कुदार हाथ में दुनो लियाइल
भिन्न जगह से भिन्न प्रवृत्ति जीवन में आइल।।

अन्न पैदा कइला से किसान ब्रह्मा कहला। खेती ओकर ईश्वरीय प्रेम के केन्द्र हवे। किसान के पूरा जीवन पत्ता–पत्ता में, फूल आ फल में झलकत रहेला।

'शिवजी के खेती' (1977 ई.) के स्रष्टा धरीक्षण जी मिश्र भारतीय संस्कृति के सांगोपांग द्रष्टा हईं। आचार्य नरेन्द्रदेव जी लिखले बानी "संस्कृति मानव चित्त की खेती है।" हमरा त साफ इहे लउकता कि मानव चित्त के खेती, जमीन के खेती, मानवता के विकास, परस्पर सद्भाव, सदा–सदा उपजाऊ, सर्जनशील होखे के संकल्प के साथे विश्व कल्याण के संकल्प हऽ जवना के पूरा करे में कविवर अपना के होम कर दिहनी। अध्यात्म, प्रकृति, धर्म, उदारता, क्षमा, तप जइसन सात्विक तत्त्वन के विश्लेषण से उहाँ के काव्य अजर–अमर हो गइल बा। एह जमाना के विलक्षण रचनाकार दुष्यंत जी के लाइन मिश्र जी पर खूब फबत बा–

कहीं पे धूप की चादर बिछा के बैठ गए
कहीं पे शाम सिरहाने लगा के बैठ गए।

जीवन–जगत में लहलहाइल बिडम्बना से (टीबोली) जनमेला। जिनगी के हर पहलू के अइके वाला मिसिर जी के व्यंग्य–विधान अनुपमेय बा–

टीका ना करीले टीका–टिप्पणी करीले किन्तु
बाटिका में मन के निरंतर टिकाइले।
xxxx xxxxx xxxxx
प्रजातंत्र के इहे कसौटी। गोसयाँ भुइयाँ कुकुर पुँजौटी।
केवल प्राण शेष रह जाला, एतने एमे छूट हवे।

सद्गृहस्थ पंडित जी समाज के घात–प्रतिघात के पारखी रहनी आ सभ के सन्मार्ग देखा के सर्वजन हिताय समर्पित रहनी। 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः' उहाँ के व्यक्तित्व में अनेक कवियन के दरसन हो जाला–

काया हमें कर्मठ कबीर के समान दे दे
काव्य की कला में हमें केशव बना दे तूँ
विमल प्रसाद तुलसी के हमें देदे देवि
सुकवि सनेही के प्रवाह में पगा दे तूँ
सुर चंद दोनों का प्रकाश उर लादे देवि
पांडे राम श्याम के समान प्रतिभा दे तूँ।
थोड़ी दया और भी दिखा दे विलमा दे हंस
नई कविता का जरा अर्थ भी बता दे तूँ।

कवि भूषण के समान मिश्र जी ओजस्वी बानी वाला रहनी। पाकिस्तान के चेतावनी सुनवनीं–

एक बात तू मानि लऽ, अब न दुनाली तानऽ
गिरबऽ तीनों युद्ध में चारू पले चितान।।
मनबऽ बात न पंच के, त छक्का छुटी बेलाग
जनि सतवाँ असमान पर, राखल करऽ दिमाग।।

भोजपुरी के आचार्य पं0 मिश्र जी अलंकार शास्त्री रहीं। 140 अलंकारन के सटीक, समीचीन, निर्दोष निरूपण से उहाँ के भोजपुरी भाषा के गुरुत्व प्रदान कइनी–

अनुप्रास – एक वर्ण के आकृती होखे बारम्बार।
अलंकार अनुप्रास तब होत उहाँ उजियार।
जइसे– ब्राह्मण बत्सवंशी वास बाटे बरियारपुर
पूरब तमकुही के प्रानत सरवार ह।

अतिशयोक्ति– जहाँ लबारी बिनु आधार, करे लोक सीमा के पार।

अतिशयोक्ति ऊ मानल जात, ओकर भेद होत छ सात।

वीर, करुण, शांत, वीभत्स, भयानक रस से परिपूर्ण उहाँ के रचना भोजपुरी जगत खातिर पठनीय अनुकरण ीय बा। करुण रस बेजोड़ बा–

हमरी बेर बानी तऽ दुकाहें दो सूखि गैल
बाल्मीकि व्यास कालिदास के कलमियाँ।
हमरा ए त्याग पर लिखाइल ना ग्रंथ एको
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ।।

रस–छंद–अलंकार जइसन तत्त्वन के विश्लेषण आ सोदाहरण प्रस्तुति से भोजपुरी साहित्य के गाम्भीर्यप्रदाता के धरीक्षण जी हम सभ के सम्बल सिद्ध भइनी।

हमार सौभाग्य बा कि आकाशवाणी गोरखपुर से प्रसारित 'जी भर के सुनें' के कार्यक्रम में पं0 धरीक्षण जी के साथ साक्षात्कार के मौका मिलल, हमरा इयाद पड़त बा कि उहाँ के आत्म परिचय के रूप में कहले रहनी–

'जी भर सुनें–एह बैठकी के नाम बा नीमन चुनल
रउरा सभे चाहत हईं कवि–कर्म हमरा से सुनल
आँखि बा कमजोर राती खाँ न हम पढ़ि पा सकब
कुछ बा जबानी याद केहू मन पारि दी तऽ।'

खाँटी गाँधीवादी पंडित जी लिखले बानीं–

हम सूतल रहलीं इहाँ निराशा के घनघोर अन्हार रहे।
सूरज नीयर गाँधी जी के तब भइल इहाँ अवतार रहे।

हम त ई बूझतानी कि भोजपुरी भाषा आ साहित्य जगत के असली गाँधी, पंडित धरीक्षण जी मिश्र रहनीं। आज लोक लुभावन जुमलाबादी के चक्कर में पेर के हम भोजपुरियन के नचावल जाता। भोजपुरी अस समृद्ध सात्विक भाषा के साथ अन्याय हो रहल बा, राजनीति का छल से हमनी निरीह बानी। फिराक गोरखपुरी के इयाद आवत बा, आ हमनी के बल देत बा –

तेरी धरती का दूध पीकर माता
तकदीर से हम आँख लड़ा सकते हैं।

आपन पूज्य महाकवि धरीक्षण जी स्वर्ग से इहे कहऽतानी–

लेने से ताजो तख्त मिलता है
माँगे से भीख भी नहीं मिलती।

श्रम, शास्त्र आ भोजपुरी साहित्य के गाम्भीर्य आ पोढ़ आधार देबे वाला आचार्य धरीक्षण मिश्र (जन्मतिथि रामनवमी 1901 ई., पुण्यतिथि कार्तिक कृष्ण नवमी 1997 ई.) के व्यंग्य में चोखापन, तीखापन आ चरचरापन बा–

आइल सुराज बा सुनात बा कान में
न आँख से देखात बा, न आवते बा ध्यान में।

XXXX XXXXX XXXXX

अकाल अन्न–वस्त्र के सवार बा कपार पर
सुराज सैर करत बा मिनिस्टरन के कार पर।

XXXX XXXXX XXXXX

कामे कहल तक हवे, बस तोहार अधिकार।
बनिहारी पर बस न बा, एको रती हमार।।

अइसहीं खाँटी भोजपुरी सपूत धरीक्षन जी के अनुगामी बनला पर मातृभाषा के बढ़न्ती होई, सभके हियरा जुड़ाई। ऊहो दिनवा आवले चाहता जब भोजपुरी संविधान के आठवीं अनुसूची में समाहित होई। ••

❑ एन-10/29, के–1, जानकीनगर,
बजरडीटा, वाराणसी

भूलल-बिसरल इयाद...

लोककवि (स्व.) पं. रामनवल मिश्र

(02 जन0 1922, डुमरी मिश्र, विशुनपुरा, गोरखपुर)

(एक)

हम घर के घूर बना देइब त तोरे बाप कऽ का?
ओमे भाँग-धतूर बोआ देइब त तोरे बाप कऽ का?
सगरो गुड़, गोबर कऽ देबें
हम अन्न सरा के धऽ देवें
चउरे के चूर बना देइब त तोरे बाप कऽ का?
नूने के कहब फिटिकिरी हऽ
फिटिकिरी बताइब मिसिरी हऽ
मिसिरी कपूर बना देइब त तोरे बाप कऽ का?
आलू के कहबे अंडा हऽ
अरुई के कहबे बंडा हऽ
हरदी क कचूर बना देइब त तोरे बाप कऽ का?
हम गोहूँ भूँजि-भूँजि बोइब
अपने मन के रोटी पोइब
आटा में धूरि मिला देइब त तोरे बाप कऽ का?
फुलवरिया हम नोचवा डारब
अमवाँ-बगिया कटवा डारब
ओहमें बबूर लगवा देइब त तोरे बाप कऽ का?
तरकुल के कहब खजूर हवे
हऽ नीबि, कहब अंगूर हवे
अँखिगर के सूर बना देइब त तोरे बाप कऽ का?
ईमान धोइ के पी डारब
आचरन बेचि के खा जाइब
हम झूठ के फूर बना देइब त तोरे बाप कऽ का?

(दू)

टकासेर भाजी हऽ टका सेर खाजा
नगरी अन्हेर हउवे धमधूसर राजा!
अइसन न अवसर पइबऽ भरि लऽ अँजुरी
खा कउवा मामा, गदा गइल जोन्हरी!

मासू क मोटरी हऽ गीध रखवार बा
चामे के बेढ़ा कुकुर रखवार बा
नाथ नहि पगहा, खाला खेत गदहा
बकुलन के सँउँपलि बा ताले क मछरी!

अन्हरा बाँटे सिरनी मिलि जुल खात बा
मुसवा मोटाइल लोढ़ा भइल जात बा
टूट गइल सिकहर बिलाई के भागे
घीवे में बूड़ल हउवे पाँचो अँगुरी!

उपदेसवा देत हऽ अहिंसा क चीता
मुड़िकटवा बाँचे रमायन अ गीता
देखऽ कुलबोरनी बनेले पुरुवन्ता
सीता कहालीं जनमवे क उढ़री!
खा कउवा मामा गदा गइल जोन्हरी!!

(तीन) कुछ दोहा

जब पाहुन खाउन करें, बसें रोज ससुरार।
बस उनके पकड़ाई दऽ खाँची अउर कुदार।।१।।

चापलूस, चमचा चुगुल, चाई चोर चिकार।
इनसे कबहूँ ना सटीं, रहल करीं हुँसियार।।२।।

कुरुसी जरसी गाइ हऽ, हउवे बहुत दुधार।
जवना खातिर होत हऽ, पीटा-पीटी, मार।।३।।

अँगनइया उनखुन भइल, बहरे फुटल कपार।
बँटि बखरी कतरी भइलि, चटई भइल दुआर।।४।।

कबहूँ मन्दिर पर रहे, कबहूँ महजिद जाय।
पंछी करत न भेद हऽ, सबकर दाना खाय।।५।।

चाहे लकड़ी एक मन, चाहे नौ मन लाद।
कवनो फरक न पड़त हऽ मरि गइले का बाद।।६।।

चिरकुट हउवे जानि के, मति दऽ फेंकि-पबार।
दियना के बतिहर बनी, जरी करी उजियार।।७।।

••

माटी के कवि

(स्व.) कैलाश गौतम के इयाद में.....

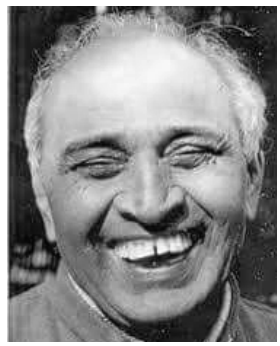

गुलबिया कऽ चिट्ठी

कहीं निरदयी कि बेदरदी कहीं हम
भुलक्कड़ कहीं कि अलहदी कहीं हम
कि झुट्ठा कि लम्पट कि बुद्धू अनाड़ी
कि अँकडू कि अँइठू कि पक्का खेलाड़ी
गयल हउवा जब से न मुँह फिर देखउला
न देहला सनेसा न चिट्ठी पठउला
न कहले कहाला न सहले सहाला
हमैं दाल में कुछ हौ काला बुझाला!

झरत हउवै पतई बहत हौ झकोरा
खलत हउवै ऐना, खलत हौ सिन्होरा
अ बान्है के हौ, बार मीसल परल हौ
बिहाने से तोहरे पर गुस्सा बरल हौ
बजत हौ झमाझम रहरिया क छेमी
सबै भइया बाबू सिवाने क प्रेमी
चढ़ल हउवै फागुन उपद्दर मचल हौ
सबैं रंग में डूबल केहु ना बचल हौ।
हौ होठे पर फागुन कपारे पर फागुन
बजावत हौ चिमटा दुआरे पर फागुन
लवर दिन में लहकै परासे के ओरी
कियरिया लगैं जइसे रँग क कटोरी
फरल हउवै सहिजन दुआरे क जबसे
उहै हउवै ठीहा दुलारे क तब से
बड़े मन से फगुवा जियत हउवैं बुढ़ऊ
अ भगतिन क मंठा पियत हउवैं बुढ़ऊ
जहाँ देखैं बुढ़ऊ टकाटक निहारैं
एको दाँत नाही हौ मसगुर चियारैं
भगत कंठी वाले चुहुल पर ऊतारू
उहैं ढेर बइठैं, जहाँ मेहरारू
हम का का बताईं, अ कइसे बताईं
बिपत पर बिपत हौ कहाँ तक गिनाईं
एहर कवनो करवट न आवै ओंहाई
अ देखीं चनरमा त फूटै रोवाई
भुला गइला फगुवा, भुला गइला होरी
भुला गइला चुटकी थपोड़ी टिकोरी

गहागह फुलाइल कियारी भुलइला
सिवाने क सरसों देखाले कि नाँही
अ कोइल क बोली सुनाले कि नाँही
टिकोरा करेजा छुवैला कि नाँही
अ सिरहाने महुवा चुवैला कि नाँही?
भुला गइला किरिया भुला गइला वादा
अबौले बतावा, असों का इरादा
गइल खेती बारी, अ मूँड़े उधारी
अ कइसे दियाई असों मलगुजारी
पकत हउवै गोहूँ लगत हउवै कटनी
उहै बासी रोटी अ लहसुन क चटनी
हँसी मुसकुराहट हेराइल हौ जइसे
अ एही में जिनगी घेराइल हौ जइसे
अ चुड़िहारिन सगरों पुकारैले धँस के
हमैं देख आगे निकल जाले हँस के
बड़ा बेकहल हौ कबुत्तर क जोड़ा
करै मूँहा ठोठी न मानै निगोड़ा
गुटरगूँ गुटरगूँ सुनावल करैला
ई आल्हर करेजा जरावल करैला
अ गौरइया खोंता लगावत हौ फिर से
अ' चुन-चुन के तिनका लियावत हौ फिर से
बँसहटी पुरनकी जरावै के लायक
अ बड़की पलँगरी बिनावै के लायक
सूतीला भुइयाँ मगर जिउ डेराला
अ रोजै इहां साँप गोंजर मराला
घरे होता अब ले, त दीया बुताइत
अ बहरी दुआरी में बेंवड़ा लगाइत
तू आपन सुनवता हम आपन सुनाइत
अ बेना डोलाइत, थकहरी मेंटाइत
निहारीला पैंड़ा, अ जोहीलाँ गाड़ी
भरल आँख हउवै खुलल हौ केवाड़ी
ऊहां नाहीं आइब हम, दूसर न होबै
तोरे दाली, भाते में मूसर न होबै।

••

दू गो ग़ज़ल

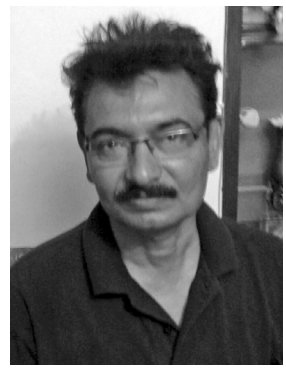

शशि प्रेमदेव

(एक)

लोहू में हमहन के जब अन्तर नइखे।
दिल काहें एक्के लेखा, सबकर नइखे।

सुख-दुख दूनो बा, बाकिर पुरहर नइखे
कुछुओ ए' जिनगी में आँचर-भर नइखे।

बल-बेंवत में भलहीं कम-बेसी होखे
मुँह से केहू, केहू ले कमतर नइखे।

ए' सनेहि-नगरी में के बाटे अइसन
फेंटा में जेकरा खोंसल खन्जर नइखे।

ऊहे नूँ कुक्कुर-जस भोंकी तहरा पऽ
काटे कऽ जेकरा पाले बावर नइखे।

आवऽ, निडर-निफिक्किर राति गुजारऽ तूँ
एह जंगल में अब कवनो अजगर नइखे।

छूटि गइल पीछे बूनी-बरखा कऽ दिन...
अब कनई में बिछिलाये के डर नइखे।

(दू)

अँखियन में ना जे कइसन दो चान समाइल बा।
कई महीनन् से नद्दी कऽ नीन हेराइल बा।

अजबे नूँ अबरी के पहरेदार भेंटाइल बा
पहरा देता बाकिर दूनो आँखि मुनाइल बा।

खलिसा तूँ ही नइखऽ इहवाँ बद्किसमत, बंधू
हमरो से ऊपरवाला असहीं खिसियाइल बा।

हाड़ ठेठा के आपन, रसगर ऊखि उगवलीं हम
हमरे बखरा में पन्छुच्छुर पुलुई आइल बा।

'मूँजि' कहल जाला केकरा के- तूँ कइसे जनबऽ
का कब्बो पतलो से तहरो देंहि चिराइल बा।

बल-बूते जवना डोरी के ऊ कूदे-फाने
ओही के तूरे खातिर पुतरी छपिटाइल बा।

राति अँजोरिया देखि चइत के, अइसन लगल 'शशी'
धरती पऽ सगरो बेला के फूल छिंटाइल बा। ••

प्रवक्ता (अंग्रेजी), कुंवर सिंह इ०का०, बलिया

दू गो गजल

✍ गुलरेज शहजाद

(एक)

आरती हमरो गजबे उतारल गइल
ओही दियरी से मुहवाँ झोंकारल गइल

लागल चिहुंके अन्हरिया के चढ़ते बहुत
मन के धरती प चिसकी जे पारल गइल

नेह नाता के छान्ही जतन से बनल
ओह के नफरत का बाती से जारल गइल

हाथ के जस गइल बात के रस खतम
नेह के रीत गजबे सँवारल गइल

प्यास सब के बुझावल जे सारा उमिर
ओह के दरिया के तीरे पर मारल गइल

बेगुनाही ना साबित करे पवनी हम
सारा इलजाम हम पर उतारल गइल

(दू)

छोड़ऽ, जाए दऽ बतिया भइल से भइल
आवऽ, जवरे संघतिया भइल से भइल

तनिका हमरो सुनऽ तनिका तुहूँ कहऽ
बीत जाए ना रतिया भइल से भइल

डाहि समय के भगिये में लिखल जे बा
जिनगी बनल सवतिया भइल से भइल

रात करिया बा बहुते त का करबऽ अब
दिन के उनहल बा खटिया भइल से भइल

भाई भाई में टंटा आ झगड़ा ठनल
मारि दीहल बा मतिया भइल से भइल

बात जे भी रहल बेइरादा रहल
जे मिलल ओह से मिलल के वादा रहल

डेग आपन बढवनी हम संकोच में
जे मिलल सोच से ऊ जियादा मिलल

नीन दरिया में बहनी बहुत हम भले
पानी सपना के मीलल त सादा मिलल

दिहनी हम जेके अपना के सउँसे उलिच
नेह के पूंजी ओकरा से आधा मिलल ••

❑ नकछेद टोला, मोतिहारी–845401, पूर्वीचंपारन

गजल

✍ नरेन्द्र पाण्डेय

न नाचल बुरा हऽ न गावल बुरा हऽ
बुराई के अंगुरी धरावल बुरा हऽ !

पहिलहीं मदाइल रहे आँखि जेकर
खुला रूप ओके देखावल बुरा हऽ !

इ रगरा अ‘ झगरा कहाँ नाहिं होला
पटइला प‘ लोला बजावल बुरा हऽ !

लगल आग होखे पड़ोसी के घर में,
त लग्गी से पानी पियावल बुरा हऽ !

गइल जे शहर, ‘गाँव’ रो के, छछन के
त लवटे क असरा लगावल बुरा हऽ !

चढ़ल भाव दूधे क गगरी जे होखे
त छिप के खटाई मिलावल बुरा हऽ !

पलक पर रखीं, गर मिले नेह दिल के
भरोसा क उझकुन हटावल बुरा हऽ ! ••

❑ ग्राम पोस्ट - सोनवानी, गाजीपुर (उ०प्र०)

दू गो कविता

केशव मोहन पाण्डेय

(1) गौरैया

जइसे दूध-दही ढोवे आ
सबके सेहत के चिंता करे वाली
गाँव के ग्वालिन हऽ
गौरैया
एक-एक फूल के चीन्हें वाली
मालिन हऽ।

अँचरा के खोंइछा हऽ
विदाई के बयना हऽ
अधर के मुस्कान हऽ
लोर भरल नैना हऽ।

चूडिहारिन जस
सबका घर के खबर राखेले
डेहरी भरी कि ना
खेतवे देखि के
अनाज के आवग भाखेले।

गौरैया,
सबके देयादिन हऽ
ननद हऽ
धूरा में लोटाइ के
बरखा बोलावे वाला जलद हऽ।

रूखल-सूखल थरिया में
चटकदार तियना हऽ
आजान करत मुस्तफा
अ भजन गावत जिअना हऽ।

ओरी के शोभा
बड़ेरी के आधार हऽ
चमेली के बगीचा में
गमकत सदाबहार हऽ।

दीदी खातिर ऊ
पिड़िया के पावन गोबर हऽ,
काच-कूच कउआ करत
माई के सोहर हऽ।

तृण-तृण ढोके
बाबूजी के बनावल खोंता हऽ,
रेंड़ियों के तेल से महके जवन
माई के ऊ झोंटा हऽ।

झनके ना कबो ऊ
फगुआ के बाजत झाँझ-पखावज हऽ,
दुबरा के मउगी जस
गाँव भर के भावज हऽ।
गौरैया त
रिश्ता हऽ, रीत हऽ,
चंचल मन के गीत हऽ।

फिर काहें बिलात बिया
मिल के तनी सोंची ना
एतना बेदर्दो ना बने के
हर भरल गाँव से
हर भरल घर से
हर हरियर पेड़ से
ओह फुरगुद्दी के वास्ता बा,
एह बदलत जमाना में
भले बिलात बिआ बाकिर -
आजुओ ओकर सोझका रास्ता बाऽ।।

आजुओ
भरमावे वाला
भरमावते बा गौरैया के
रोज देके नया-नया लुभवना,
जमाना भले बदलऽता
बाकिर आजुओ
चिरई के जान जाव
लइका के खेलवना।

(2) जिनगी रोटी ना हऽ

जिनगी
खाली तइयार रोटी ना हऽ
पानी हऽ पिसान हऽ
रात के अन्हरिया पर
टहकत बिहान हऽ !

कुदारी के बेंट पर
ठेहा लागल हाथ हऽ
कोड़ झोर कइला पर
सगरो बनत बात हऽ
बैलन के जोत हऽ
हर हऽ पालो हऽ
इहे रीत चलेला
अथक साल-सालो हऽ
जे दुर्गुण के चेखुर
नोच-नोच फेंकेला
शीत-घाम-बरखा में
अपना देहिया के सेंकेला
ज्ञान-संस्कार के
खाद-पानी डालेला
निरख-निरख गेंहुआ के
जान के जोगे पालेला
बनरी आ मोंथा के
उगहूँ ना देला जे
नेह के पानी सींच-सींच
गलावे सगरो ढेला जे
ऊहे मधु-मिसरी
रोटिया में पावेला
इस्सर-दलिद्दर के
सबके ऊ भावेला
ऊहे बूझेला असली
मन-से-मन के भाषा
ऊहे बुझेला
जिनगी के परिभाषा

त खेत बचाईं,
बचाईं किसान के
नाहीं त,
हहरे के परी सबके
एक चिटुकी पिसान के।। ••

❑ जी -65—66, राजापुरी,
उत्तम नगर, नई दिल्ली - 110059

ए मीत

✍ डा0 मधुबाला सिन्हा

चाहीले मुस्कुराये के
चाहीले जे जिनगी के तमाम
जिल्लत अउरी अझुरा से
पा लिहतीं छुटकारा
उलीचे के डरे
चुप रहनीं आज ले।
जिनगी के सब राज
तोहरे से बतावे के चाहीले।
नाता बनवनीं त
निभावे के बा जिनगी भर
तोहरा साथ के हिया में
सँजोवल चाहीले।
तोहरा बातन के
तकिया में छुपावे के चाहीले
मन के मीत
तू त उ फूल हउवऽ।
जे मुरझाइयो के
हमरा के खिला देला
कवनो लुगा धोती ना हउअ तू
जे पसीना में महक जाला
फेरु दोसर बदल जाला

मन के मीत !
एह मोसकिल समय में
मुस्कुराए चाहीले
जिनगी तोहरे संगे
बितावे के चाहीले। ••

❑ नेक्टर पॉइंट आवासीय विद्यालय
चांदमारी, वार्ड सँ०-26 मोतीहारी, पूर्वी चंपारण

सुग्गी

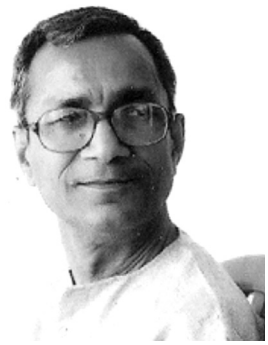

डा0 रामदेव शुक्ल

सुग्गी अइली–सुग्गी अइली' कहत गाँव के लइका दउरल आके ईया के घेरि लिहलें सँ। बूढ़ा के चेहरा अँजोर हो गइल। पुछली– 'कहाँ बाड़ी रे? कइसे आवत बाड़ी?' रेक्सा पर आवत बाड़ी, गँउवे के रेक्सा ह, 'बस पहुँचते बाड़ी' कुल्कि लइका एक्के साथे कहे लगले सं। गाँव में रेक्सा के ढुकते लइका सुग्गी के देखि के उनकी ईया की लग्गी दउरिके पहुँचि गइल रहले आ उनकी अइले के खबर जना दिहलें। सुग्गी के ईया सड़की कावर तकली तबले रेक्सा पर बइठल सुग्गी लउकि गइली। लइका ईया के छोड़ि के फेर सुग्गी के रेक्सा घेरि लेहले स। सुग्गी उतरली। अपने कान्हें से लटकत झोरा में से टाफी निकारि के लइकन के देवे लगली। लइका अउरी हँउजार करे लगलें। सुग्गी पुचकारि के कहली, 'अब तहन पाच घरे जा। बिहान अइहऽ जा, तब अउर समान देबि। अब जा लोगन। लइका धीरे–धीरे अपने घरे लवटे लगलें। सुग्गी रेक्सा वाला के मजूरी देहली। ओहू के टाफी दिहली। उतरि के अपनी ईया के अँकवारी में भरि के उठा लिहली। बूढ़ा सुखसागर में बुड़की लगावत अपनी सुग्गी के डाँटे लगली– 'अरे, ई का करत बाड़े। उतारु हमके।' जबले ईया एतना कहली तब ले सुग्गी उनके तीन–चारि फेरा घुमा के खटिया पर धीरे से बइठा दिहली। अपने निच्चे बइठि के दूनू बाँहि पसारि के ईया के पकड़ि के आपन मूड़ी उनकी कोरा में गाड़ि दिहली। ईया अपनी कोरा में सटल सुग्गी के कपार पर हाथ फेरे लगली। उनकी आँखिन से खुशी के आँसू उमड़े लागल। केहू कुच्छू बोलत नाहीं रहे। दूनू जने के मन अपसे में गहिर–गँभीर बतकही करे लागल। ओह समे सुग्गी आ उनकी ईया के छोड़ि के अउर केहू के रहले, नाहीं रहले के कवनो माने मतलब नाहीं रहि गइल। एक बरिस बाद दिल्ली से सुग्गी लौटल रहली आ बरिस भरि सुग्गी के राहि ताकत रहले के बादि उनके अपना कोरा में सटवले सुग्गी के ईया रहली। दूनू जने के हिरदे एक–दुसरे से सटल आपन–आपन बात कहल रहलें।'

'आरे, अम्माजी, लइकनिया के पनियों पीए के कहबि कि कोरा में सटवलही रहबि'। सुग्गी के माई के ई बाति सुनि के सुग्गी आ उनके ईया आँखि खोलि के ताकत लोग। सुग्गी ईया के छोड़ि के माई के अँकवारी में भरि लिहली। उनके माई टप–टप लोर चुवावे लगली। सुग्गी उनके आँसू पोंछि के कहली– 'का माई? तोरा खुसियों में रोवइए आवेला? हँसि दे अब।' कहि के सुग्गी माई के गुदुरावे लगली। उनके माई हँसि परली। ओठे से हँसी झरत रहल आ आँखिन से लोर झरत रहल। सुग्गी ईया से पुछली, 'बाऊजी कहाँ बाड़े?' ईया कहली, 'गइल होइहें कर–कचहरी कहीं। उनके गोड़ में सनिच्चर बा। एक जगहि बइठे देला कबो? चलु तें, हाथ–मुँह धो के कुछ खा ले।' सुग्गी एक हाथे अपनी माई के आ एक हाथे ईया के सम्हरले घर में ढुकली।

घर के भित्तर केवाड़ी के पल्ला पकड़ि के सुग्गी के भउजी खाड़ रहली। सुग्गी के अँकवारी में भरि के सुसुके लगली। सुग्गी उनके चुप करावे लगली। सुग्गी जेतने चुप करावें, उनके भउजी के रोवाई ओतने बढ़ल जा। सुग्गी हैरान हो गइली। अपनी माई से पुछली, 'काहऽ माई! भउजी कवनो दुख में परल बाड़ी का? भइया कहाँ बाड़े?' सुग्गी के माई बेटी–पतोहि के पारा–पारी देखली। अपनी सासु के देखली आ गहिर साँस लेके रहि गइली। सुग्गी समुझि गइली, कवनो भारी दुख के बाति बा। अपनी भउजी के पकड़ि के उनकी कोठरी में ले गइली। उनकी पलँगरी पर उनके बइठा के अपने बगल में बइठि गइली आ उनके मुँह अपनी दूनू हथोरी में लेके अपनी ओर घुमा के उनकी आँखी में तकली। कहली, 'अब बतावऽ कवन एइसन दुख बा तहके?' भउजी के आँसू कुछ थम्हल। कहली, 'पहिले रउवाँ हाथ–मुँह धो ली। कुछ खा–पी लीं। तब हम आपन दुख खुलि के बताइबि। हम त रउरे राहि देखत रहनी ह। एइजा केहू नइखे जे हमार बात सुने, हमार पीरा समुझे–बूझे।'

सुग्गी कहली, 'भउजी! रउवा पहिले आपन बाति बताईं। राउर दुख सुनले के बादिए हम कुछु खाइबि–पियबि। जबले रउवा नाहीं बताइबि, तबले हम असहीं रहबि।' 'का बबुनी। राउर जिद कबो नाहीं छूटी। हम सब कुछ बताइबि। पहिले कुछु खा–पी लेईं।' सुग्गी कहली, :'जब रउवा हमार जिद जानते बानीं तब काहें नाहीं समुझत बानी कि हमार जिद छूटे वाली ना ह। पहिले आपन बाति बताईं।'

'आपन जिद नाहीं छोड़ब, त सुनीं। हम माई बने वाली बानीं। राउर भइया चाहत बाड़ें कि अइसन ना होखे।' कहि के सुग्गी के भउजी लजा गइली। सुग्गी उनकी बाँहि में कसिके चिकोटी काटली। 'सीऽऽ' कहि के भउजी रहि गइली। सुग्गी कहली, 'बड़ा जल्दी कइनी भउजी। तनी खेले–खाये के चाहत रहल। बाकी होइए गइल त भइया के एमे का उजुर बा? ऊ काहें नइखन चाहत?' सुग्गी गम्भीर होके पूछली। भउजी कहली, 'बाति ई बा कि एक दिन राउर भइया हमके डाक्टर किहाँ ले गइनीं। उहाँ हमरे पेट पर एगो मसीन लगा के कुछ जाँच भइल। डाक्टर बतवली के पेट में लइकनी बा। राउर भइया रस्ता में हमसे कहनी कि लइकनी के जनम नाहीं होखे देबे के बा। एके खतम करा दिहल जाई।' कहत–कहत भउजी भोंकार पारि के रोवे लगली। सुग्गी उनके सम्हारे लगली। जब सम्हरि गइली त घिघिया के कहली, ए बहिनी, हम अपनी बेटी के मुआवल नइखीं चाहत। कवनो तरे एह लइकी के जान बचा लेईं। राउर भइया एकर जान लेबे पर तूलि गइल बाड़े।' सुग्गी भउजी के अँकवारी में भरि के पुचकारे लगली। कहली, 'भउजी! रउवा बेफिकिर हो जाईं। हम आ गइल बानीं। अब रउरी बिना जनमल बेटी के जान केहू नाहीं लेबे पाई। ओकर जनम होई। बाकी एक बात बा। रउवा खूब हँसी–खेलीं। खूब खाईं–पीहीं। तब्बे न राउर लइकिया नीके–सूखे जनम लेई आ चान अइसन सुन्नर–सुन्नर होई। चलीं अब हमके कुछ खियाईं–पियाईं। आवे दीं भइया के। हम उनसे फरिया लेबि।'

'ईया, जागल बाडू?' सुग्गी के बाति सुनि के बूढ़ा कहली– 'का करीं बेटी? कइसे आँखि लागी हमार? बेटा–नाती अइसन बेकहल हो गइल। आधा राति चलि गइल। अबहिन ले बाप–बेटा के पता नइखे कि कहाँ जरत–मरत बाटे लोग। तहरा बपसी त जरिए के मनबढ़ रहले। साँच कहीं त हमहीं उनके अइसन बनवनीं। बाकी तहरा भइया के त पढ़ा–लिखा के बुध्दिमान बनावल चहनीं। एक्को आस नाहीं पूजल हमार।' सुग्गी का बुझाइल कि ईया कि भित्तर दुख के समुन्दर थमथम करत बा। ऊपर से ईया के देखि के केहू नाहीं समुझि सकेला कि इनके कवनो बात के कवनो दुख–तकलीफ होई। रोवत मनई के हँसा देबे वाली ईया अपनी मन में केतना गहिर गम्भीर दुख छिपवले बाड़ी? सुग्गी सोच में परि गइली। अपने घर के तबाही देखि के उनहू के मन मुरझइले रहेला, बाकि करें त का करें? बाप आ भाई चहतें त एतना निम्मन खेती–बारी घर–दुआर सम्हारि के चलतें। कवनो कमी नाहीं रहित। जवार–पथार में इज्जति रहबे कइल ह। खाए–कमाए के कवनो कमी नाहीं रहल। अब्बो नइखे। बाकि आपसे में अइसन फुटमति कि का कहल जाव? ईया के मन के थाह लगावे के कई बेर कोसिस कइली सुग्गी।

हर बेरि कवनो न कवनो हँसी वाली बाति कहि के ईया उनके बहका देली। आजु आधी राति के आजी–नातिन जागल बाड़ी। सुग्गी ईहो जानति बाड़ी कि उनके माइयो भित्तर जगले बाड़ी आ उनके भउजियो जगते बाड़ी। जेकर बेटा–भतार दूनो आधी राति ले घरे नाहीं लवटल, ओकरा आँखि कइसे लागी? आ भउजी! ओह बेचारी का कइसे कल परी? पेट में एगो जीव लिहले, जवने के जनमले से पहिलहीं मुवा दिहले के तइयारी हो रहल बा। ऊ बेचारी पहिलौंठी के महतारी बनल चाहति बाड़ी। अपनी लइकनी के जनम दिहल चाहति बाड़ी। ओके खेलावल, पालल–पोसल चाहति बा,

आ ओही के मरद अपनी बेटी के जनमले से पहिलहीं मारिदेवे के तइयारी क रहल बा। सुग्गी के मन अपनी माई के दुख समुझले के कोसिस करे लागल। माई जनम से गाइ हई, ईहे सब केहू कहेला। कब्बो केहू के न मारे, न गरियावे, न जोर से बोले। सबके सब बात सुनत रहेले। ईया ओकर सासु हई। उनके बाति टारहीं के नाहीं। मरद के बाति टरले के कवनो सवाले नइखे। आ अब बेटा जवान भइल बा। ओकर हालि ई बा कि अपने बापो के बाप बनल चाहत बा। केहू से सोझे मुँह बात नाहीं करेला। कवनो काम ढंग से नाहीं करेला। पढ़ाई के नाव पर एम.ए. पास, अकिल की मामला में अनपढ़ो से बढ़ि के। बाप पहलवानी में मस्त। न खेत के फिकिर न घर–दुआर के। घर–दुआर, खेत–खरिहान, नातहीत सबके फिकिर ईया के कपारे। अब धीरे–धीरे कुल्हि माई क कपार पर सरकत जात बा।

सुग्गी का बुझाइल कि फिकिर के मारे उनके कपार तड़कि जाई। उठि के ईया के खटिया पर चलि गइली। एक बेर फेरू आजी–नातिन एक–दूसरे के कोरा में समा के अपने–अपने मन के बरत आगि सेरवावे के कोसिस करे लगली।

तीन पीढ़ी के चारि गो मेहरारू आ दू पीढ़ी के दूगो मरद। दूनू मरद घर से बाहर। कुछ पता नइखे कि कहाँ बा लोग। चारि गो मेहरारू आँखिन में राति काटत। दूगो घर की भित्तर, दूगो घर से बहरा दलानी में। सुग्गी अपनी जिनगी के बाति सोचे लगली। बाऊजी आ भइया के बाति चलल रहित त अबले उनके बियाह हो गइल रहित। ऊ कब्बे लरकोरि बनि के लइकन के गड़ितरा धोवत–फिंचत रहती। बाकी पढ़ले में तेज रहली। एक पर एक दरजा अव्वल नम्बर से पास होत गइली। बी0ए0 के बाद दिल्ली के जे0एन0यू0 में एम0ए0 में नाव लिखावे खातिर परीक्षा भइल। बाप–भाई के मरजी नाहीं रहे बाकी ईया के आ माई के मना के इम्तहान दिहली। देस भर के चौदह लइका लइकनिन में एगो उनहू के नाव निकरि गइल। कवनो तरे जा के नाव लिखवा लिहली। पढ़ाई शुरू होते स्कालरसिप मिले लागल। जिनगी के राहि बदलि गइल। एक से एक सपना मन में उपजे लागल। अउर जोर से पढ़ाई करे लगली। अउवल दर्जा से पास भइली। रिसर्च करे खातिर अउरी ढेर पइसा मिले लागल। अपनी माई, भउजी आ ईया के जिनगी देखले रहली, गाँव के अउर मेहरारुन के बिलखत जिनगी देखले–सुनले रहली। दिल्ली में देस भर से आइल लइका–लइकिन के जिनगी देखली। दूनू में धरती–आसमान के अंतर रहल। सोचे–विचारे लगली। अखबारन में लेख लिखे लगली। जिनगी के अरथ परत–परत उघरि के सामने आवे लागल। सुग्गी के मन में पाँखि खुलल। बुझाए लागल कि आपन जिनिगी सुधारल सुअरियो के सपना हो सकेला, अदिमी के जनम धइले पर जिनगी तब सुधरी जब दस–पाँच के अउर सुधरे के मौका दिहल जाव। अपने मन के अकास में उड़त सुग्गी का बुझाइल कि ईया के नाक बाजल ह। ऊ मन के अकास से उतरली त पवली कि ईया के आँखि लागि गइलि बा। ओकरी बाद कब उनहूँ के आँखि लागि गइल, जानि नाहीं पवली। बिहाने बाबूजी सोझही लउकि गइलें। मैदान होके लौटत रहलें। सुग्गी धधा के गोड़ धइली। बाबूजी लजइले आँखी उनकी ओर ताकि के असीस दिहलें। पूछलें– 'कब अइलू बेटी?' सुग्गी ओरहन दिहले के भाव से कहली– 'जब आप घरहीं नाहीं रहल जाई, त कइसे जानल जाई कि के कब आइल, कब गइल? कहाँ रहनीं राति कें? कब लवटनीं? हमन के राहि देखत–देखत थकि गइनी जा।' बेटी के सवालन से बचे खातिर बाबूजी हाथ मटियावे नले परचलि गइलें।

सुग्गी माई के खोजे लगली। जब माई लउकली त पुछली– 'कब अइलें बाबूजी? आ भइया अइलें कि नाहीं? लउकत त नइखन।' माई कुछ जबाब नाहीं दिहली। सुग्गी भित्तर गइली। भउजी रसोई में चाह बनावत रहली। पुछली, 'भइया रतिया लवटलें कि नाहीं भउजी?' भउजी मूड़ी हिला के बतवली कि लवटलें। तब पुछली, कहाँ बाड़े? भउजी कोठरी ओर इसारा क के बता दिहली कि सुत्तल बाड़े। बहरा निकरली त गाइ के बछरू कूदत रहल। काल्हि वाला लइका सुग्गी दीदी के खोजत दुआरे पर जुटे लागल रहले। ईया खेते में मजूरन से कवनो काम करावत रहली। अबहिन सात बजल रहे, बाकी जून के महीना के घाम कपार फारे लागल रहे। सुग्गी खेत में ईया की लग्गे चलि गइली। ईया कहली, 'तें कहाँ घमवा में आवति बाड़े? जो चाह–चूह पिउ।' सुग्गी कहली, 'तू एतनी घरी खेते में का करत बाडू?' चलऽ तुहऊँ चाह पियऽ। ईया कहली, 'देखु हई मकई तुरवावत बानीं। तोर बाप–भाई लायक रहितें त ई कार उहे लोग देखित। बाकी आपन–आपन भागि। जबले जाँगर चलत बा, ठेठावत बानी। आँखि मुना जाई तब के जाने का होखी? चलु–चलु तें घरे चलु। लूह लागि जाई।' सुग्गी कहली– 'दिल्ली के घाम एहू से चोख होला। ओइजा लूह–नाहीं लागल त एइजा का लागी? तुहउँ चलऽ तब हम चाह–चूह पियबि।' हारि मानि के ईया सुग्गी की साथे घरे अइली।

सबसे जवान मनई सुतल रहलें। उनके बाप कुल्ला गलाली क के चाह अगोरत रहले। सुग्गी गिलास में चाह ले जाके बाऊजी के दिहली आ भीतर आके ईया के साथे अपने चाह पिए बइठली। उनके माई रसोई में कुछु खटर–पटर करत रहली। सुग्गी ओहिजा से पूछली तें चाह नाहीं पियबे? माई कहली, कबो देखले बाडू हमके चाह पियत? अब बुढ़ौती में नया सवख का करीं? सुग्गी कहली, 'नाहीं चाह पियबे त कुछ खा के खरमेंटाव कऽले।' ईया कहली, 'हम त कहि–कहि के हारि गइनीं इनके। एक्के बेर जब सबके खिया–पिया लीहें तब इनके जूनि होई। इनका खर–खराई नाहीं होला।' सुग्गी पुछली 'भउजी चाह पियली? कि उनहू के अपनिए लेखा बना लिहले बा माई?' ईया कहली, 'ऊ बेचारी पी ले ले। खइले में ऊहो कचाहे ह। अब पेट से बा त ओकरा ठीक से खाए–पिए के चाहीं। अपने त अपने, एगो अउरी जीव के भूख–पियास के ध्यान राखे के परेला।' सुग्गी कहली– 'ईया तू जानत बाडू कि भइया नइखन चाहत कि लइका होखे?' ईया कहली, 'काहे नइखे चाहत?' ओह मरकिनवना के चहले ना चहले से लइका होखी का रे? सुग्गी कहली, 'चलऽ खेत में बतावत बानीं। चाह पी के सुग्गी ईया कि साथे फेरू खेत में चलि गइली। जाना मकई के पाकल बालि तूरि–तूरि के बोरा में भरत रहले स। मकई कि बिच्चे–बिच्चे लौकी, नेनुआ, कोंहड़ा, करइली फरत रहे। एक ओर चौराई के साग लहसत रहे। सुग्गी ईया के पौरुख के बखान करत कहली, 'तू जब नाहीं रहबू तब ई कुल के सम्हारी?' 'जेकरा मन करी से सम्हारी। ना त बहि बिला जाई। हम कौनो देखे आइबि? हँ तें ई बताउ कि अपनी भउजी के कवन बाति बतावत रहले ह।' सुग्गी जवन सुनले रहली तवन सब बात बता दिहली। ईया पुछली– 'अइसन कवन मसीन बा कि पेटवे में लइका लइकी चीन्हि लेत बा?' सुग्गी बतवली कि बा अइसन मशीन। ओह मसीन से जाँच कइले पर जेल जाए के परि जाई। लोग चोरी–चोरी जाँच करवावेला आ लइकी रहले पर गरभ गिरवा देला। भउजी नइखी चाहति कि उनके पेट के लइकी मुआवल जाव। भइया नइखन चाहत कि ओके जनमे दिहल जाव। ईया, तू कहऽ त हम भइया के समुझाईं कि अइसन पाप न करें। 'ईया के चेहरा दुख से भरि गइल।' कहली– 'कवन जबाना आ गइल बा बहिनी। एह दहिजरन के न डर बा न लाज बा। जवन मन करत बा ऊहे कइले पर फाँड़ बान्हि लेत बाड़ें सन।' सुग्गी कहली– 'ईया, तू देखत रहऽ। हम अइसन कुकरम उनके नाहीं करे देबि।'

आजी–नातिन खेत में रमि गइल लोग। ओह लोगन के न घाम लागत रहे, न भूख–पियास के फिकिर रहे। माई एगो लइका के भेजि के कहववलसि के घरे आके खाना–पीना कऽ के तब जा लोग। सुग्गी ईया के लेके घरे अइली त देखली कि भइया मोटर साइकिल धकधकावत कहीं जात रहलें। सुग्गी चहली कि भइया के रोकि के बतियाईं। ईया कहली, 'जाए द पाछे से टोकल ठीक नाहीं ह। लौटिहें त बतिया लीहऽ।' भइया सुग्गी ओर तकबो नाहीं कइलें। आगे बढ़ि गइलें।

राति के सूते गइली त सुग्गी कहली– 'ए ईया, आजु हमके बाबा के कुछ बात बतावऽ। कई बेर कहेलू। बतवलू कब्बो नाहीं। आजु हम बिना सुनले नाही मानबि। न अपने सूतबि, न तहके सूते देबि।' ईया चिन्ता में बूड़ि गइली। बहुत देर ले चुपाइल रहली। सुग्गी बेर–बेर टोकली त कहली, 'का करबू जानि के? ऊ कुल्हि पुरान बाति ह। आजु काल ओइसन भइले के कवन कहीं, कहले पर केहू पतियइबो नाहीं करी। एतने जानि ल बेटी कि मेहरारू के जनम लिहले पर विपति के गिनती नाहीं कइल जाला। जवन न भोगे के परे थोरे बूझे के चाहीं। तहन पाच नवका जबाना के बाडू। पढ़ल–लिखल बाडू। देस–दुनिया देखत बाडू। तब्बो बियाहि के गइले पर रोटी पानी में अझुराहीं के परी। ओह से मुकुती नाहीं मिली।' सुग्गी कहली– 'का ईया, पहिली बाति त ई कि बियाह कौनो जरूरी चीज नाहीं बा। आ दुसरकी बाति ई कि बियाह करबो करबि त खाना बनावे के नोकर दाई राखि लेबि। कवनो अइसन काम नइखे जौन मरद करें आ हम ओके नाहीं क पाईं। त मरद से दबि के काहे रहीं? चलऽ तहके दिल्ली में देखाईं कि कइसन–कइसन लइकनी एक से एक मरद लोग के उठक–बइठक करावत बाड़ी सन?' बाकी ई कुल अब्बे नाहीं। अब्बे त तू हमके बाबा के बाति बतावऽ। 'जब से तहार बियाह भइल तब से अबले कुलि बाति बतावऽ। नाहीं बतइबू त न हम सुतबि, न तहके सुते देबि।'

ईया हँसली। उनकी आँखि में एक ओर उजास लउकल आ दुसरी ओर जइसे अन्हरिया घेरे लागल। सुग्गी एह मौका के हाथ से निकरे दिहल नाहीं चाहत रहली। मनुहारि करत कहली– 'बतावऽ न ईया। तू बाबा के सबसे पहिले कब देखलू?' ईया हँसि परली। सुग्गी उनके गुदुरावल छोड़ली आ कहली– 'ईया, अब कवनो बहाना नाहीं चली। अब सब कुछु बता द।'

ईया हँसते–हँसत कहली– 'अच्छा बताउ, तिवरिया

के बनावल कविताई त सुनलहीं होखबे।' सुग्गी कहली, 'कौन तिवरिया ईया? आ कविता बनावे वाला एह गाँव में के बा?' ईया कहली, 'आरे, हऊ पच्छिम टोला के कोहिया के नइखे जानत? जवन लकवा मरले के बादि दलानी में परल–परल सरि रहल बा? एह गाँव के सबसे पापी मनई ऊहे ह। ऊ जेतने पापी रहल, तोर आजा ओतने सोझबक रहलें। ऊहे तिवरिया तोरी आजा के आ हमरी जिनगी में आगि लगवलसि। ओही के कारन तोर आजा घर छोड़ि के का जने कहँवा निकरि गइलें। आजु ले उनकर कुछु पता–ठेकाना नाहीं लागल। ईहो नाहीं जानि पवनीं कि तहार आजा जियत बाड़ें कि नाहीं। कई बेर कई जने कहलें कि साधू हो गइल बाड़े, फलाने तीर्थ में लउकल रहलें ह। केहू कहेला कि जोगी बनि गइले। हमार मन गवाही नाहीं देला कि ऊ मरल होइहें, एही से हम राँड़ि नाहीं मानीलें अपना के। एहवाती के कौनो सुख नाहीं मिलल जिनगी भरि, बाकी अपना के विधवा नाहीं मननीं। ऊपर से ई तिवरिया हमरी साथे कवन–कवन घात नाहीं लगवलसि। ऊहे तोरी आजा के गाँव छोड़ले के बादि कविताई बनाके गाँव–जवार में परचार करवलसि। हम जानीं कि तेहूँ सुनले होखबे।' कहि के ईया हँसि परली। सुग्गी कहली, 'हमरा त मन नइखे परत कि कवनो कविता गाँव में सुनले होखीं।' ईया कहली– 'जरूर सुनले होखबे, एह समे मन नइखे परत। जब तिवरिया घात लगा के तोरे आजा के घर छोड़वा दिहलसि त ऊ गाँव भरि घूमि के गावे– दादा हो हम होखबि साधू।' सुग्गी चिहा गइली। कहली– 'हँ ईया, ई कविता त हम छोट रहनीं त सुनलही रहनी। बाकी एसे हमरा बाबा के कवन नाता बा? का ई कविता तिवरिया के बनावल ह कि बाबा के बनावल ह? बतावऽ न ईया।' सुग्गी ईया के कोरा में धइके हिलावे लगली। ईया कहली– तोर आजा एतना सोझबक रहलें कि जे जवन कहि दे, ओही पर बिसवास क लें। जब हमार बियाह भइल त हमार उमिरि नौ–दस बरिस के रहे आ तोरी आजा के रहल होई सात–आठ बरिस। बियाह की सात बरिस बादि गवना भइल। गौना में ससुर नाहीं जालें, एसे तो परपाजा नाहीं गइलें। तोर आजा गइलें। ऊ सोझबक रहलें, एसे तोर परपाजा तिवरिया के हुसियार बुझि के उनके साथे लगा दिहले रहले। हम डोली में अइनीं आ समान लदवा के तोर आजा बैलगाड़ी पर अइलें। रस्ता में डोली कई जगहि धऽ के कहार कुल्हि एक से एक लंठई बतियावें कुल्हि। हमार मन बेकला गइल रहे। एक बेर तिवरिया डोली कि लग्गे आके बोलल, 'भउजी' पाय लागी। हम राउर देवर हई। हमसे का लजात बानीं? ओहार उठाईं। हम रउवा के पानी पियावे आइल बानीं। हम डोली के ओहार उठा के देखनीं त एगो छैला खाड़ रहल। पानी के लोटा हमरे हाथे में धरावत ऊ हमार कानी अँगुरी दाबि दिहलसि। हमरे हाथ से लोटा छूटि गइल। जल्दी से ओहार गिरा के हम त काँपे लगनीं। पियसियो बुता गइल। ओकरी बादि कई बेर ऊ आइल ऊ डोली के ओहार उठावे के कहलसि, बाकी हम ओहार नाहिंए उठवनीं। घरे अइनीं। तहार परपाजी रहली। ऊहे हमके पानी पियवली। तब हमार परान लवटल।' ईया तनी थम्हि गइली त सुग्गी टोकली– 'तब का भइल? सोहागराति कइसे मनवलू ईया?' ईया के आँखि मुलमुलाइल। उनकी चेहरा के लकीरि हँसे लगली स। कहलीं– 'आजु–कालि की लेखा साँझि होते बर–कनिया कोहबर में नाहीं ढुकि जाँ, ओह जबाना में। हमार सोहागराति तीन महीना बादि आइल। आ ओके सोहागराति कहीं कि उजार राति कहीं, तुहई बतावऽ'।

सुग्गी के परान झुरा गइल ई बात सुनि के आ ईया के अन्हार चेहरा देखिके। उनके कुलि खुशी बिला गइल। ऊ पछताए लगली कि कहाँ से कहाँ ईया की साथे बरियाई क के ई कहानी सुनल चहली ह। ईया की आँखिन ओर देखले के हिम्मत सुग्गी की भीतर नाहीं रहि गइल। ईया कुछु देर ओइसहीं सुन्न होके बइठल रहली। ओकरे बादि कहली, 'ले तोके सब कुछ बता देत बानीं कि बेर–बेर हमार जीव नाहीं उदबेगबे।' सुग्गी कहली, 'रहे द ईया। जवन बाति तहार मन एतना दुखा देत बा, ओके मति कहऽ। हम कब्बो तहके तंग नाहीं करबि। जाए द।'

ईया कहली, 'नाहीं बहिनी। आजु ले अपने मन के नरक मनही में ढोअत–ढोअत हमहूँ थाकि गइल बानीं। तहसे कहि के हमरो जीउ हल्लकु हो जाई। तू एतना पढ़ल–लिखल बाड़ू, एतना दुनिया देखले बाड़ू। तहसे आजु आपन हिरदे खोलि के देखा दिहल चाहत बानीं। सुनऽ।'

सुग्गी के कुलि देहि कान बनि गइल। ईया कहे लगली, 'गवने अइले के बादि रोज राति के अगोरीं कि हमार दुलहा आवत होइहें। अब अइहें– अब अइहें। हो सकेला माई–बाप से लजात होखें। अधिरतिया अइहें, पछिलहरे अइहें, भिनसहरे अइहें। बाकी कहाँ? उ त साँझे अपनी माई के हाथे खैका खाए खातिर घर में ढूकें। आँखि नीचे कइले खालें आ अँचवे खातिर दुआरे भागें त फेरु दुसरही दिने खाए के बेर घर में ढूकें। हम

पल्ला की झँझरी से उनके देखि–देखि के रहि जाईं। ओह समें हम सोरह–सतरहे बरिस के रहल होखबि। देहि भादो की नदी अस बढ़ियाइल रहे आ दुलहा के ई हालि। बइसाख में गवना भइल रहल। बइसाख बीतल। जेठ बीतल। असाढ़ बीते लागल। असाढ़ बीते वाला रहल कि एक दिन तहार आजा, ओह समे के हमार दुलहा, हमरी कोठरी के केवाड़ी खोलि के भीतर ढुकलें। केवाड़ी हम रोज खुलले राखीं। ओहि दिन ऊ अइलें। हमार जीव फुला गइल बाकी उनके हाथे में रोटी देखि के बूझि नाहीं पवनीं कि का चाहत बाड़े। खटिया पर से उठि के खाड़ हो गइनीं। उहो खाड़ रहलें। लाज की मारे उनके मुँहें कवर ताकि नाहीं जा। कनखी से देखनी त हमार दुलहा काँपत रहलें। उनके बाँहि धऽ के खटिया पर बइठवनीं। हाथे में चारि–पाँच गो रोटी लपेटि के लिहले रहलें। हम पूछनी– 'काहें काँपत बानी जी?' ऊ कुछु बोलबे नाही करें। धीरे–धीरे उनके हाथ–गोड़ सुहुरावे लगनी। तनल देहिं तनी नरम होखे लागल। कपार के पसेना पोछि के उनकी आँखिन में सोझे देखि के पूछनीं– 'काहें काँपत बानीं जी?' ऊ कुछु बोलबे नाहीं करें। धीरे–धीरे उनके हाथ–गोड़ सुहुरावे लगनी। तनल देहिं तनी नरम होखे लागल। कपार के पसेना पोंछि के उनकी आँखिन में सोझे देखि के पूछनीं– 'हई रोटी काहे खातिर ले आइल बानीं' ऊ चुप। कई बेर पुछनीं। बोलबे नाही करें। जब बहुत दिकदिका दिहनी त लजात–लजात कहलें– 'खाए खातिर ले आइल बानीं।' हम पूछनीं– के के खाए खातिए? कहलें– 'अपना के खाए खातिर।' पुछनीं– 'आजु चउका में नाहीं खइनी हँ का?' लजा गइलें। उनके लजाइल देखि के हमरा अउरी अजगुत भइल। पुछनीं– 'सब कुछ सोझ–सोझ बताईं कि रोटी खाए खातिर हमरी कोठरी में अइनी ह कि कवनो अउरी बाति बा?' ऊ हमार मुँह ताके लगलें। उनकी देहि में मरदवाला कवनो लच्छने नाहीं लउकत रहल। उनके देहि झकझोरि के पूछनी– 'ई रोटी खाए के बाति के का मतलब भइल, साफ–साफ बतावऽ।' हमार दुलहा कहलें– 'एकर मतलब त हमहूँ नइखीं जानत। तिवारी भइया कई दिन से कहत रहले हँऽ कि जेकर गौना हो जाला ऊ रोटी दालि तरकारी में बोरि के नाहीं खाला।' हम पूछनीं कि कइसे खाला? त बतवलें कि राति के अपनी दुलहिन की लग्गे रोटी लेके जइहऽ त ऊ बतइहें कि कइसे बोरि के खाइल जाला। समुझऽ सुग्गी कि उनके ई बाति सुनि के हमार देहि झनझना गइल। रोटी छोरि के फेंकि दिहनीं आ उनके दूनू कान्ह धऽ के उनकी आँखिन में घुइरि के पुछनीं– 'ई बतावऽ तू गवना के मतलब ईहे बूझत बाड़?' 'हमार दुलहा फेरु थरथर काँपे लगलें। ओकरी बादि उनके खटिया पर पटकि दिहनी आ ढंग से उनके बतवनीं कि गौना के मतलब का होला। बस बहिनी, ऊहे हमार पहिली राति रहल, ऊहे आखिरी।'

ईया पुक्का फारि के रोवे लगली। सुग्गी के देहिए सुन्न हो गइल। अइसन आदिमी हो सकेला? सोझबक से सोझबक मरद मेहरारू के देखि के चतुर हो जालें। उनके आँखि लइकनिन के एकएक अँग छेदे–फारे लागेला। सुग्गी के मन अउरी चटोर हो गइल आगे के बाति सुने खातिर। पुछली, 'तब का भइल ईया। उहे आखिरी राति काहें गइल? कइसे हो गइल? बाबा का भइलें?'

सुग्गी के सवाल फुलझरी अइसन छूटे लगलें। ईया रोअत आँखि से हँसे लगली। कहली– 'ओकरे बादि होखे के का रहल?' भिनसहरे हमार आँखि लागलि। अइसन ओंघाई ओकरे बाद कब्बो नाहीं लागलि। पहर भरि दिन ले हम सुतल रहनीं। जब सासु आके जगवली तब उठनीं। सासु हमार दासा देखि के धधक गइली। कोरा में भरि के हमके चूमे–चाटे लगली। कहली– 'राति बाबू आइल रहल ह? अब तहार भागि खुलि गइल। दुलहिन, हमार लइका बहुत सोझबक ह। ओके कुछु ढंग–लूरि सिखावत रहिहऽ।' हम लाज की मारे काठ हो गइनीं। तहार आजा दिन भरि कहीं नाहीं लउकलें। राति भइल त सोचनीं कि अइहें जरूर। नाहीं अइलें। सासु कई बेर पूछली, 'बाबू आइल बा?' नाहीं सुनि के कहली– 'हो सकेला लाज के मारे ममहर भागि गइल होखे। दू चारि दिन में लवटि आई।' सासु हमरी गाले पर चिकोटी काटि के कहली– 'अइसन सवाद छोड़ि के कवनो मरद केतना दिन बहरे रही?' हम लजा गइनीं। चार–पाँच दिन बीति गइल ऊ नाहीं लवटलें। ससुर जी उनके ममहरे आदिमी भेजलें। आदिमी लवटि के कहलसि कि ओइजा त नाहीं गइल बाड़े। सुनते सबके चोन्हा आ गइल। ओझा–सोखा के लग्गे हमार सासु–ससुर दउरे लगलें। जे जवन जुगुति बतावे तौने करे लागल लोग। महीना बीति गइल। एक दिन तिवरिया दुआर पर आइल। ओह समे सासु–ससुर कहीं गइल रहे लोग। हमसे कहलसि– 'आरे भउजी का हाल–चालि बा? भइया के कहाँ लुकवा दिहले बाड़ू? हम का जबाब देतीं?' केवाड़ी के पल्ला धऽ के भितरे से ओकरी ओर टुकुर–टुकुर ताकत रहनीं कि ई उनके मीत ह, जरूर कुछ न कुछ जानत होखी। थोड़के देर

बाद तिवरिया खटिया के पाटी पर अँगुरी बजा–बजा के कुछु गावे लागल। हम कान फारि के सुने लगलीं। ऊ गावत रहे–

दादा हो हम होखबि साधू
घर मेहरी मोर मिललि खुनिया
दादा हो हम होखबि साधू।
भीतर हमसे बोले नाहीं,
बहरा ओकर सगरी दुनिया।

तिवरिया आँखि मटका–मटका के गावत रहे। ओकर सउँसे देहि झूमत रहे। ओके देखि के बुझात रहे कि सरग के राज पा गइल बा। हम जोर से केवाड़ी के पल्ला भड़का के आपन रीसि जनवनीं। ऊ दहिजरा खटिया पर से उठि के दुआरी पर आइल। दाँत चियारि के कहलसि– 'भउजी! भइया अब नाहीं अइहें। ऊ साधू हो गइलें। अब तू आपन सोना अइसन देहि माटी में मति मिलावऽ। तहरा जवानी के मोल हम राखबि।' हम ओकरी मुँह पर केवाड़ी बन क दिहनीं।

तिवरिया चलि गइल। सासु अइली त हम सब बात उनसे बतवनीं। ऊ जाके तिवरिया से पुछली कि साधू होखे वाली बाति ऊ कइसे जनलसि ह? बहुत–बहुत पुछाइल बाकी तिवरिया कुछु ना बोलल। साँझे बिहाने हमार घर घुरियावे लागल। तहरी आजा के कुछु पता नाहीं चलल। हमार माई–बाप दमाद के खोजे खातिर बैखरा हो गइल। ओतना बिपत्ति में एक्के गो हरियरी लउकल– तहार बाप हमरी कोखि में आ गइल रहले। हमरे सासु–ससुर के जिनगी नाती की असरा में लटकल रहे। समय पुरहर भइल। तहार बाप जनम लिहलें। हम सब दुख भुलवा के उनहीं के पोसे लगनीं। भँइसि–मँगवनीं। ओकर दूध पिया के बेटा के पोसे लगनी आ मने–मने ओके पहलवान बनावे के सपना देखे लगनीं। सोचीं कि इहे लइका पहलवान बनि के तिवरिया से हमार रच्छा करी। लइका हमार सचहूँ फोंफिया के बढ़े लागल। जेही देखे ऊहे कहे कि बेटा होखे त अइसने होखे। बाकी तिवरिया से हमार रच्छा कइले के नौबति बेटा का नाहीं आइल। ऊ कार हमरा अपनहीं करे के परल। तिवरिया त पगला गइल। एक दिन भोरहरे हम खेते गइल रहनीं। ऊँखी के खेत में बइठनीं। ऊ ना जाने कबसे घात लगवले रहे। आके पाछे से अँकवारी में ध लिहलसि। ईहे रट लगावत रहे 'आजु तहके नाहीं छोड़बि, आजु तहके नाहीं छोड़बि।' हमहूँ सोचि लिहनीं कि आजु निपटारा क लेबे के बा। बस दुर्गा माई के सुमिरन क के तिवारी के बाँहि छोड़वनी। ऊ बुझलसि की हम तइयार हो गइनीं। तनी एक ढील परल कि पटकि के ओकरे छाती पर बइठि गइनीं आ टटका गुह हाथे में ले के ओकरी मुँहे–नाके–आँखी में लभेरि दिहनीं। छन भरि में ई कार हो गइल। कहनीं कि 'ले भउजी के मति छोडु।' घरे आके सासु से कुल्हि बाति बता दिहनीं। सुनि के ऊ बहुत डेरइली। का जने ऊ अब कवन झंझट करी। बाकी तिवरिया ओहिजा से कहीं भागि गइल। कई बरिस कि बादि उपराइल। भागि गइल, बाकि ओकरी पहिलहीं गाँव जवार में 'दादा हो हम होखबि साधू–घर मेहरी मोर मिलल खुनिया' के कविताई लइका से लेके सेयान तक ले सबके कंठ में बइठा दिहले रहल। सभ केहू इहे बूझे कि हमरी मारि से डेरा के तोर बाबा ईहे गीति गावत घर छोड़ि दिहलें। एगो मरद कुचाली होखे त केतना माहुर घोरि सकेला कवनो मेहरारू की जिनगी में, एकर कवनो गिनती बा सुग्गी?

ईया के सवाल सुग्गी के अइसन तीर बनि के लागल कि उनके रोंआ रोंआ पिराए लागल। कुछु सोचि–समुझि नाहीं पवली कि ईया के का जवाब दें। आजी–नातिन की बतकही में राति आधा बीति गइल रहल। ईया कहली– 'अच्छा बेटी, अब सुति रहऽ।' सुग्गी 'हँ ईया' कहि के सुतली, बाकी आजी–नातिन दूनों जनीं अपनी–अपनी मन में बढ़ियाइल दुख के दरियाव में बूड़त–उतिरात भिनुसहरे ले जागत रहली।

भउजी के आँखि फूलि के लाल अड़हुल भइल रहल। सुग्गी देखि के अदँकि गइली। पुछली– 'का भउजी, आँखि अइसन काहें भइल बा? उठलि बा का?' भउजी अँचरा उठाके आँखि से लगा लिहली आ धीरे से कहली– 'नाहीं, आँखि नइखे उठल।' 'तब राति भरि रोवल बाडू का? का भइल बतावऽ?' सुग्गी उनके हाथ से अँचरा छोड़ा के कहली। भउजी उदास रहबे कइली अउर उदास हो गइली। सुग्गी बेर–बेर पुछली त अतने कहली– 'राउर भइया, राति भरि हड़कावत रहलें ह कि गरभ के आ ओके गिरावे के बाति सुग्गी से जनि बतइहऽ। जो बता देबू त मारत–मारत हाड़ तूरि देबि।' कहि के भउजी चुपा गइली। थोरकी देर बादि कहली– 'ए बहिनी, राउर गोड़ लागत बानी, अपने भइया से जनि बताइबि कि हम सब बात बता दिहले बानीं। अपने त रउवा दस–पाँच दिन रहि के दिल्ली चलि जाइबि। हमरी जान के साँसति हो जाई।' सुग्गी सोचे लगली, भउजी के आ उनके गरभ में पलत–बढ़त लइकनी के बारे में। भउजी के माई–बाप लइका के घर दुआर आ जर–जजाति देखि के अपनी बेटी के

बियाह भइया से क दिहल। भइया पढ़ले के नाव पर एम0ए0 पास हवें बाकी एक पन्ना लिखे के होखे त बीसन गो गलती करिहें। हर दर्जा में कागज–किताब साथे ले के नकल करत पास भइलें। बाप के कमाई से सफारी सूट पहिरि के विन्ध्याचल के चुनरी कान्हें पर धइले एहर–ओहर मटकत रहेलें। बियाह नाहीं भइल रहित त इनके–उनके बहिन–बेटी का पाछे कतिकहा कुक्कुर अइसन दउरत रहतें। अब भउजी अइसन गऊ मेहरारू पा गइल बाड़ें त ओकरे जीव के लागि गइल बाड़ें। सुग्गी के देहि खीसि के मारे झनझनाए लागल। अपने बाऊजी के बाति सोचली त अउर रीसि बरल। ऊ अइसन नाहीं रहतें त भइया कुछ लायक त बनल रहिते। राति–दिन पहलवानी क नशा में घर–बार सबसे बेगाना होत चलि गइलें। माई के गाइ–गोरू अइसन जानि के कब्बो ओकर बाति नहीं सुनलें। ओकर ई हालि कि बाऊजी के नाँव सुनते सब देहि ढाँपि के बइठि जाले। ऊहो तनि कड़क रहति त भइया अइसन मनबढ़वा नाहीं भइल रहतें। ओहू के दोष बा। लइका के कवनो बाति टरे के ना चाहीं। बाबू दुलरूवा बनावल गइले। बनत–बनत अइसन बनि गइलें कि कवनो काम–काज के नाहीं रहि गइलें। माई, बाऊजी, सबकी ऊपर रिसियात सुग्गी का राति के ईया के एगो बाति मन परि गइल। ईया कहली कि मरद त उधिया गइलें बाकी बेटा पा के ओके पोसि के पहलवान बनावे लगनीं। ईया सोचली कि बेटा पहलवान होई त तिवरिया अइसन पापिन से बदला लेई। आजु ईया बाऊजी के पहलवान बनवले के जगही अदिमी बनवले रहिती, कुछु पढ़वले–लिखवले रहिती, त भइया अइसन कपूत त नाहीं होइत। सज्जी दोस ईया के बा।

गनगना गइल सुग्गी के सगरी देहि, जइसे चलत–चलत मइला पर गोड़ परि गइल होखे। उनका होस भइल त लगली पछताए कि ईया की कपारे बाऊजी आ भइया की बिगड़ले के दोष लगावत बाड़ी। ईया अइसन रहल कि ओह बिपति में अपने के बचवली आ अपने लइका के जियवली पोसली। कवनो दोसर मेहरारू रहित त अफना के मरि गइलि रहित। चाहे तिवरिया के जाल में फँसि के बेसवा बनि गइल रहित। जवन ईया एतना हिम्मति से आजु ले जूझि रहल बाड़ी उनहीं के दोस देबे वाली सुग्गी के हई? पढ़ले में ठीक निकलि गइली। दिल्ली पहुँचि गइली त अतना लेयाकत हो गइल कि माई, बाऊजी, ईया सबके गलती निकाले लगली? ईया साथ नाहीं दिहले रहिती त सुग्गी दिल्ली त का, देउरिया ले नाहीं देखि पवती। अइसन ईया के दोस दिहले के खेयाल से सुग्गी मने–मने बहुत पछताए लगली। मन अतना उमड़ल कि अब्बे ईया के गोड़ ध के माफी माँगी। बाकी ईया त कतहीं लउकते नइखीं। हारि–पाछि के सुग्गी ईया के खोजे खातिर खेत कावर निकलि गइली। ईया मकई के खेत में चुपचाप एगो लउकी के लत्ती निहारत बइठल रहली। सुग्गी पाछे से जाके उनके आँखि मूनि लिहली। ईया हाथ पाछे क के सुग्गी के कपार सुहुरवली। कहली, 'हम अपनी सुग्गी के देहि नाहीं चीन्हबि? कुछ खइले ह कि नाहीं?' सुग्गी ईया के आँखि उघारि दिहली आ उनके बगले आके बइठि गइली। ईया सुग्गी की ओर तकली त चिहा गइली। पूछली–तोर मुँहवा काहें झुराइल बा रे? कुछु भइल ह का? कुछ खइले–पियले ह? चलु–चलु घरे चलु। तोर महतारी आ भउजाई तोके खियवले–पियवले के खेयाल कइसे राखें सों? ओह दूनू के त अपने अपने मरद के फिकिर से फुरसत नइखे। का करें स बेचारी? अपने–अपने करम के फल भोगत बाड़ी स।'

सुग्गी ईया के मुँह अपनी हथोरी से बन क दिहली। उनकी आँखि में ताकि के पूछली– 'ईया तहरी अइसन बहादुर की मुँह से करम आ भोग के बाति नीक नइखे लागत। तुहईं बतावऽ, आपन बलबुद्धि नाहीं लगवले रहतू त हमार आजा आ तिवरिया त तहार जिनगी नरक बनवले में कवनो कसरि नाहीं छोड़ले रहले। एक बाति अलबत्ता हमरा नइखे बुझात कि हमार माई अइसन मुँहदुब्बर कइसे हो गइलि? तू अपनी अइसन हमरी माई के काहे न बनवलू? अब भउजियों माएइ वाली राहि धइले बाड़ी। का होई हमरी घर के हालि, जब तू नाहीं रहबू?'

ईया जोर से साँस लिहली। सुग्गी के हाथ अपनी हथेली में ले के दबवली। ओकरी आँखि में झाँकि के कहली– 'एहू में हमरे दोस बा। जब तोर आजा भागि गइलें आ तिवरिया हमार बदनामी करे खातिर कविताई करे लागल त हमार जियल मोहाल हो गइल। जब तोर बाप जनमले त उनके पहलवान बनावे लगनीं। जब बियाह करे लाएक भइलें त हम अइसन लइकी खोजनीं जवन हमरे बेटा की ओर आँखि उठा के देखे के हिम्मति न करें। हमरे मन में एगो चोर पइसि गइल रहे कि कहीं हमार पतोहियो हमरिए लेखा चढ़बाँक मिलि जा, आ हमार लइकवो अपने बाप लेखा घर छोड़ि के भागि जा, तब का होखी? एही से लामे के नाता में एगो बिना माई–बाप के टुअर लइकी पसन कके ओही से बेटा के बियाह कइनीं। अगहूँ एह बाति के धेयान

रखनीं कि पतोहि कब्बो बेटा के मुँहे ना लागे पावे। हरदम हम तोरी माई के दबवले रहनीं। एकर नतीजा ई भइल कि तोर माई एइसन गऊ हो गइलि। अइसन नाहीं भइल रहत त हमार पहलवान ओके कहिए घोंटि घलले रहतें।

सुग्गी भड़कि गइली। 'मेहरारू के गऊ बनवले के जरूरत मरद लोग के काहे परल जानेलू?' सुग्गी के सवाल सुनि के ईया आँखि फारि के उनके देखली। कहली– 'पढ़ले हम बानीं कि तू? तुहईं बतावऽ कि गऊ बनवले के जरूरत काहे परल। सुग्गी हँस परली। कहली, 'जवन हम कहे जात बानीं ऊ सुनि के तू बिसवास नाहीं करबू। जनम से लेके, आजु ले जवन सिखावल गइल बा ओके छोड़ल, ओसे हटि के कवनो नया बाति सुनल, असानी से नाहीं होला।' सुग्गी अचक्के में आपन बाति रोकि के ईया की माँगि में भरल सेनुर निहारे लगली। ईया कहली, 'का देखत बाडू?' सुग्गी कहली, 'तहरी माँगे में चमकत सेनुर देखत बानीं। जानत बाडू ई का ह?' ईया कहली, 'एमें जनले के कवन बाति बा रे बउरही?' ई सोहाग के निसानी ह। लोग केतनो कहल कि जब तहार मरद एतना दिन हो गइल, नाहीं लवटलें त मरि–खपि गइल होइहें। माँगि धो द आ चूरी फोरि द। हम कहि दिहनीं कि हमार मन कहत बा कि ऊ जियत बाड़े। जहाँ होइहें जइसे होइहें, बाकी जियत बाड़े। हम उनके सोहाग कहले के निसानी काहें छोड़ी?' सुग्गी हँसि परली। पुछलीं, 'ईया, जवने के तू सोहाग कहत बाडू ऊ तहके का दिहलसि? सँउसे जिनगी में एक राति के सुख, उहो तब मिलल जब तू बरियाई से ओह सुख के उनसे छोरि लिहलू। संजोग कहऽ कि ओसे तहरी कोखि में बेटा आ गइल। ओकरे बाद सोहाग के नाँव पर तहके का मिलल?' ईया मुँह बा के सुग्गी कावर देखत रहि गइली। सुग्गी पुछली– 'बतावऽ'। ईया कहली– 'का बताईं रे? हम कुछु बुझिए नाहीं पावत बानीं कि तें का कहत बाड़े?' सुग्गी हारल नाहीं चाहत रहली। कहली– 'ईया, बताईं त बिसवास करबू कि सेनुर गुलामी के निसानी ह?' ईया बिगड़ि गइली– 'तें पढ़ि–लिखि के बउरा गइल बाड़े। आरे, ई भगवान के बनावल सोहाग के निसानी ह। एके गुलामी के निसानी काहे कहल जाव? आ मानि ले गुलामिए के निसानी ह, त पति साच्छात परमेसर हवें। उनके गुलाम भइले में कवन उजुर हो सकेला?'

सुग्गी मुस्कान में बदलि गइली। ईया का बुझाइल कि सुग्गी को ओठवे नाहीं, ओकर आँखि, नाक, लिलार– कुल्हि देहिंए मुसुका रहल बा। सुग्गी के ई रूप ईया के बहुत नीक लागल। पट्टे कहि दिहली, 'अब तोहरो के हम गुलाम बनवही वाली बानी, एगो तोरी जोड़ जुगुति के लइकवो हमरी नजरि में बा। विवाह हो जाई, तब समुझबे कि पति के गुलामी केतना नीक लागेला।

सुग्गी ईया की बाति पर कुछ ना कहली। पुछली– 'अच्छा ईया। तू ई बाति जानेलू कि सगरी दुनिया में खाली अपनिए देस में आ ओहू में खाली हिन्दू लोग में सेनुर सोहाग के निसानी मानल जाला?' ईया कहली– 'काहे, गाँव के मियाइनों त सेनुर लगावेली स।' सुग्गी कहली– 'देहात में हिन्दू की देखा देखी लगावेली। शहर में रहे वाली मियाइन कब्बो सेनुर नाहीं लगावेली। दुनिया एतना बड़हन बा, एतना लोग एमें रहेला, परमेसर खाली एक देस के एक्के धरम के माने वाला लोग के सेनुर देके भेजलें, अउर केहू के नाहीं दिहले? ईया तुहँईं सोचऽ जो तहार परमेसर सोहाग के ई निसानी आदिमी के दिहले रहतें, त सभ के न दिहले रहतें। आखिर सभे त तहरी परमेसरे के उपजावल न हउवे।'

ईया फिकिर में परि गइली। गुनानि करे लगली कि एतना पढ़ल–लिखल होके जवन बाति कहत बिया ओमें कुछ गुद्दा त होखबे करी। बाकी हमरी अकिल में त कुछु अमाते नइखे। ईया के चुप देखि के सुग्गी कहली– 'का सोचे लगलू ईया! हम बताई?' ईया कहली– 'तेहीं बताउ, हमरा कुछ नइखे बुझात।' सुग्गी कहली– 'अच्छा ईया, गाइ–भँइसि के नाथल काहे जाला?' ईया हँसि परली। कहली– 'हरे बउरही नाथल ना जाव, त पगहा तुरा के भागि नाहीं जाई?' सुग्गी ईया की आँखि में आँखि डारि के कहली– 'एही लेखा मरदो लोग जवने मेहरारू के खाली अपनिए खूँटा में बन्हले रहल चहलें, उनके नाक छेदि के नथिया पहिरा दिहलें। आ कहि दिहलें– देखिऽल ई नथिया तहरी सोहाग के निसानी ह, एके कब्बो नाके से उतरिहऽ जनि। पहिले जब अदिमी लोग जंगल में उघारे घूमत रहे, तब केहू न केहू के भतार रहे, न केहू केहू के मेहरी रहे। जेकरा जेकरे साथे जब मन करे, तब चलि जा। जब ई बाति कुछ लोगन के नीक नाहीं लागल त आपस में मिलि बइठि के विधान बनावल लोग कि एक मरद की साथे एके मेहरारू हरदम खातिर रहि जा। एही के बियाह परथा कहल गइल। एसे आगे चलि के बहुत फैदा भइल। अदिमी लोग जानवर से आगे बढ़ि के बहुत उन्नति कइलें। दुनिया के जवने–जवने हिस्सा में लोग रहल, तवने–तवने हिस्सा में अलगे–अलगे बोली–बानी फइलल। बियाह के अलगे–अलगे ढंग

फइलल। मरद के खूँटा से मेहरारू बन्हल रहें जिनगी भरि, एकरे खातिर अलगे–अलगे सोहाग के निसानी चलि गइल। कहीं सेनुर, कहीं बिछुवा, कहीं मुनरी आ कहीं मंगलसूत्र। जौने देस में जवन चलन चलि गइल ऊहे अबले चलत बा।'

ईया मुँह बवले आँखि मुलुकावत सुनत रहली। सुग्गी हँसि के कहली– 'ईया एकर उल्टो भइल। जवने आदिवासी कबीलन में मरद की जगहि मेहरारू मालिक रहली ओमें मरदे लोग के नाक, भा कान में छेद क के कवनो सोहाग के निसानी पहिरा दिहल गइल। तू गोदना गोदवले बाडू न? गोदनवो एही लेखा सोहाग के निसानी मानल जाला। हमन पाच किहाँ मेहरारू गोदना गोदवावेली। कई समाज अइसनो बा, जहाँ मरद गोदना गोदवावेलें। अब त कई जने फैसन समुझि के गोदना गोदवावे लें। एही लेखा...

एगो लइका दउरल आइल। हाँफत–हाँफत कहलसि– 'ईया घरे चलऽ, जल्दी चलऽ।' ईया पूछली, 'का ह रे? हाँफत काहें बाड़े? के बोलावत हऽ? लइकवा कहलसि– पहलवान बाबा बोलावत बानें' कहि के भागि गइल। ईया कहली 'चलऽ ए सुग्गी, देखल जाव पहलवान का कहत बाड़े?'

आजी–नातिन दुआर पर आइल लोग। उहाँ के नजारा ई रहल कि आठ नौ जने पहलवान खटिया–चउकी पर बइठल रहलें। बाल्टी में रस घोरात रहे। एक जने सिलवट पर भाँगि पीसत रहलें। माई के देखि के सुग्गी के बाप उनके लग्गे आ के कहलें– 'माई, एह सबके खैका बनवा दे। खा के मेला में जाई लोग। ओइजा दंगल होखे वाला बा।' माई कहली, 'देखऽ तानीं। सुग्गी के हाथ धइले ईया भीतर ढुकली। सुग्गी के भउजी आ माई थथमल खाड़ रहल लोग। ईया पूछली– 'का ह रे? काहें एह तरे ठाढ़ बाडू स?' सुग्गी के माई कहली– 'देखीं न, घर के लोग के खैका बनि गइल बा। अब ई एतना लोग के लिया आइल बाड़े। चाहत बाड़े कि घिवही पूरी आ जाउरि बनो। घर में न एतना घीव बा, न एतना दूधे बा कि पूरी जाउरि बनो। रउरहीं बताईं हम का करीं?' ईया कुछु देर सोचली। सुग्गी से पूछली– 'का कइल जाव?' सुग्गी कहली– 'हम का बताईं ईया? घीव दूध नइखे त कुछु अउर बनि जा। खियावे के त परबे करी'। ईया कहली, दालि–भात–तरकारी चाहे लिट्टी–चोखा बनि जाइत, बाकी तोर बाप माने तब न?' माई आ भउजी भीजल बिलारि अइसन कपसल रहली। सुग्गी कहली– 'हम जाके बाऊजी से बतियावत बानीं। ईया जबले कुछु कहें, तबले सुग्गी दुआर पर निकरि अइली। पहलवान लोग के सुना के बाऊजी से कहली– 'बाऊ जी, एह बेरा पूरी–जाउरि बनावे भरि के घीव आ दूध घर में नइखे। लिट्टी–चोखा काहे न बनि जा? बाऊजी आँखिन में रीसि के लाली दउरल। कुछु बोलें तबले एक जने पहलवान बोलि परलें– 'का हरज बा? लिट्टी–चोखा बनि जा। ओमें त अउर मजा आई।' सुग्गी देखली, एक दू जने पहलान के मुँह उतरि गइल। ओह लोगन के आ बाऊजी के मुँहे कावर बिना देखले भीतर गइली। ईया के कहि दिहली– 'पिसान आ आलू बहरा भेजि दऽ। उहे लोग लिट्टी–चोखा बनाई आ खाई।'

पहलवान लोग के खिया–पिया के बाऊजी ओह लोग के सथवें निकलि गइलें। जात बेर बिना केहू ओर तकले कहत गइलें, 'हम राति के नाहीं लवटब। बिहने आइबि।' सुग्गी के माई सुग्गी के कोरा में भरि लिहली। कहलीं– 'बेटी आजु तें नाही रहते, त अबहिन ले हम सासु पतोहि घीव दूध के इन्तजाम कके ओह धमधुसरन के पूरी–जाउरि बनवले में नधाइल रहतीं जा। तू कहि दिहलू अपने बाऊजी से कि घीव दूध नइखे त लिट्टी चोखा बनि जाव। हम कहले रहतीं त हमार जिभिए खीचिं लिहले रहतें। आजु पहिली बेर अइसन भइल ह कि तहरे बाऊजी के फुरमाइस पूरा नाहीं हो पावल।

ईया के आँखि–मुँह अजबे उजास से भरल रहे। ऊ सुग्गी के देखि–देखि के आ उनके बाति सोचि–सोचि के हुलसत रहली। पतोहि के बाति सुनि के कहली, 'तोहार बेटी हीरा बा हीरा। केतना निम्मन होइत जो तोहार बेटवो कुछु लाएक भइल रहित।' सुग्गी एह बात पर धेयान दिहली कि ईया की चेहरा के उजास भइया के जिकिर अवते बिला गइल। सभे भड़भड़ आवाज सुनि के रस्ता की ओर ताके लागल। भइया आ उनके केहु सँघतिया मोटर साइकिल पर आवत रहलें। माई घर के भीतर चलि गइली। भउजी पल्ला पकड़ि के दुआरी पर खाड़ रहली, ऊहो नपत्ता हो गइली। ईया आ सुग्गी खाड़ रहि के आवे वाला लोग के देखे लगली। भइया मोटर साइकिल से उतरि के बिना कवनो ओर तकले घर में ढुकि गइलें। उनके संघतिया एगो खटिया पर बइठि गइलें। ईया सुग्गी से कहली– 'इनके पानी पिया दे।' सुग्गी कुछ कहें ओसे पहिलहीं भइया घर में से कुछ रुपया गनत निकलले। उनके देखते सँघतिया उठि परलें। दूनू मोटर साइकिल भड़भड़ात उड़ि गइलें।

सुग्गी पूछली– 'भइया कहाँ जालें? कौनो नोकरी–चाकरी करेलें? ईया कपारे हाथ लगा लिहली।

कहली– नोकरिए खातिर त मारल–मारल फिरत बा बेचारा। एगो कौनो दलाल पचास हजार रुपया घूस लिहले बा कि बस के कंडेक्टर बनवा देई। साल भरि हो गइल। न रुपयवे देता, न नोकरिए लगवावत बा। लइका बैखरा होके घूमत बा। एही फिकिर से कई राति हम आ तोर माई जगले रहि जाईलें जा' सुग्गी भइया के मन के थाह लिहले के, उनकी ओर से समुझले के जेतने कोशिश करें, ओतने अझुरात जा। ईया कहत बाड़ी कि पचास हजार रुपया घूस दियाइल बा, ऊहो कंडेक्टर बने खातिर। एतना आराम से जिए खाए पहिरे वाला भइया! बस में कंडक्टरी क पइहें? ई सोचते सुग्गी हँसि परली। कहली– 'ईया, मानि ल भइया के नोकरी मिलि जा, त ऊ कंडक्टरी करिहें? ओतना रुपया लगा के कवनो रोजगार कइले रहतें त अबले कुछ फरिया गइल रहित।'

ईया कहली– 'ईहो बाति चलल रहे। सुनि के तहार भइया कहलें– 'हम कौनो बनिया हई कि दोकानि करे बइठीं?' सुग्गी सोचे लगली– एह पीढ़ी के गाँव के लइकन के ईहे सबसे बड़हन बेमारी बा। पढ़ले के नाँव पर खेत में गोड़ डरिहें नाहीं। नोकरी मिली नाहीं। रोजगार करिहें नाहीं। सिनेमा आ टीवी देखि–देखि के फैसन आ सवख–सिंगार के जरूरत बहुते बढ़ि गइल बा। माई–बाप करेजा काटि के कमाई आ एह लोगन के फुरमाइस पूरा करी। अपने घर के हालत पर दुखी होके सुग्गी कहि परलि, 'हमन के कम दोस नइखे। अपने घर के बिपति कम बा कि बियाह क के एगो लइकी के जिनगी और बरबाद क दिहल गइल!

सुग्गी के बाति ईया का नीक लागल। ऊहो नतिनपतोहि के दुर्गति से फिकिर में परल रहेली। कहली, 'सुग्गी, हमन से त गलती हो गइल, बाकी जबसे तूँ आइल बाड़ू, तबसे हमार जीव हरियरा गइल बा। हमरा बुझात बा कि अब एह घर के बूड़त नाइ के तुहईं पार लगइबू। एतना पढ़ल–लिखल बाड़ू, एतना सोचि–सुझि रहल बाड़ू। कुछु अइसन करऽ कि तहरी भइया–भउजी के जिनगी सुधरि जा।' सुग्गी कहली, 'ईया, हमरो ए लोग के बहुत फिकिर बा। बाकी भइया के हम कइसे का समुझाई? हमसे न बोलत बाड़े, न बोले बतियावे के कौनो मौका देत बाड़े। बतावऽ, हम का करीं? हँ भउजी के कहऽ त हम अपने साथे दिल्ली ले जाईं। अगला महीना हमार नोकरी शुरू हो जाई हॉस्टल छोड़ि के अलग मकान लेवहीं के बा। ओहिजा भउजी रहिहें त इनके पढ़ले–लिखले के कवनो इन्तजाम कइल जाई।

बोलत–बोलत सुग्गी चुपा गइली, जइसे गाड़ी के आगे काठ परि गइल होखे। ईया पूछली– 'का भइल? काहे चुपा गइलू?' सुग्गी कहली– 'भउजी के लइका होखे के नाहीं रहित त हम इनके सथवें लियवले जइतीं। इनके कवनो कोर्स करवा देतीं। साल भर बादि ई तीन चारि हजार रुपया महीना कमाए लगती। एह हाल में इनके कइसे ले जाईं? आछा, दुसरकी बात ई बा कि भइया हमरी साथे जाए दीहें?' घर की भीतर केवाड़ी के पल्ला पकड़ि के बहरा के बाति सुनत रहली भउजी। धीरे से बोलि परली– 'हम के ले चलीं दीदी। 'सुग्गी का ओह आवाज में एतना दरद सुनाइल जइसे कवनो गाइ कसाई कि हाथ से छूटे खातिर डकरति होखे।

सुग्गी के मन उमड़े लागल। का करीं कि एह घर के दसा सुधरो। भउजी के सगरी जिनगी परल बा। ढंग से बियाहे के उमिरियो नाहीं भइल बा। लरिकोर होखे वाली बाड़ी। भइया के समुझवले के कवनो जुगती लउकते नइखे। अचक्के सुग्गी के एगो राहि लउकि गइल। कहली– 'एक काम हो सकेला। हम नोकरी सुरू कऽलीं आ मकान ले लीं त भइया–भउजी दूनू जने के ले जाईं। भइयो के कवनो काम सिखवा के उनहू के नोकरी दियवाईं। बाकी ऊ मानें तब न?'

'आरे जनम भरि एही घर के लेके ढोवत रहबू कि आपनो घर बनइबू? अब पढ़ाई पूरा क लिहलू, नोकरी करे जात बाड़ू, त बियाह क के आपन घर बसावऽ।' सुग्गी चिहा के देखली कि अबहिन ले चुपचाप रहल उनके माई उनहीं से कहत बाड़ी। सुग्गी हँसि दिहली कहली– 'बियाह कइले के सवाल हमरी जिनगी में अबहिन नइखे आइल। आ एक बात अउर, तहन पाच हमरे बियाह के फिकिर जनि करऽ जा। सब जने मिलि के पहिले भइया–भउजी के जिनगी के सोचल जाव।'

सबेरे उठली सुग्गी त सबसे पहिले भउजी कि कोठरी की दुआरि प खाड़ हो के भउजी के हाँक लगवली। भउजी हड़बड़ात निकलि के पूछली– 'का भइल बहिनी!' सुग्गी कहली– 'भइल कुच्छू नाहीं। भइया राति अइलें? भउजी मूड़ी हिला के बतवली कि अइलें।

सुग्गी अगोरते रहली। भइया दतुवन क के चाह पिए बइठलें त सुग्गी आपन चाह लिहले उनकी लगहीं चलि गइली। देखते भइया गरमइलें– 'का ह?' सुग्गी कहली– 'ह त कुछ नाहीं। एतना दिन से आइल बानी। तहरा बहिन से बतियावे के फुर्सते नइखे मिलत। हम सोचनी हँ, हमहीं बतियाईं।' सुग्गी के बात सुनि के भइया अउर तरना गइलें– 'का बाति करबे? बोल!'

सुग्गी कुछ कहे ओसे पहिलहीं गम्भीर आवाज में

कहलें– 'अब तोर पढ़ाई पूरा हो गइल न? अब तें हमार बात सुन। अब दिल्ली–फिल्ली नइखे जाएके तोरा। एही लगन में तोर बियाह होई। बाऊजी आ हम एही चिन्ता में परल बानीं जा। दू तीनि गो घर–बर देखलहू बानीं जा। जल्दिए कवनो फाइनल क के दिन बार पक्का हो जाई। बियाह हो जा त कपारे पर के बोझा उतरे। जो आपन कार करु। हट इहाँ से।'

भइया आपन आखिरी फैसला सुना के सुग्गी के झारि दिहलें। भइया के तेवर देखि के सुग्गी हँसि परली। उनके हँसत देखि के भइया के देहि जरि गइल। जोर से चिघरलें– 'तोर एतना मन बढ़ि गइल बा? हाथी अइसन देहि लेके माई–बाप कि सामने एह तरे हँसबे?' सुग्गी भाई के ई रूप कब्बो नाहीं देखले रहली। भइया के रीसि बढ़ते चलि गइल। चाह के गिलास फेंकि के उठलें आ सुग्गी की कपार पर अइसन हाथ चलवलें कि जो परि गइल रहित त आँखि बहरा निकलि परल रहित, बाकी ई का भइल? चारि हाथ फरके जा के मुँहे कि भरे ढहि गइलें। ईया आ सुग्गी के माई दउरली– 'आहि दादा, लइकवा के का हो गइल? बेना ले आउ, पानी ले आउ....

सुग्गी ईया की लग्गे आके कहली– 'कुछु नाहीं भइल। अब्बे उठि जइहें। चिन्ता मति करऽ। ईया चिहा गइली– का कहत बाड़े? लइका एह तरे भहरा के गिरल बा। आ तें कहत बाड़े कि कुछ भइले नइखे? बताउ ऊ गिरल कइसे?

सुग्गी कहली– 'ऊ अपने से नाहीं गिरले। हमके मारे चलले हँ त हम अपना के बचावे खातिर एक हाथ चला दिहलीं। बस भहरा गइलें ह। अब्बे उठि जइहें।' ईया छाती पीटे लगली। सुग्गी के माई बेटा के मुँह पर पानी के छींटा मारे लगली। छन भरि में उनके बेटा उठि गइलें। पहिले धरतिए पर बइठलें। एहर–ओहर तकलें। कुछु समुझि नाही पवलें कि भइल का। तबले सुग्गी के चेहरा पर तनिको तनाव–खिंचाव नाहीं रहल। भइया की आँखि कावर तकली। कहली– 'देखऽ भइया, मारि के हमके कवनो बात नाहीं समुझा पइबऽ, एकर अन्दाज त तहरा हो गइल होई। जेठ भाई हवऽ। बइठि के ढंग से बात कइल जाव, तब्बे कुछु फरियाई। तू आ बाऊजी हमरे बियाह आ हमरी जिनगी के फिकिर छोड़ि द जा। सबसे पहिले अपनी आ भउजी की जिनगी के सोचऽ। ओहू से पहिले भउजी की पेट में आइल परान के भविष्य के बारे में सोचऽ। रीसि छोड़ऽ। बइठऽ।

ईया सुग्गी पर बहुत बिगड़ली। बेर–बेर इहे कहे– 'ते जेठ भाई पर हाथ कइसे उठवले ह? अइसने मेहरारू के मर्दमार कहल जाला। हमार नातिन होके तें अइसन कइसे हो गइले। बताउ? तें एतना पढ़ल लिखल बाड़े, एतना गुन के आगर बाड़े। एतनो नइखे जानत कि मेहरारू के लच्छन कुलच्छन का ह?'

सुग्गी कुछ नाहीं बोलली। ईया के बाँहि पकड़ि के ओहर ले गइली जहाँ पक्का ईंटा के छल्ली लागल रहे। एगो ईंटा उठा के हवा में फेकली आ दुसरका हाथ की हथोरी से का जने कइसे ओके मरली कि दू टुक्का होके गिरि गइल। ईया आँखि फारि के सुग्गी के मुँह ताके लगली।

सुग्गी कहली– 'ए देहिया के हम इसपात बना दिहले बानीं। सच्चो कहऽ तानी। भइया के हम कुछु नाहीं कइनी ह। जब ऊ हमके मारे चलले हऽ त हम आपन इहे हथवा उठाके उनके रोकि दिहलीं हँ, आ ऊ ढ़िमिला गइले हँ।' कुछ ठहरि के सुग्गी कहली– आ ईया तू ई काहें भुला जात बाड़ू कि हमरो देहि तहरिए खून से सिरिजल गइल बा।

ईया लाज से लाल हो गइली। सुग्गी कहली– 'जब हम पढ़े गइली त दिल्ली में पहिले ई बुझाइल कि आधा लोग के दीठि हमरी देहिया के जगह–जगह से छेदि रहल बा। कुछु दिन में भोथर होके सहे लगनीं। हमके पढ़ावे वाला सर लोगन में एक जने अइसन रहलें कि उनके मेहरारू गाँव में चिपरी पाथति उनके नाँव पर नरक भोगति रहे। सर एन्ने–ओन्ने मुँह मारत साँड़ अइसन हँकड़त रहें। हमसे पहिले कलास वाली एग्गो लइकी बतवलसि कि सर बिना जुठरले कवनो लइकी के ठीक से पास नाहीं होखे देलें।

'ई सर का होलें रे?' ईया पूछली।

सुग्गी बतवली– 'जइसे एहर मास्टर लोग के गुरुजी भा मुंशी जी, पंडीजी, भा मौली साहब कहल जाला ओइसहीं ओहिजा 'सर' कहल जाला। सर नाहीं कहऽ त ऊ लोग भुच्च गँवार बूझेलें। ईया, जब हमके ओह सर के ई भेद मालूम भइल त हमहूँ मने–मने ओकर उपाइ सोचि लिहनीं। सबेरे कराटे सिखावे वाला किलास में नाव लिखा लिहनीं।

ईया टोकली– 'करइत साँप सिखले?'

सुग्गी हँसली– 'नाही ईया, चीन देस में लड़ाई के एगो तरीका होला। ओह में ईहे सिखावल जाला कि कवने तरे केतना फुर्ती से झपटि के अपने दुसमन के मारल जा सकेला। हमार ट्रेनिंग केतना पक्का बा, ई त देखबे कइलू ह। छव महीना में हम एतना सीखि लिहनीं कि केहू मरद बच्चा हमरी देही पर हाथ धरे

चली, त उनके भहरा के ढहिए जाए के परी। ऊ सर एक दिन अपने घरे बोलवलें, आ जइसहीं आपन सँड़ई सुरू कइल चहलें कि एक हाथ दिहनीं। मुँहे कि भरे ढहि के गों–गों करे लगलें। उठा के सोझ कइनीं आ कहि दिहनी– 'सर हमार कवनो नोकसान होखी, त ईहे हाथ हम कलासे में भा यूनिवर्सिटिए में कहीं देखा देबि।' कहि के चलि अइनीं। उनके हिम्मति नाहीं भइल तब से कि हमार कवनो नोकसान करें। अब हमरी ओर तकतो में डेरालें।'

ईया मुँह बा के टुकुर–टुकुर ताकत रहि गइली। सुग्गी कहली, 'जइसन आपन देस आ समाज हो गइल बा ईया, ओमें औरत जात का जनमही के नाहीं चाहीं, जो जनम ले ले, त ओके ऊहे होखे के परी जवने के तू मर्दमार कहत बाड़ू।'

सुग्गी अचकचा के चुपा गइली। कहली– ईया एक बात बतावऽ? रोज–रोज जवन निखड्डू मरद लोग अपनी मेहरारू के, बहिन–बेटी के मारत पिटत रहेलें ओह लोग के 'औरतमार' कहि के काहे नाहीं गरियावल जाला? ई त जनते बाडू कि जवन मरद कुच्छू लाएक नाहीं होलें, समाज में जगह–जगह अपने ऐब के चलते मारि खात रहेले, गारी सुनत रहेले, ऊहे घरे आ के मेहरा के मरले में सबसे आगे रहेलें। तहनपाच ओह कुल्हिनि के 'औरतमार' कहि के काहें नाहीं गरियावे लू जा?' कहि के सुग्गी उदास हो गइली। बुझाइल कि रो दिहें।

ईया के काठ मारि दिहलस। सुग्गी के बात अच्छर–अच्छर साँच बा। एकरे पहिले एतना उमिरि ले उनका काहे नाहीं बुझाइल रहल ह? भक् से अँजोर हो गइल ईया के हियरा। अपनही कहि परली– 'ई कुलि विद्या के परताप ह। अपनी जगहि से उठि के सुग्गी के लग्गे गइली। उनके अँकवारी में भरि के कहली– 'काहें ते रोवति बाड़े? रोवे तोर दुसमन लोग। तें त देस–दुनिया में हमन के नाव उजियार क देबे।'

सुग्गी देखली कि भइया कपड़ा पहिरि के कहीं निकलत बाड़ें आ भउजी केवाड़ी पकड़ि के ठकुआइल खाड़ बाड़ी। माई त पथरे के मूरति बनलि बा। झपटि के सुग्गी उठली। भइया के लग्गे पहुँचि के कहली– 'तू कहीं गइले से पहिले हमार बात सुनि ल। तब जहाँ मन करी तहाँ जइहऽ।

सुग्गी के भउजी, भाई आ ईया सब देखल कि भइया चुपचाप खटिया पर बइठि गइलें। धीरे से सुग्गी के ओर ताकि के कहलें– 'कहु, का कहत बाड़े?'

सुग्गी के मुँह हसलोन हो गइल। कहली– 'पहिलकी बात त ई बा कि हम अपने साथे भउजियो के दिल्ली ले जात बानीं। उनहूँ के कराटे सिखाइबि जवने के एगो हल्लकु हाथ तू देखलऽ ह।' सुग्गी के बात खतम भइले कि पहिलहीं भीतर से भउजी के हँसी खनकलि, ईया हँसि परली, माई मुँहें से अँचरा लगा के हँसे लागलि। अउर त अउर भइयो खुलि के हँसि परलें। ओह समे सभे हँसी की हिलोर में ऊभचूभ होखे लागल।

सुग्गी कहली– 'जबसे सेयान भइलीं, तबसे भइया के रिसियइले मुँह देखे के मिलत रहल। आजु भइया खुलि के हँसत बाड़ें त केतना सुन्नर लागऽताड़े?' एक बेर फेरू सभे हँसि परल। सुग्गी कहली– 'दुसरकी बाति ई बा कि जवने भकचोन्हर से हमार बियाह कइल चाहत बाड़ऽ, ऊ हमार एक्को हाथ सहि पाई?' एक बेर फेरू सब केहू हँसी के लहरि बनि के बरे लागल। सबके जीउ हल्लुक हो गइल।

अब तिसरकी बात सुनऽ, सुग्गी कहली त सभे उनके मुँहे का ओर देखे लागल। सब सोचे लागल, का जने अब का कही। 'तहरा नोकरी करे के सवख होने त हमरा साथे चलऽ। हम तहके दिल्ली में पहिले छव महीना कवनो काम सिखवा के नोकरी दियवा देबि। भउजियो के कवनो टरेनिंग दियवाइबि। ई तहरा से ढेर रुपया कमाए लगिहें। आखिरी बतिया कहति में सुग्गी अइसन आँखि नचा दिहली कि एक बेर फेर सब केहू हँसि परल। सुग्गी कहली– 'आ गाँव नाहीं छोड़ल चाहत होखऽ, त नोकरी के विचार छोड़ि के जमि के खेती करावऽ। ट्रैक्टर ले आवऽ। खेती के बैपार समुझि के करऽ।' सुग्गी के बात पर भइया पहिली बेर एतना धेयान देत बाड़े, अइसन देखि के उनके माई आ ईया के जियरा फुला गइल। हुलसि के ईया पूछली– 'सुग्गी तें ई त बतइबे नाहीं कइले कि तोके नोकरिया कवन मिललि बा?' सुग्गी आँखि नचा के कहली– 'हम सोचले त रहनी कि अबहिन नाहीं बताईं, बाकी बता देत बानीं– हम दिल्ली पुलिस में अधिकारी हो गइल बानीं।' 'का? तें दरोगा हो गइले?' ईया चिहा गइली। सुग्गी हँसि के कहली– 'नाहीं, दरोगा लोग से ऊपर, ओह लोग के अफसर।'

पहली बेर भइया के आँखि में खुशी के आँसू छलकल। ●●

□ राप्ती चौराहा, पो० आरोग्य निकेतन, गोरखपुर।

कुनिया

अनिल ओझा 'नीरद'

जमींदार रुद्र प्रताप सिंह के चार कित्ता के हवेलीनुमा मकान अब जार–जार हो गइल बा। उनुका बाद ई उनुकर चउथकी पीढ़ी एह मकान में रहि रहल बा। मकान त ऊहे बा बाकि अब ऊ रखरखाव नइखे। अंगरेजी राज गइल, जमींदारी गइल, अब देसिला राज में ऊ बात कहाँ रहि गइल बा। ना त इहे मकान कबो बाग बगइचा से घेराइल रहत रहे। दुंआर पर हाथी–घोड़ा झूमत रहत रहले स। गाइ–बैलन से कवनो कमी ना रहत रहे। अनाज से कोठिला आ भूसा से भुसउल ठसाठस रहत रहले स।

अनाज के कमी त अबहिंओ नइखे। भूसा, भुसउल में अबहिंयों बा, लेकिन पहिले वाली बात नइखे। अब त कुछुवे बिगहा खेत रहि गइल बा, जवना के जोति बोइके रह घर के काम चलि रहल बा। दुआर पर एगो गाइ, दूगो बैल अबहिंयों बाड़े स। खेती बघारी के काम मोटा मोटी चलि रहल बा, लेकिन ई घर बड़के मालिक के घर कहा रहल बा, जइसे रुद्रप्रताप सिंह के समय में कहात रहे। एह चउथा पीढ़ी के नायक अबहियों गाँव खातिर बड़के मालिक बाड़े।

एह बड़का मालिक का घर के अगल बगल अबहिंयों कुछ परजा–पउनी बसल बाड़े, जे मालिक के काम बजावे खातिर एक गोड़ पर खड़ा बाड़े। ई बात अलग बा कि ओह लोगन का अपना बाप–दादा लेखा बनि–बनिहारी नइखे मिलि पावत, बाकि समय का हिसाब से ठीके चलि जा रहल बा। पहिले वाला समयो त ना रहि गइल।

एही में से केहू हरवाही के काम सम्हरले बा, केहू गोरूआरी के। एही लोगन के घर के मेहरारून में से कवनो गोबर–गोंइठा के काम कऽ देले, कवनो घर के मेहरारू लोगन के कहना पर बनिया किंहा से कुछ सउदा पताई ले आ देले। आ मेहरारू लोगन में बड़ले के बा। एगो बड़की मलिकाइन आ एगो उनुका सासु। एगो उनुका बेटी बिया जे गांव के मिडिल स्कूल में पढ़ेले। बेटा के अबहीं बिआहे नइखे भइल। बेटा बड़ हवे आ ऊ गांवे के मिडिल स्कूल में पढ़ेले। आ बड़का मलिकार का संगे गिरहथी के काम देखेले। ऊ हाईस्कूल के बाद पढ़ाई छोड़ि देले बाड़े।

बड़का मालिक ओइसे दू भाई हवे। छोटका मालिक के पढ़ा लिखा के वकील बना देले बाड़े। ऊ शहर में रहि के वोकालत करेले। गांवे कबो–कबो आवेले। ऊ आपन परिवार अपना सँगही राखेले। कबो कबो कुछ अनाज जरूर अपना संगे ले जाले। उनका अभी एके लइका बा, जवन शहरे में पढ़ेला।

बड़का मालिक के घर के काम करे वाली औरतन में दू गो खास औरत बाड़ी स। एगो त सुभग बो गोड़िन बाड़ी, जे सबेरे सांझि घर के चउका–बरतन सम्हारेली, आ एगो चनरिका अहिर के मतारी बाड़ी जे कुटिया–पिसिआ के काम देखेली, संगहीं बड़का मालिक के महतारी के देहिं मीसेली, तेल–तासन लगा के उनुका के नहवा–धोआ देली। बूढ़ी के बेसी समय त पूजे–पाठ में बीतेला, एसे उनुका के लेके

कवनो बेसी तितिमा नइखे। बड़की मलिकाइनि के काम दूनों बेरा खाना–पीना बनावल आ सबके खिआवल पिआवल ह, ऊ एही में बाझल रहेली। परिवार शुद्ध शाकाहारी हवे।

चनरिका का मतारी का एगो बेटियों बिया। नाँव ह कुनिया। कुनिया अभी छोट बिया, एसे मतारी के अंगुरी पकड़ले ऊहो बड़का मालिक का घरे ओकरा संगहीं आ जाले आ जबले ओकर मतारी उहाँ काम करेले, एगो कोना में चुप–चाप बइठल ओकरा के टुकुर–टुकुर ताकल करेले। बड़की मलिकाइनि का दया आ जाला त ओकरा के कुछु खाये–पीये के देली, ऊ चुपचाप खा लेले आ फेरू ओइसहीं बइठि जाले।

चनरिका के बाप दुआर पर एगो भंइसि रखले बाड़े, ऊ ओकरे सेवा में दिन भरि लागल रहेले। घासि गर्हि के ले आइल। कुटी काटल। भंइसि के खिआवल पिआवल, ओकरा के नहवावल–धोवावल, दूध दूहल, इहे उनुकर दूनों बेरा के काम ह। सबेरे के दूध बेंचि देले आ सांझि के दूध अवंटि के, ओह में जोरन डालि के चनरिका के महतारी दही जमा देली, जवना के बेंचि देली। बाद में लयनू के खरा के घीव बेंची लेली। ई ओह घर के ऊपरवार कमाई ह। चनरिका कोलकाता रहेले। ओहिजा ऊ दिहाड़ी पर मजदूरी करेले। आ जहिया काम ना मिले तहिया झाखा ढोइ के कुछु कमाई क लेले। बेर–बागर घरे कुछु पइसा भेंजि देले। चाहे जब गाँवे आवेले त एके बेरि बाप–मतारी के नांव कुनिया के मतारी पड़ि गइल बा।

बड़कियो मलिकाइनि उनुका के कुनिये के माई कहेली। ए कुनिया के माई! हेने सुनी ना। ए कुनिया के माई हई करीं ना। अपना से उमिरि में बड़ भइला के नाते बड़की मलिकाइनि उनुका के आदरे दे के बोलेली। जाति भेद का चलते बड़–छोट के भेद ना करसु। बड़की मलिकाइनि सुभाव के बड़ा मीठ हई। समय कुछ आगे बढ़ल। एने कुनिया सेयान भइलि, ओने ओकरा बाप के अर्थी उठल। घर में कोहराम मचि गइल। खबर सुनि के कोलकाता से चनरिका अइले। बाप के किरिया–करम भइल। मतारी के टूटल देखि के चनरिका कुछ दिन गांवही रुके फैसला कइले। अब भंइसि के देखभाल ऊ करे लगले। घर कुछ सलसंत भइल। साल भरि बाद उनुकर बिआह नधाइल, बिआह भइल, कुनिया उतरलि। कुछु दिन ओह में अझुरइले, बाकी फेर उनुका कोलकाता इयादि आवे लागल। भंइसि के भार अपना मेहरारू के संउपि के ऊ फेर कोलकाता के राह धइले, मेहरारू से ई कहि के कि बीच–बीच में त आवते जात रहबि, ते माई संगे मिलि के रहिहे, तोरा कवनो बात के तकलीफ ना होई, हम बानी नूं। कुनिया के धेयान रखिहे। अब सेयान हो तिया।

कुनिया के भउजाई के अपना नइहर से ई आदति त रहबे कइल कि कइसे घासि गर्हल जाला। कइसे माल गोरू सम्हारल जाला से ओकरा कवनो परेशानी ना भइल। सब ओकर कइल धइल रहल, से नीके सम्हारि लीहिलसि। ओकरा बिरादरी में नया–नोचर कुनिया गुते कवनो लजाये भा पर्दा करे के बात त रहे ना, से फेटा मारि के घर में दुआर पर आइलि आ आपन गिरहथी सम्हारि लिहलसि। भोरे उठि के घासि गढ़े जाये लागलि। संगे सहारा खातिर आ अपने लेखा नइहरे में लइकाइये से, घर के काम सिखा देबे खातिर कुनियों के अपना संगे ले जाये लागलि। ननद–भउजाई के जोड़ी जमि गइल।

कुनिया अब सेयान से जवान भइलि। देहिं फाटल। जवानी जइसे भीतर से अंगड़ाई ले के फूटल होखे, अइसे पोर–पोर लहरा उठल। गजब के नाक–नक्शा निकललसि। देहिं के अंग–अंग खिलि उठल। जेहि देखल ऊहे दांते अंगुरी काटल। हई देख ना, अहिरिन के बेटी त ई लागते नइखे।

लेकिन एह कुल्हि से बेपरवाह कुनिया अपना काम में व्यस्त रहे। भउजाई का संगे ओसहीं कुल्हि काम करत रहे। बाकि ओकरा कबो कबो बुझाउ जरूर कि गांव के कुछु आवारा किसिम के लइका सब ओकरा के आँखि बचा के देखत रहत बाड़े स, दुआर का सामने से जात कबो–कबो सीटी बजावत बाड़े सं। आ कबो–कबो त राह चलत में बगल से फिल्मी गाना गावत निकलि जात बाड़े स। कबो–कबो ओकरा अइसनो बुझाउ कि जब ऊ घासि के जात बिया तबो लइका सब नजर बचा के ओकरे के देखत बाड़े स। एक दिन त अइसन भइल कि बहुत देर से घासि गर्ह्त खा एगो लइका बार–बार ओकरा लगहीं घासि गर्हे आ जाव आ चाहे कि ओकरा से ओकरा देहिं ठेकि जाउ, चाहें हाथ छुआ जाउ। बाकि कुनिया करेजा के टाँठ आ चरित्र के पक्का रहे, से जेही बोझा उठा के चललि आ ऊ लइका राम ओकरा के देखि के टिटकारी मरले, आ कुछु कुबोली बोलले कि तले कुनिया भरि के अइसन ना अपना खुरुपी वाला हाथ चलवलसि कि उनुकर एगो हाथ पूरा खूने खून हो गइल।

बड़की मलिकाइनि सुनली त ओकरा के बोला के

डँटली, कहली कि तें लइकी जाति हवे, तोरा अतना ढ़ीठ ना होवे के चाहीं। दूगो थपरा चला दिहल तबो ठीक बा, बाकी खुरूपी, कबो ना। केस फउजदारी हो जाई, बन्हा के थाना चलि जइबे, तब का होई? सिपाहिये, दरोगा, मरकिलवना कवन दूध के धोवल बइठल बाड़ेस? जो अब से सम्हारि के रहु। मतारियो डंटलसि, समझवलसि, बाकि भउजाई त सँगही रहे, कुल्हि देखले रहे, कहलसि कि ठीक भइल बा जवन भइल बा मुँह झंउँसू अपना के फिल्मी हीरो बूझत रहले हा।

चनरिका घरे अइले आ कुनिया के देखले त ऊहो सनाका खा गइले। एक दिन अपना माई से सलहन्ते कहले– माई! अब कुनिया के बिआह हो जाये के चाहीं।

त खोज लोग लइका, तहरे लोग का नू खोजे के बा। माई कहली। एगो लइका त बा हमरा नजर में रे। मनोहर नांव ह। हमरे संगे मजूरा के काम करेला। हमनी एके संगे, एके बासा में पांस सात आदिमी रहींले जा। ऊहो ओही में रहेला। एहिजे भरतपुरा के रहे वाला ह। अपने बिरादरी के बा उमिरि बीस–पच्चीस के होई। बाप ओकरा गांव ही में हरवाही करेले। अपनो एक बिगहा खेत बा, ओकरो के देखेले। एके लइका बा। सम्बन्ध बाउर त ना कहाई।

त चलावऽ बात। बाते चलवला पर नू पता चली कि मन में का बा। बिआह करी लोग कि ना करी लोग। महतारी ओसहीं जबाब दिहली।

बात चलल। सउदा पटि गइल। बिआह के दिन तारिख धरा गइल। लेकिन अब सवाल उठल कि बिआह होखे त कइसे। हाथ त एकदम खाली बा, कुनिया के माई के। जवन पूंजी पाटा रहे तवना में से कुछ कुनिया के बाप के किरिया–काम में लागल, बांचल खुचल चनरिका का बिआह में। एने छव महीना से भंइसि बिसुखल बिया। दूध–दही, माठा–घीव कुछुओं हाथे नइखे लागत, पूंजी आओ त कहाँ से। एगो चनरिका के कमाई कतना रसी–बसी?

कुनिया, गाँव में शायद पहिलकी लइकी रहे, जवना के बिआह, डोला काढ़ि के करे के नउबत आइल। लेकिन एहू मोका पर फेर बड़किए मलिकाइनि भगवान बनि के खड़ा भइली। चुपे चुपे अनाज–पानी से त मदत कइबे कइली, कुनिया खातिर बिआह के साड़ी, साया, बेलाउज बक्सा कुल्हि दिहली, ऊहो बिअहुती। कहली जे हम जानत नइखीं, हमरा बेटा के बिआह में दूनो मतारी–बेटी कतना खटली स। एको पइसा भा कवनो नेगो ना लिहली स। कहली स कि बबुआ हमनी के बेटा–भाई ना हवे मलकिनी, जे हमनी का नेग लेबि जा। जाई बबुआ का जब बबुआ होइहें त जे मन करी दे देबि, हमनी का ना ना करबि जा। त आजु त कुनिया हमरा बेटिये लेखा नू बिया, से हम जवन देत बानी अपना बेटी के दे तानी। आ एह तरी कुनिया के बिआह, मोटा–मोटी निमने से पार लागि गइल। कुनिया विदा होके अपना ससुरा चलि गइलि।

मनोहर लेकिन अपना मेहरारू के गाँवे ना छोड़ले। ओकरा के अपना संगहीं कोलकाता लेले गइले। चनरिका जब ई देखले त माथा पीटि लिहले। अब कइसे राखसु ओकरा के एह मरदाना समाज के बीच, लेकिन खैर, कवनो तरह से भाग दौड़ कइके हबड़ा में ओह दूनों के एगो खोला बाड़ी भाड़ा पर दियवा दिहले। दूनो आपन गिरहथी ओही में बसा लिहले।

शुरूवाती दौर में थोड़ा रोमांस भइल। थोड़ा घुमाई–फिराई भइल। कुनिया हबड़ा के पुल देखलसि, विक्टोरिया मैदान देखलसि, धरमतल्ला देखलसि, विक्टोरिया मेमोरियल देखलसि, काली घाट जाके काली माई के दरसन कइलसि, आ धीरे धीरे अपना गिरहथी में रमि गइलि।

दूनो के वैवाहिक जीवन शुरू में ठीके चलल। एही बीचे मनोहर के नोकरी एगो प्लास्टिक के कारखाना में लागि गइल। मजदूरिये करत करत ई संयोग जुटि गइल रहे। ड्यूटी कड़ा ना रहे, बाकी तनख्वाह ठीक रहे। मनोहर मन लगा के काम करे लगले।

एही बीच कुनिया के गोड़ भारी हो गइल। घर में एगो अउर खुशी के माहौल। एक साल बाद ओकरा एगो सुन्दर बेटा पैदा भइल। घर में दोहरी खुशी आइल। बाड़ी भर के मिठाई बंटाइल। मिठाई त करखानों में बँटाइल, बाकी उहाँ खाली मिठाई से काम ना चलल। कुल्हि साथी मजदूर मिलि के दारू के बोतल के मांग कइले स, जे मनोहर का देबे के परल, बस एहिजे से दूध में खटाई पड़ि गइल। सांझि खा मजदूर अपने त पिअबे कइले स, जोर जबरदस्ती मनोहरो के पिया देले स।

सांझि खा मतवाला बनल घर में घुसले मनोहर। कुनिया त देखी के घबरा गइलि। पुछलसि– का भइल जी? तबीयत खराब बा का?

हरे हट साली! तें का जनबे? ई दारू ह दारू। तोरा बेटा भइला का खुशी में स्टाफ सब दारू मँगले स, दे दिहनी आ तीन हमहूँ पी लिहनी, ई ओकरे नशा ह। कवनो बेमारी ओमारी ना ह। ओही तरी नशा

में लड़खड़ात, जबाब दिहले मनोहर, आ चउकी पर ढिमिला गइले।

सुनि के कुनिया त फाटि पड़लि। दूनो मरदे–मेहरारू में जमि के तकरार हो गइल। ऊ तनी जोर से चिचिआइ के बोललि– त रउआ काहें पिअनी हां जी? जानत नइखीं, ई नीमन चीज ना ह।

अतना ओकर कहल रहे कि तड़ाक! मनोहर उठि के ओकरा गाल पर एक थप्पड़ जड़ि दिहले। तकरार हो गइल। ऊ तनी जोर से चिचिआइ के बोललि– त रउआ....।

घर में एकदम सन्नाटा हो गइल। कुनिया आपन गाल पकड़ि के, ओहि, कहि के एक तरह से जड़ हो गइलि, आ मनोहर फेर चउकी पर ढिमिलाइ गइले।

ओह राति घर में केहू खाना ना खाइल। कुनिया अपना बेटा के लेके भुइंया सूतलि आ मनोहर ओही तरी कपड़ा लत्ता पहिनलहीं चउकी पर पटाइल रहि गइले।

ऊ दिन आ आजु के दिन यानी कुनिया जहिया घर छोड़लसि, अब ई रोज के आदति बनि गइल मनोहर के। रोज पी के आइल। घर में उल्टा–सीधा बोलल, मेहरारू से झगड़ा कइल, खाना ना खाइल आ कबों त खने के बहाना बना के मेहरारू के धुनाई क दीहल, कि हरामजादी आजु हई नइखे नीमन बनवले त आजु हे में नून नइखे, त काल्हू मरिचा बेसी हो गइल बा, यानी ना ना रकम के बहाना, आ मेहरारू के धुनाई। कबों कबों त लात–घूसा तक चला देसु आ कुनिया जमीनि में पटा जाउ चुपचाप, बिना कुछु बोलले, भीतरे डंहकत, कलपत, रोवत। कबो कबो लड़बो करे, लेकिन नतीजा ऊहे मारपीट। अब का करो ऊ ओकरा पर हाथ उठा ना सकत रहे, आखिर लोग का कहीं? बाड़ी में के लोग कुछ बीच बचाव कइलो चाहे, बाकी बाद में ई सोचि के कि दोसरा के बीच में का पड़े के बा, पटा जाउ।

लेकिन जब बरदास के बाहर हो गइल त एक दिन अतवार के दिने बाड़ी में मीटिंग बठइल, एही कुल्हि के लेके। बाड़ी के लोग मनोहर से साफ कहि दीहल कि भाई देख, ई शरीफ लोगन के रहे के बाड़ी ह, तहरा अगर रोज इहे कुल्हि करे के बा त भाई तू अपना खातिर दोसर घर–बाड़ी खोजि ल। हमनी के बरदास के बाहर हो रहल बा। तोहरा के देखि के दोसरो पर असर पड़ि सकेला।

एह चेतावनी के कुछ असर भइल। कुछ दिन तक मनोहर ठीक रहले। ऊहे सबेरे टाइम से ड्यूटी जाना, टाइम से आना। दारू–शराब सब बंद। बुझाइल जे अब मनोहर सुधरि गइले। बाकि ऊ काहें के। कुकुर के पोंछि कबो सोझ भइल बा, जे अब हो जाई। फेर महीना दू महीना बाद ऊहे हाल। फेर बीच में कुछ दिन खातिर बुझाइ जे सुधरले कि फेर महिना भर बाद उहे हाल। कुनिया के बरदास के बाहर हो गइल रहे अब। बुझात रहे कि महमण्ड फाटि जाई। कुनिया कइ बेरी बीच में सोचलसि कि अपना भइया के बोला के सब बात बताई। फेर सोचलिस कि आखिर केकरा से बोलवाईं। ऊ कोलकत्ता में हम हबड़ा में। के हमार बा इहवां अइसन बा जे उनुका के हमरा खातिर बोला दी। चनरिका त ओकरा बेटा के जनम पर आइल रहले, तब ऊ ठीके रहे, का कहे सुने के रहे। भगिना के हाथ में सइगो रुपया आ ओकरा के एगो कपड़ा दे के चलि गइल रहले। अब हम उनुका के कहंवाँ खोली, आ कइसे आपन दुखड़ा सुनाई? दिन में ऊ काम पर रहत होइहें आ राति खा हम जा नइखी सकत, त फेर कइसे भेंट होई?

ऊहे दुपहरिया से कुछ बेसी बेरा भइल होई। कुनिया अपना घर में चउकी पर मुँहकुड़िए पटाइल कुछ सोचत रहे। ओकर बेटा, जवन अब करीब एक साल से कुछ बेसिये के भइल होई, ओही चउकी पर एक ओरी बइठल कुछ टूटल–फूटल खेलवाड़ आ गिलास–कटोरी के पीटि पीटि के खेलत रहे। सोचत–सोचत अचानक ओकरा मन में जाने का आइल कि ऊ उठि के बइठि गइलि। एक छन खातिर अपना बेटा के देखलसि, तनी मुसुकाइलि, आ चउकी से उतरि के खाड़ हो गइलि। एक छन कुछ सोचलसि, फेर बेटा के गोदी में उठवलसि, ओकर दूगो कपड़ा आ आपन एगो साड़ी एगो झोरा में धइलसि, ओकर दूध पीये वाला बोतल भरि के ओही में डललसि आ घर के केवाड़ी में बाहर से सिकड़ी चढ़ा के निकलि गइलि। रोड पर से रेक्सा कइलसि, हबड़ा स्टेशन पहुँचलि, लोगन से पूछि के टिकट कटवलसि आ पूछते पूछत जाइ के बक्सर के गाड़ी में बइठि गइलि। घर में जवन खरची के पइसा रहे ओकरा आंचर के खूंटा में बान्हि लेले रहे।

सबेरे सबेरे के बेरा रहे, कुनिया के माई दुआरे पर बइठलि माठा महति रहे, तले त गोदी में लइका लेले, ध ाप–धप करत कुनिया ओकरा सोझा खड़ा। ओकर मतारी देखलसि त अवकां कुनिया आ अकेले। संगे ना दमाद, ना भाई। अभीं ऊ कुछ पूछो तले त कुनिया बइठि के ओकरा गरदनि में हाथ डालि के लागलि जार–जार

रोवे। अरे माई रे माई। अब हम ओह नतिया का संगे ना रहबि रे माई! मरकिलवना, रोज दारू पी के हमरा के मारता रे माई! कबो कहता कि तोरा खाएक बनावे नइखे आवत, कबो कह ता कि तोर–चाल चलन खराब बा, ते दिन में बाड़ी के लोगन से आँखि मटक्का खेल तारे। हमरा के रंडी बेसवा कहता... आ अउरी जाने का, का कहत, मतारी के गरदनि से लपिटाइले कुनिया रोवत चलि जा रहल बिया।

ओकर भउजाई अचानक केहू के रोवाई सुनलसि त घर में से निकलि के आइलि आ कुनिया के चीन्हि के मतारी–बेटी के अलग कइलसि आ कुनिया के घर में ले गइलि। पीछे–पीछे मतारियो गइलि आ अब जा के अपना बेटी के ठीक से देखलसि। सांचो त, ई ऊ कुनिया त ना ह जवन एहिजा से विदा हो के गइल रहे। कइसन हाल क देले बा नतिया के बेटा रे हमरा धीया के?

कुनिया के बेटा जवन अब अपना मामी के गोदी में रहे आ अपना मतारी के रोवल देखि के जोर जोर से रोवत रहे, कुनिया के मतारी ओकरा के बहलावे के गरज में अपना गोदी में लीहल चहलसि लेकिन ऊ ना आइल आ अपना माई का गोदी में जाये खातिर अउरी जोर जोर से रोवे लागल। कुनिया ओकरा के गोदी में लेके चुप करवलसि। अब मतारी, बेटी आ भउजाई एक तरह से शान्त आ स्तब्ध रहे।

एक दिन बाद कुनिया आपन कुल्हि राम कहानी अपना भउजाई आ महतारी के सुनवलसि त सुनि के भउजाई अपना ननदोई के खूब गरियवलसि आ महतारियो अपना दमाद के एको करम बाकी ना छोड़लसि। ओने बड़की मलिकाइनी सुनली त ऊ अलगे परेशान भइली। कुनिया के अपना घरे बोला के बातन के मरहम लगवली। कहली कि तें तनिको जनि घबड़इहे बेटी, तोरा के केहू सहारा ना दी त हम देबि। देखऽ तानी कि कवना के बेंवत बा कि तोरा के जबरदस्ती लिया जाता। थाना–पुलिस बीच में परी त हम ओकरो से सलटि लेबि। मलिकार अभी जीयतारे, तें तनिको चिन्ता मति करिहें।

मलिकाइनि समझवली, महतारी समझवलसि, भउजाई समझवलि, बाकि ऊ केहू से एक शब्द ना बोललि। मने में कुछु गुनत रहे जइसे ओकरा मन में आपन बदला लेबे के सोचावट चलत रहे शायद। अब ओकर लइका सुरक्षित जगह पर पहुँचि गइल बा। अब ओकरा कवनो चिन्ता नइखे। ओकर जवन होई तवना के ऊ भुगति लीही, बाकी छोड़ी ना ओह पापी के।

दुइये तीनि दिन बाद कुनिया फेर एहिजो से नापाता हो गइलि। अपना बेटा के लेकिन एहिजे छोड़ि गइलि। एक दिन पहिलहीं अपना माई से सइगो रुपया मंगले रहे। माई मोहा के दे देले रही। लेकिन केहू के ई शंका कहा रहे कि ओकरा मन में का चलि रहल बा? दिन भरि ओकर खोज भइल बाकी कहीं पता ना। लइका डहंकि डहंकि के माई–माई कहि के रोवत रहे। ओकरा के चुप करावे में सभे हलकान रहे।

दू दिन बीति गइल, कुनिया के कहीं पता ना। कहाँ जा सकेले भला? कहीं फेर कलकते त ना नूं चलि गइलि? इहो शंका होखे मन में सभका। लेकिन बिना बतवले, आल्हर लइका छोड़ि के ऊ जाई कइसे ओहिजा, एहू प्रश्न के कवनो माकूल जवाब ना मिलत रहे। बड़का मलिकार अपना बल पर खोजवावत रहले। थाना में खबर क देले रहले। एगो दरोगा आ सिपाही आके सभकर बयान ले गइल रहे, बाकी कहीं से कवनो थाह ना लागत रहे।

हारि–पाछि के चनरिका के चिट्ठी लिखवावल गइल आ उनुका जबाब के इन्तजार होखे लागल, आ जहिया उनुकर जबाब आइल तहिया सभकर मुँह बवा गइल। लीखल रहे– 'कुनिया, पंहँसुल से लाद फारि के अपना मरद के मुआ देले बीया। ऊ अब जेल में बीआ। हम भेंट करे गइल रहनी, हमरा से कुछु बोललि ना, खाली खड़ा हमार मुँह ताकत रोवत रहे, जब भेंट के टाइम खतम भइला पर जाये लगनी त तनी रुकि के अतने कहलसि कि– 'भइया! तहार भगिना तोहरा घरे बा ओकर खेयाल रखिहऽ।

समाचार सुनि के कुनिया के माई कपार पीटि लिहलसि ओकर भोंकार फूटि गइल आ मुँह से अतने निकलल– हाय रे कुनिया! ई का कइले बबुनी....!!

••

❑ 28/4, भैरवदत्ता लेन, नन्दी बगान सलकिया, हाबड़ा

'' पगलो आजी ''

डा0 सुमन सिंह

ओह दिने गाँव के प्राथमिक इस्कूल में कवनों बरात रुकल रहल।खूब चहल–पहल रहल। हमहन के घर के समनवे वाला खेत में तम्बू गड़ाइल रहल अउर बराती लोगन क खूब स्वागत –सत्कार होत रहल। लाउडस्पीकर पर 'हाँथे में मेहँदी, माँगे सेनुर , बरबाद कजरवा हो गइल हो...।' गाना बजत रहल। ओहर समियाना में जेतने किसिम क गाना बजे, एहर घर में आजी ओतने किसिम क गारी तजबीज के बाबा के आवभगत में लगल रहलीं। हम ओह समय कक्षा तीन में पढ़त रहलीं। न त गाना क महातम समझ में आवे न त गारी क। बस एतना जानत रहलीं कि कवनों न कवनों गारी बाबा के कपारे चढ़ी आ फिर उहो खुनुस में आजी के कुल्ह आकी–बाकी पूरा करे के धमकी देत, गोजी लहरावत ,धोती फटकारत भरि–भरि गाल गरिआवत चल दीहन, कब्बो खेत ओरी त कब्बो सीवान ओरी। उनके जाते आजी बुदबुदात –खदबदात, दाल –भात रीन्हे लगिहन। बाबा –आजी क कलह अउर सुलह दिनरात देखे क हमहन क आदत रहल बाकिर ओह दिने त अति हो गइल रहे। आजी क गारी रुकहीं क नाम ना लेत रहे अउर बाबा दुआरे बइठल इनके हिकभर सरापत रहलन। हम एह फेर में रहलीं कि एह झगड़ा–झंझट के फेर में बाबा के संगे समियाना में नाच देखे जाए के मिली कि ना। बड़ा जिदिअइले,धूर में लोट–लोट के रोवले के बाद त बाबा मानल रहलन बाकिर अब इनहन लोगन के झगरा–झंझट में कुल्ह मेहनत पर पानी पड़ले नियन लगत रहल। नउवा चच्चा हर कार–परोजन क बोलावा दुआरे आके दे जात रहलन।हर बोलावा पर हम कब्बो बाबा के पँजरे दऊड़ के जायीं कब्बो आजी के लग्गे, बाकिर एह लोगन में गारी –गरगरहट भइले के बाद अइसन फुल्ला–फुल्ली हो गइल रहल कि 'हूँ–टूँ' ले बन हो गइल रहल। सांझी ले केहू –केहू से ना बोललस त हमहीं आजी के मनावे गइलीं––

'ए आजी हो! बिआह देखे ना चलबू का हो..ताई जी अउर ... ?'' बड़ा डेरात –डेरात अबहीं कंठ से एतने निकलल रहल कि आजी खुनुसन मारे के दउड़ा लिहलीं।

'भगबी कि ना इहाँ से ..बियाह देखे जाए के ह इनके...अइलीं ह इहाँ नेवता –हँकारी करे।कब्बे ले त एही ताक में लगल हउवे ऊ निस्तनिया कि हम एहर बियाह देखे जायीं आ एके पतुरियन क नाच देखे के मिले, कुल्ह पेट काट –काट के संचल –धइल कमाई लुटावे के मिले।अउर तू जवन बब्बा जी (बब्बा जी' के मुँह चमकावत–बिरावत अउर हाथ नचावत उचरलीं) के कान्ही पर चढ़ि के नाच देखे जाए खातिर बेकल हई न त आवे दे तोरे माई–बाप के ...कहीला न कि ..अपने त अपने ई बित्ता भर के लइकियो के नासत ह निस्तनिया।' आजी से माई–बाप क नाँव सुनते हमके अइसन कँपकपी छूटल कि चललीं भाग। माई–बाप के कोप से अबहीं तक त इहे लोग बचावत आइल रहल । छोट–बड़ भूल चूक ढाँपत–तोपत

आइल रहल । माई–बाबू के घरे ना रहले के चलते ही त नाच देखे क सुखद संयोग बनल रहल ।इनहन लोगन क रार–तकरार देख के त अब हमके तनिको आस ना रहल कि नाच देखे जाए के मिली।दुवार के समनहीं समियाना भइले प त मोका मिलल रहल नाच देखे जाए क । एसे पहिले लइकी होइले गुने कहीं मेला–हाट,बर–बरात जइहीं के ना मिले।पिताजी एक ले खुनुसाह।कहीं अड़ोस–पड़ोस में खेलतो धरा जाईं त अइसन डाँटें कि हमार होस–हवास गुम हो जाय।

आजी क डाँट –फटकार सुन के हम चुपचाप दुआरे भाग आइल रहलीं आ लाउडस्पीकर पर बजत गानन के सुन के मन मनावत रहलीं।नाच देखे जाए क अब कवनों आस ना रहे तब्बो रहि –रहि के काली माई से इहे मनाईं कि हमार आजी माई मान जायँ ,की त बाबे खुनुसइले सही बाकिर नाच देखे चल दें।बाबा से पहिले आजिए के बियाह देखे जाए के पड़ल। टोला –मोहल्ला क गोतिनी दयादिन अइलीं आ आजी पहिन –ओढ़ के तइयार होके निकल गइलीं ,जाते जात हमरो के नयका फराक अउर चप्पल पहिना के धिरावत गइलीं–– देख ! जदि इ बुढ़वा पइसा रूपया लुटाई त हमके बतइहे। ओइसे त कुल बकसा–कोठारी ताला –कुण्डी दे आइल हईं बाकिर हऊ खुद्दिया बनियवा ..महपतरा एकर संगी न है, रिन करजा देवे में एक छन ना गंवाई.. हमहीं न जानत हईं कि परसाल क रीन कइसे भराइल रहल...।' आजी पता ना अउरी का – का बरबरात रहलीं , हमके कुछ ना सुनात रहल ..बस इहे लगे कि केतना जल्दी समियाना में पहुँचीं आ नाच देखे के मिले।आजी के गइले के बाद बाबा सफेद कड़कड़ धोती –कुरता पहिन के तइयार भइलन आ हम उनकर उंगली थमले कुदत–फानत खूब सुन्नर सजल समियाना में पहुँचलीं। जगमग –जगमग करत दूधिया रोशनी में रंग–बिरंगा मंच सजल रहे। ओप्पर सात जनी नाचत रहलीं। गाना क एक लाइन अबहियों ले इयाद ह–– सात सहेलियाँ खड़ी –खड़ी, गाना सुनावें घड़ी–घड़ी।' कब्बो हम उनकर गाना सुनीं त कब्बो बेसुध होके उनकर बनाव–सिंगार देखीं। एक गाना खतम होवे त दोसर शुरू हो जाय अउर जब दुसरका शुरू होवे त कुछ नाचेवाली परदा के पीछे आके सुस्ताएं अउर अपने चेहरा पर कुछ सफेद रंग क लेप लगावें सऽ। हमहूँ एकाध बार एह उम्मीद में जायीं कि हमरो मुखमण्डल पर गोर करे वाला पाउडर केहू पोत देत बाकिर केहू हमरे ओरी देखबो न करे सब अपनही सजे –धजे में लगल रहे।

कुछ देर त नाच देखे में मन लगल बाकिर तनिके देर में इ देख के मन दुखित होवे लगल कि गाँवे क कुल बाबा –चच्चा लोग नचनियन प खूब जम के पइसा–रूपया लुटावत हउवन । ढेर दुःख इ देख के होत रहल कि हमरो बाबा जे दिन–दिन भर ररले प दस पइसा टाफी खाये के देत रहलन ऊ नाचेवालिन के रुपया प रुपया लुटावत हउवन।ई कुल देख के मारे जलन से हम रोवे –जिदिआए लगलीं कि– घरे चला.... चला नाही त आजी के बता देब कि तू केतना –केतना पइसा लुटवला ह।' बाबा कुछ देर ले त हमार रोवल गावल बरदास्त कइलन बाकिर जब बिलखल असह्य होवे लगल त दू–चार चटकन जड़ दिहलन। बाबा क दुलरुई रहलीं हम अउर कब्बो अइसन जबर झापड़ ना खइले रहलीं। जइसे –जइसे एक के बाद एक झापड़ पड़त जाए ओइसे –ओइसे हमरे रोवाई क सुर ऊँचा होत जात रहे। अबहीं हमार रोहा–रोहट चलते रहल कि समियाना में हड़कम्प मच गइल। जेके जहाँ से दवर मिलल उंहवें से भाग निकलल। एह भागा दौड़ी में बाबा न जाने कहाँ चल गइलन। नचनिया–गवनिया लोग मंच के पीछे लुका गइलन। भगदड़ में भागत –परात हमके इहे देखाइल कि पगली आजी जे हमरे आजी क सखी रहलीं दुनू हाथ से मोटका डण्डा भाँजत मरद लोग के मारत –दहाड़त एकदम रणचंडी बन गइल रहलीं। ऊ हमरे ओरी दउड़ल अवते रहलीं कि केहू हमके गोदी में उठवलस अउर मंच के पीछे अन्हरिया वाले हिस्सा में आके लुका गइल। बाद में जब चारो ओर शांति छा गइल त हमके गोदी में लेके ऊ बहरे अइलीं। पगलो आजी से हमार जान बचावे वाली ऊ उहे नचनिया रहलीं जे मंच पर सबसे आगे खड़ी होके गावत रहलिन .. सात सहेलियाँ खड़ी–खड़ी.....। हम उनकर उपकार एतरे चुकवलीं कि घरे जाके बाबा क पइसा लुटावे वाला बात आजी से ना बतवलीं।

ओह दिन के बाद से पगलो आजी मय टोला –महल्ला मशहूर हो गइल रहलीं। हमार आजी त उनकर बखान करत ना थकें कि...' सब हमरे सखी के पागल –पागल कह के लो–लो कइले रहेला न , देखा लोग जवने नीच–पातकिन (बाबा ओरी देख के) के बड़–बड़ जाना सुधार ना पवलन उनके छनभर में हमार सखी क डंटा सुधार दिहलस। ओह सुधार कार्य के बाद जब –जब पगलो आजी घरे आवें त हम डर के मारे लुका जाईं। कक्षा तीन के बाद गाँव

छूट गइल।पहिले गरमी के छुट्टी में फिर बाद में तीज त्यौहार,शादी–बियाह तक गाँवे आइल–गइल सिमट के रह गइल।

एना पारी जब भाई के तिलक में गाँवे गइल रहलीं त पगलो आजी मिले –भेंटे आइल रहलीं।कुल्ह हाल –समाचार भइले के बाद हम पुछलीं कि –'ए आजी ! ओह दिनवा क बतिया इयाद ह जब तू बरतिया में घुस के सबके ठोंकले –बजवले रहलू ...।' जबाब में आजी ठहाका मार के हँसत कहलीं ...'बाची हो ! नसेड़ी–भंगेड़ी ,पागल–छीतर अदमिन के होस –हवास में ले आवे खातिर केहू न केहू के त पागल बनही के न पड़ेला, बन गइलीं...आजो सब पागल–पागल कहेला त कब्बो हँस के चुप लगा जाइला त कब्बो अन्हेरहूँ ध ाउरा लिहीलाँ।

–'त का कब्बो तोहके कवनों दिमागी बेमारी ना रहल ?'हम झिझकत –लजात पुछलीं

–'अरे भक्क! जइतू रानी.....अइसन कुल बेमारी रहत त महल–दुमहला तनात। बेटी –बेटा अपने–अपने घरे राज रजतन।'

दुनू सखी, माने हमार आजी अउर पगलो आजी दुनू जनी हँसत–बिहँसत रहलीं अउर हम बाउर जस पगलो आजी के भाव –भंगिमा में ऊ पगली तलाशत रहलीं जवन सैकड़न के भीड़ में अक्केले दम पहुँच के हड़कम्प मचा दिहले रहल।पगलो आजी उहे हमार आजी क दुलारी सखी रहलीं जिनके एह कांड से पहिले दुल्हिन आजी कहल जात रहल अउर जिनके शील–संकोच अउर नाक के नीचे तक के घुँघुट क उदाहरन हर नइकी पतोह के दीहल जात रहल। ••

❑ एस–8/108, आर–1, डी आइ जी कॉलोनी,
खजुरी, वाराणसी–221002

बिटिया पढ़ाई!

हीरालाल 'हीरा'

फुलवा पतइया के, राखींले जोगाइ के
देखीं मति बेटा-बेटी, दुनो अलगाइ के।

उनुका के दूध-भात, हमरा के छूँछे
बेटी गुने हमरा के, केहू नाहि पूछे
केहू नाहीं पकड़ेला, हमके धधाइ के....।

देवता बनाइब हम, गढ़ि के पखान के
तनकी सा ढील दीहीं हमरा उड़ान के
देखीं तनी हमरो, कमाल अजमाइ के....।

रेप नाहीं लागे देबि, कबो रउवा मान के
जिउवो ले अधिका, जोगाइबि अभिमान के
बान्ही तनी हमरा के, पगरी बनाइ के....।

जुग बदलाव के बा, सोचीं आ बिचारीं
गलत रहनिया के, अबो से सुधारीं
बिटिया बचाईं आ, पढ़ाईं अगराइ के....।
देखीं मत बेटा-बेटी दूनों अलगाइ के। ••

❑ बिल्लापुर, बलिया, उ० प्र०

दू गो गीत

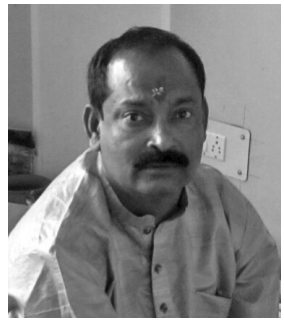

✍ गुरूविन्द्र सिंह

(एक)

अझुरा में परल मोरी
चइत के दँवरिया
सनन-सनन बहे
पुरुआ बयरिया।

खेतवा के लछिमी रखइली
खरिहानी
रहि-रहि उपटेला
आन्ही अउर पानी
जब-तब जिउवा
डेरावेले बदरिया।
सनन-सनन बहे...

मुठिया भ अन्जा न
घरवा में आइल
असरे प बिटिया के
गवना धराइल
किनलीं बेसहलीं ना
हटिया-बजरिया।
सनन-सनन बहे...

ईजति के डर-लाजे
जीउ घबराइल
हीत-नात अबहीं ले
पूछहूँ न आइल
निनिया उचाट देले
चिन्ता-फिकिरिया।
सनन-सनन बहे...

(दू)

अपुसे के रार में
हेराइ गइल बखरा
टुकी-टुकी घर-बार
हाय रे बएखरा!

देसा-देसी घूमि सब
शहरे पराइल
गाँव के पिरितिया
दुकहवाँ भुलाइल
गाँव ना भइल
भइल ओझा जी के टपरा!

घर क इजतिया क
अस छिछालेदर
सुपवा के पिटला से
भागे ना दलिद्दर
खेलऽ ताटे दुखिया
कि भाँजऽता पएँतरा!

गँउँवाँ में जाइ
सुरताल बइठवनी
कुछ तूरि फेंकनी
आ कुछ के हटवनी
तवनो प केतना
देखावे लोग नखरा।
हाय रे बाएखरा ! ••

निबन्ध

दन्तोपाख्यानम्

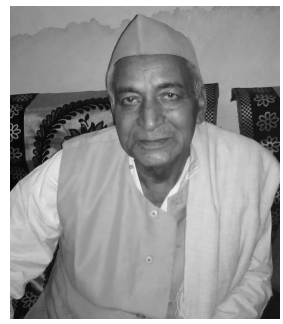

प्रो. नन्दकिशोर तिवारी

हमनी के देह में, कुल्ही अंगन के आपन उपयोगिता बा। कवनो अंग अपना महत्व में तनिको कमबेसी नइखे। लोग समुझेला कि दाँत त पत्थल के हऽ एकरा में का करे के बा। कतनो खाईं, बेचारा चबइबे करी। पसु लोग खाए के खा जाला फिर पगुरी में ले आके चबाला। लेकिन हमार मुरुख मन बरोबरे अपना दाँत धोए वाला समय के पहिले पढ़ाई–लिखाई में खरच कइके अनंदित होत रहे। दाँत के डकदर के देखे त नाक सिकुड़ा ले। भला दाँत आ कान के कतहीं डकदर होला? पहिले गाँवन में त अइसन वैद गली–गली घूमत चिलात कहस 'दाँत के वैद', 'कान के वैद'। कोई ओ लोग के बतिओ ना सुने। कोई–कोई के ई रोगो होत रहे। अब त डेन्टिस्ट लोग के एह से आछा कमाई आ समाज में आदर बा। दाँत में दरदो होला ईहो हम ना जानत रहीं, लेकिन एगो प्रोफेसर मित्र दाँत के दरद से अतना घबड़इलन कि हमरा किहाँ आवे में गोबर के ढेरी पर गिर गइलन आ बिना फगुआ के ओही में गड़ा गइलन। अपना से निकले के साउँज ना भेंटाइल।

एही से हमनी के पुरनिआ लोग सुबह के बेरा दुगो काम वतवलन, दिसा–फराकित होके दाँत धोवऽ, दन्त प्रक्षालन क्रिया करऽ। तब असनान करऽ। असनानो से जरूरी रहे दाँत धोवल। कवनो गाँवें फजीरे पहुँचला पर पहिलका सवाल पुछाय। 'मुँह धोवले बानीं?' तुरंते दतुअन पानी आ जात रहे। पेट में कुछऊ डाले के बड़ले बा, ठंढा पानी संगे मिसिरी आ लैनू तुरंते आ जाय। एगो मित्र डंटा नीअन दँतुइन राखस आ दाँत पर जोर लगा के जोर–भर हुरपेटस। नीम के दतुअन के चबात–चबात चार अँगुरी के कइ देस। तब ओके फार के सिहुला करस। माने ओकरा से जीभ छीलस। जिभियो के साफ रखे के चाहीं, जेहसे ओकर सान मत जाय। साँच पूछीं त साँच बोलल जीभ के सान ह। पुरनिआ लोग के दाँत खिया जाय, लेकिन जर–मूल पर कवनो असर ना रहे। एही से दतुअन, चाहे दातून में दाँते के प्रधानता बा। संसकिरित में दन्तधावनक्रिया कहलो जाला। माने दाँत के रच्छा होखे के चाहीं। नीम, गूलर के छरका (टहनी) दाँत के रगड़े के आछा ओषधि मानल जाला। परब में आम, चिड़चिड़ी से मेहरारू लोग दाँत धोवेला। ओकर पुन्न अलगे होला। चिड़चिड़ी के जर में गंगा जल रहेला। आजकाल सबका घरे दाँत धोए के पवडर, पेस्ट, ब्रस आ जीभी पूरा परिवार में अलगा–अलगा किनाता। पहिले जीए के नारा रहे– लाख नियामत, न एक तंदुरुस्ती। तंदुरुस्ती चाहीं त दाँतरूपी पहलवानन के ठीक राखे के परी। तब चाय के जमाना ना आइल रहे। चाय त अउरी दाँत के दुसुमन बन गइल। दाँत से कतना सबद के निरमान भइल बा– एह पर विचार करीं। मील में गहूँ गइल बा, मालिक मिस्त्री चक्की के दाँत बनावत बाड़न। दाँत रही तबे नऽ गेहूँ से आटा बनी। दाँत पजावत बाड़न। मतलब कूटे–पीसे जोग चक्की के बना रहन बाड़न। कूटे के मतलब ह दाना के छोटा करत बाड़न, पीसे के मतलब ह चबाए लाएक बनावत बाड़न। बिना दाँत के चक्की चलिए के का करी? बिहार के सी.एम. ठाकुर जी खइला के बादो मुँह में दतुअन लेके अपना क्षेत्र में घूमस। जहवाँ देरी के डर होखे, बस मुँह में दतुअनवे डाल लेस। ऊ खेला दुपहरिया ले चलत रहे। दतुअन उनुकर सभ सवाल के जवाब रहे।

दाँत खाली दतुअने से ना धोआय? अनेक तरह के मंजनों से धोवाला। सुगंधित मंजन से लेके खइनी के गुल तक। अगर रउआ खइनी खाए के अभ्यास नइखे त जीभ चाहें दाँत पर गुल धरते ओहिजे लोटिए जाइब। जेकरा गुल से अभ्यास बा ऊ खाए के पहिले, कविता पढ़े के पहिले, नाटक में जाए के पहिले, गुल जरूर करी। सुनीला मूड बन जाला, गुल कइला से। गुल खइनी के डंठल से बनेला। बड़ा तेज होला। एगो मित्र के गुल करे के आदत लाग गइल रहे। मरद–मेहरारू आपा–आपी घर के दू दिसा में बइठ के घंटन गुल करस। उनुका आलमीरा में खाली गुल के दरजनन डाबा भरल रहे। कहेला लोग कि ऊ दूनो परानी में खाली डीबे देखिके मस्ती आ जात रहे। गोसाई जी नहाए के मंज्जन–फल कहले बानीं लेकिन मंजन त दाँते खातिर अबहिनो प्रयोग में आवत बा। दाँत के वैद कहीं, चाहे डकदर ऊ लोग कहेला कि जऽ बेरी खाईं त बेरी दाँत के रगड़ के धोईं। नाहीं त 'पायरिया' रोग हो जाई। दाँत से खून निकले लागी। दाँत से खून निकले सुरू हो जाय त ओकरा के अँगुरी से मल के निकाल देबे के चाहीं। अगर दाँत गइल त खाए के सवादो ओकरे साथे चल जाई। बस मन में खाए के लुबुध भर रहि जाला। जगर एकाध दाँत निकलवा के ओकरा बदला में बनौटी दाँत लगववलीं त ऊहे हालत

हो जाला, जइसे दू देस के सैनिक मिलिके एक जगे सैन्य अभ्यास करत होखस। अगर नियम के पालन ना होई त दाँत से हाँथ धोवहीं के परी।

हमरा अइसन भगमान लेखक बहुते कम मिलिहन जेकरा मुँह में एको दाँत नइखे। एह से हमहूँ अनुभवी लेखकन के पंघत में बइठल चाहत बानीं। अनुभवे न सभ हऽ बाकी चीझ त ओकरा समने गौन हो जाला। हमार अनुभव कहत बा, जेकरा के हम सभका के बतावल ना चाहीं कि जइसे बसंत के अइला के प्रभाव आम पर सभसे बाद में होला, ओइसहीं ऊमिरि के प्रभाव पहिले दाँते से सुरू होला। जवना दाँत में ऊख चीभे के आउर रगर के पत्थरो के अँचार कूँचे के हौसला होला, ऊ गरम–ठंढा पानिए से डेराए लागेला। दाँत जब धोखा देला त जीभ बरियार हो जाले। जब जीभ बेचारी के सवाद ना रह जाय, त दाँत लोग के बेचारा बन गइला से जिभिए त ऊ लोग के तूरेले। खोंढ़रा में जा–जा के पइठ के।

हमार दाँत जब हीले सुरू भइल त अपना प्रोफेसरी पेसा पर झटका लागे के डर समा गइल। कहवाँ सुध–सुध बोले खातिर रहीं, ओहिजे ई दाँत हमरा जस के काटे के असी हो गइलन। दोसरा विषय के जइसे गणित के लोग श्यामपट से काम निकाल लेला, लेकिन भाषा के विदवान के बोलले से विद्वता परगट होला। साथी लोग दवाई बतावल। दवा बनल, सभ त ठीके रहल लेकिन समुद के फेन के मतरा जादा पड़ गइल। जवन दाँत दू चार साल चलित, तवन अब नदी के किनारा के फेंड़ लेखा कवनो बाढ़ के देखते पहिलहीं डेराए लागल। साँचों, दाँत बिना त उचारन होइए ना सके। कुल्ही हवा के जोर दाँते के अँगेजे के परेला। दन्त्य ध्वनि आउर दन्तस्थानीय वरनन के सुद्ध उचारन अब संभव ना रहि गइल। भाषा विग्यान पढ़ावत खूनी दन्त्य वर्ण के रूप में 'लृ', 'त्', 'थ्', 'द्', 'ध्', 'न्', 'ल्' आउर 'स़' के बीसन मरतबा छात्र लोगन के बतवले होखब लेकिन बिना दाँत के एहनी के उचारन अब कइसे होई? वाल्मीकि रमायन में हनुमान जी के सुध उचारन पर रामजी मोहित हो गइलीं। विदवान माने विद्या में पारंगत जे सुध–सुध बोलेला आ सुध–सुध लिखेला ऊ विदवान ह।

हम अपना दाँत के कहानी बताईं। सुनिके रउआ सभे हँसे लागब जा। खाएक देखते डर लागे। जवन दाँत हिलत रहन ऊ अपुसे में खाए के बेरी लड़े लगलन। अनाज चबाए के बदला दाँते चबाए लागस। काड़ा चीझ से जूझत कतना जना रन में खेत होखे लगलन। दाँतो पछाड़ खइहें, कबो ना सोचले रहीं। जइसे फेंड़ से पतई गिरते कवनो फेंड़ के मकड़जाल में पड़ गइल होखे, न भुइयाँ जाय, ना डाली में रहे, ना अकास में। जहवाँ खाए के सूत्र रहे 'भन्नू भाव न जाने पेट भरे से काम।' उहवाँ अब बराके, कवनो कोमल चीझ जवन अँगुरी से मिसा जाय, खाए में आवे लागल। दन्त–सभा में बस जीभ के बरिआरी चले लागल। अब मुँह जवन बहुते सुन्नर मानल जात रहे, पोपला होके बदसूरत बने लागल। गाल अपने धँस गइल। कुल्ही गाल बजावल बन हो गइल। लार अपनहीं बिना रोक–टोक के अनजाने चू जाय। बस राम नाम के भरोसा रह गइल। साँचो राम–नाम में एगुड़ों ध्वनि दन्त्य नइखे। गोसाईं जी अइसहीं न राम–राम के महत्ता बतवलीं। आ कहलीं एगो छत्तर ह आ एगो मुकुटमनि ह। अब बुझाए लागल दाँत का ह?

माई इयाद आइल। जब दूध के दाँत जामे लागल त उत्सव भइल घर में। लइका आजु से अन्न खाए लागी, बोले लागी। जब ऊहो दँतवा टूटे लागल त ओकरा के हाथ में लेके बड़ बहिनिन के साथे आँख मुँदले दू गो से धरा के दूब के मैदान में भेजल जाय। एह दाँत के ले जा के दूब के जर में गाड़ आवऽ। आँख मूँदि के कहिहऽ कि– 'जइसे जइसे दुबिआ जामे वइसे वइसे दँतवा'। आँख मूदले घरहूँ लवटे के रहे। ई कुल्ही खेला अदिमी के अस्थि विसर्जन लेखा रहे। तोतरी भाषा के कतना आदर रहे। सभे खुश हो जात रहे सुनिके। घरो खुस सात घर दुसुमनो खुस। गोसाईं जी अपना मानस के एकरे से तुलना कइलीं 'जो बालक कहे तोतरि बाता। सुनहिं हरसि हिय पितु अरु माता।।' ओह सुख के ब्रह्म सुख से तुलना कइके ऊहाँ के खूबे खुस रहीं। दाँत रहला आ ना रहला पर दूनों के सुख बरनन से परे बा। कवनो माई–बाप अपना 'दन्तुर' सिसु के देखिके कतना खुश होत होइहें। एकरा के या त सूर ना त तुलसी जइसन दुइये गो कवि कह सकेलन। ई दूनो जाना अपना इष्ट के शिशु–सरीर में दाँत के पंघत पर अपना के नेवछावर क देले बाड़न जा। 'वरदंत के पंगति कुंदकली अधराधर पल्लव खोलन की।' पूरा सवइया पढ़ीं, आ निहाल हो जाईं। सोभा के तुलना में दाड़िम–दसन। लागत बा अनार के दाना पंगत में बिछा दीहल बा। तब न तोतरी बोली निकली। किसलय अइसन कोमल ओठ में से ऊज्जर सफेद दाँत। का कोई चितेरा एकरा के उँकेर सकेला। रंग त परगट हो जाई, लेकिन कोमलता कइसे आई। एही से पूरा मानस अइसन ग्रंथ के गोसाईं जी 'तोतरि' बोली पर नेवछावर होके कहलीं– 'हमार मानस बचवन के तोतर बोली ऽ'। सुनहीं के परी, मन के मुदित करहीं के परी। हइसन कोई लिखवइआ भइल होई एह संसार में? हमार रचना पढ़हीं के परी। देखीं कइसे नइखऽ पढ़त।

फिरू, अरे भाई, हम राउर बचवा हईं, ई तुतलाहट के भाखा हऽ। सुनीं आउर सुखी होईं। अइसनों सायदे कवनो कवि कहले होइहन। हमरा कतहीं मिलल ना एह से कह देली हँ।

मानुस तन से निकलल दाँते के देखिके, लोहा के जंत्रन के निरमान भइल। ओह जंत्रन में भी दाँत के प्रयोग भइल। सभ तरह के मोटर में दाँत रहेला। घास, धान आदि फसल। काटे वाला हँसुआ के संसकिरित में 'दान्ती' (दाँती) कहल जाला। लकड़ी काटे वाली आरी में दाँते–दाँत होला। दाँत ऊहे ह जवन आँतों के काट दे। भोजपुरी में दाँत पजउवल चलेला। सुनरी नारि खातिर 'तन्वी श्यामा' के संगे 'शिखरिदसना' होखल जरूरी ह। दाँत के बड़ होखल भगवानी स्त्री के चीन्हा ह। लेकिन मरद खातिर ना। ओहू में 'स्थान भ्रष्ट' दाँत के शोभा नइखे मानल– 'स्थान भ्रष्टा न शोभन्ते' – में दाँत, केश, नख आउर नर, चारे गो बाड़न। हँसी खुशी में बत्तीसों दाँत परगट हो जाला। एकरा के बतीसी देखल–देखावल कहल जाला। अपना बतीसी में जवन भारी 'मीसी' लगा लेली, उनुका पर त छुरी गँड़ासा चले लागेला। 'मीसी' आ 'मासा' दुनो जवानन खातिर जानलेवा ह। मीसी दाँत में आ मासा गाल पर। कवनो कवि के ई देखलाव ना रहाइल– भीतर के आग धधक गइल, गा उठलन– 'गोरिया तोरा गाल पर मासा/एक दिन चली गँड़ासा ना।' भगवान जी के दाँत विकरालता में द्रंष्टा हो जाला आउर भयानकानि भी अइसन कि देखिओ नइखीं सकत, भय लागी। राछसन के नाँव होला दंतवक्र। खूँखार सरीर के परगट करे खातिर। किरोध में कहल जाला– 'हम तोहार दाँत तूरि देब'। किरोध में बानर लोग दाँते किटकिटावेला। बाँह तूरे में कमो पौरुख से काम चलि जाई। लेकिन दाँत तूरल असान नइखे। अंगद जी रावन के दाँते तूरे के बात कहलन– 'हम तव दसन तोरिबे लायक'। एही से दाँत पर गई गो मुहाबरा बनल– दाँत निपोरना, दाँत दिखाना, दाँत गीनना। पहिले हारल राजा अपना दाँत तरे घास दबा के बली राजा के सामने जात रहन। अतने से उनुका के छमादान मिल जात रहे। अंगद जी एकरो के रावन से कहले बाड़न– 'दसन गहहु तृन कंठ कुठारी'।

दाँत से गाय–बैल के उमिरो के पहचान होला। उदन्त माने दाँत नइखे जामल, बछरू बा। दू दाँत, चार दाँत, छः दाँत तब मानुष कहला। मानुस के पहिले बाछा कहल जाला। हाथी सभ से विसाल जानवर ह। ओकर दाँत दूरे से लउकेला। साठ बरिस के बाद ओकरो दाँत गिरे लागेला। चाहें काट दिहल जाला। ओहनी के दाँत के बहुते दाम होला। ओहनी के दाँत कटइबो करेला, आरी से। कुकुर के दाँत में बिख होला आ साँपों के दाँतों में। ई लोग के दाँत से सभे डरेला। दाँत कवनो चीझ के छत–बिछत करेला। बच्चा लोग आपन विरोध दाँते से काटि के परगट करेला। आउर नाहीं त परेम में एके दाँते से लोग रोटी खाला। दाँत काटल परेम के प्रदर्शन ह। नायिका भेद में दन्त क्षत नख क्षत, दूनों पर हजारन गो कविता लिखल गइल। निराला जी दाँत के प्रयोग ना कइलन– मसल दिए गोरे कपोले तक गइलन। दाँत आउर नाखून त एही खातिर हइये हऽ। परेम होखे तब, चाहे अदावत रहे तब। ई दूनों में काम देला। ई 'गारिए' नीयन बा। परेम आ बैर दूनों में एह दाँत के प्रयोग होला। अमरकोश में दाँत के चार गो पर्याय बतावल बा। ई चारो भाई ह लोग, तनिका तनिका अन्तर के साथे। दरद, रदन, दसन, दन्त। सभन में भाव रौंदे के बा। गनेश जी के वन्दना में दन्ताघात विदारि तारि रूधिरैः, ई सेनुर के शोभा नीअन बा। एक दंत जी विघिन के अपना दाँत से बिदार दीहीलाँ।

हमरा मुँह में एको दाँत नइखे। बनावल दाँत में लागत बा एगुड़ो टूटल नइखे। ई समुझ लोगन के हैरत में डाल देला। लोग कही कि 'सर', राउर दाँत सभ अबो ले चमकत बा। हम का बोलीं, चूपी साध लीहींला। के उहाँ सभ के मन दुखावे। हम बोलीं ना मुसुका दीहीला। भितरे–भीतर किलकत रहींला। ऊ लोगन के मुरुखता पर हँसत रहीला। आ कबो दाँत से जीभ के दबा के मटकी चलाइला। उहो लोग खुश, हमहूँ खुश। युधिष्ठिरी साँच के भला कबो आँच आइल ह? सुनीला मांसाहारी देस के लोग आपन नीमन दाँत तुरवा के बनौटी दाँत लगावेला। माँस खाए में ओह में आसानी होला। लेकिन अपना इहाँ दन्त कथा आ दाँत परीच्छा बहुते महत्व राखेला। जोतिष में दाँत के परीक्षण से ओह मानुस के प्रकृति परगट हो जाला, पहचानल जा सकेला। एकरे के न्याय में 'दन्त परीक्षा न्याय' कहल बा। ऊपर से देखिके भीतरे के कुल्ही गेयान हो जाय। कउआ के दाँत ना आँखे होला, लेकिन काकदंत परीक्षा न्याय त प्रचलन में बा। झुठिआवे के होखे त बस दाँत से जीभ के दबा के कहीं– राम राम भला फलनवाँ अइसन कर सकेलन। भाई लोग अबहिन त दन्त पुरान के एक अधेयाय बँचलीं। आगे बढ़ब त केकर का फाटी कहि ना सकीं। आज अतने सुनीं आ मन में गुनीं। संख सुखले फूँकी।

इति श्री शरीर पुराणे, मेवा खंडे, दन्तोपाख्यानम् इति असमाप्तम्। ••

❑ निराला साहित्य मंदिर, सासाराम, रोहतास, बिहार।

गाँव–जवार से माटी के महक

(भोजपुरी भूइं रतनगर्भा हवे। सन्त, महात्मा, विचारक, भाषाविज्ञानी, गणितज्ञ, संगीतज्ञ, साहित्यकार, पत्रकार, वीर सैनिकन आ राजनेतन के जनम-करम के भूमि भोजपुरी क्षेत्र का गौरव आ गरिमा के देस-विदेस जनले-पहिचनले बा। छपरा, आरा, सीवान, बक्सर, गाजीपुर, मऊ, देवरिया, गोरखपुर के दिल का रुप में धुकधुकाए वाला जिला बलिया त, महर्षि भृगु बाबा, गर्ग, गौतम आ दर्दर जइसन मुनियन के तपोपूत धरती हवे। मंगल पांड़े का जरिये आजादी के बिगुल बजावे आ चित्तू पांडेय आदि का जरिये, आजादी के - घोषणा आ पहिल झंडा फहरावे के सौभाग वाला ई जनपद कला, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान, कृषि आ राजनीतिक अगुवाई का दिसाईं अपना सतत् कर्म आ निष्ठा से कीर्त्ति-अरजन कइले बा। ओइसे भोजपुरी भूगोल क फइलाव चंपारन, मोतिहारी होत नैपाल का सीमा ले बा।

राष्ट्र का निर्माण में अपना प्रतिभा, ज्ञान, कौशल आ निष्ठा से योगदान देबे वाला भोजपुरी जनपदन के, प्रतिभाशाली, विद्वान, संस्कृतिकर्मी, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, प्रशासनिक अधिकारी आ अकादमिक लोगन का बारे में, भोजपुरियन के जाने के चाहीं- खास कर ओह लोगन का बारे में, जेकरा अपना भूमि, भाषा आ समाज से जुड़ाव आ आत्मीयता बनल बा। हम अपना एह विचार के ध्यान में राखत, एह नया स्तम्भ में एही माटी के महक का रूप में भोजपुरिया गाँव-जवार से अपना प्रतिभा आ मेहनत से आगा बढ़ल कुछ खास लोगन के परिचय वाली छठवीं कड़ी दे रहल बानी - संपादक)

व्यक्ति विशेष : आचार्य नन्द किशोर तिवारी

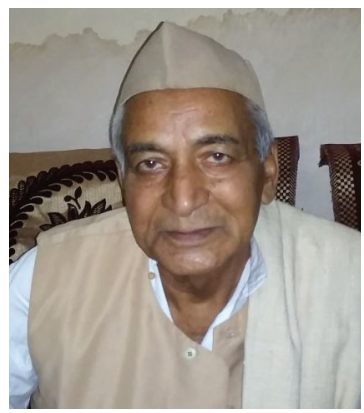

•• **जन्म** : 01 जनवरी 1941 (सर्टिफिकेट से) । वास्तविक जन्म तिथि - चैत्र एकादशी 1939 । ''बेरुकही'' गाँव में । जिला-शाहाबाद पुराना, नया रोहतास, सहसराम (बिहार)। माता 'श्रीमती प्रानपति देवी, पिता - पं० राधा प्रसाद तिवारी ।

•• **शिक्षा** : शुरूआती शिक्षा-गाँव में आ तकिया, सहसराम से मैट्रिक । जैन कालेज, सहसराम से स्नातक । स्नातकोत्तर, पटना विश्वविद्यालय से। हिन्दी आ संस्कृत दूनों विषय से एम०ए० प्रथम श्रेणी में । मगध विश्वविद्यालय से जूनियर रिसर्च फेलो ''मध्य युग के काव्य में माया'' विषय से डाक्टरेट फिर सीनियर रिसर्च फेलोशिप में ''हिन्दी काव्यशिल्प के विकास में निराला की मनीषा और कला के योगदान '' विषय से डी०लिट्० । आगा चलके संस्कृत में '' वैदिक शब्दावली का अर्थानुशीलन '' विषय में डी०लिट्० ।

•• **सेवा** : 1964 से हिन्दी विभाग गया में प्राध्यापक । शान्ति प्रसाद जैन महाविद्यालय, आरा में हिन्दी विभागाध्यक्ष रूप में तीस साल अध्यापन । वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग में प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष पद से बरिस 2001 में सेवानिवृत्त ।

•• **प्रकाशित पुस्तक** : (हिन्दी) - मध्य युग के भक्तिकाव्य में माया, तुलसी साहत्य में माया, रोहतास के सन्त और साहित्यकार, चलो मन पावन गीताघाट, शील : परिशीलन और परिबोध, साहित्य निर्माताओं का साहचर्य लोक, महाकवि निराला का काव्यशिल्प , वैयक्तिक पक्षपात और हिन्दी आलोचना

(भोजपुरी में) - महाकवि भास के तेरह नाटकन के भोजपुरी अनुवाद, नाटक रतनमाला । बतकही (वैयक्तिक निबन्ध-संग्रह), कलसा (निबन्ध संग्रह) पत्थल के मेहरारू (मौलिक नाटक)।

•• **संपादित पुस्तकः** निराला का निबन्ध साहित्य ,सन्त जयरामदास (रोहतासगढ़), स्वामी

शिवानन्द तीर्थ बचनावली (पाँच भाग) ।'' भोजपुरी भाषा के उद्भव आउर विकास , भोजपुरी के सब्दन के निरुक्त (लौकिक आ वैदिक)

•• ''पत्रिका'' (हिन्दी)-- ''इयत्ता'', ''प्रत्याभिता '' दूनों त्रैमासिक

(भोजपुरी) --'' माई के बोली '' आ '' सुरसती'' के पन्द्रह अंक का अलावे

कई गो महत्वपूर्ण स्मारिका आ विशेषांक के सम्पादन ।

•• सम्पर्क : निराला साहित्य मंदिर, सासाराम, रोहतास (बिहार)

लगभग तीस -बत्तीस बरिस पहिले, लोक यात्रा में संजोगे - सुभागे, प्रोफे० नन्दकिशोर तिवारी जी से हमार भेंट भइल रहे बनारस का विश्वनाथ गली में । तिवारी जी आपन पत्रिका, पुस्तक छपावे गइल रहनी आ हमहूँ संजोगन आपन पत्रिका छपवावे का उतजोग में डँउड़ियात पहुँचल रहनी ।

अध्ययनशीलता, विद्वत्ता, विनय आ व्यवहारपटुता के अद्भुत संयोजन तिवारी जी अपना ठेठ भोजपुरिहा अन्दाज आ मिलनसार सुभाव का कारन पहिले भेंट में हमरा के बहुत प्रभावित कइलीं। आगा चल के उहाँ से हमार चिट्ठी -चपाती होखे लागल । ''पाती'' खातिर उहाँ का बाद में कुछ पोढ़ आ जियतार निबन्ध भेजलीं, जवन ससम्मान ''पाती'' में छपल।

आचार्य नन्द किशोर तिवारी संपादक अशोक द्विवेदी आ डा० अर्जुन तिवारी का साथ

अपना मातृभाषा से असीम लगाव आ नेह का चलते हिन्दी साहित्य के आचार्य पद के दायित्व आ गरिमा के निबाह करत प्रोफेसर तिवारी जी भोजपुरी भाषा -साहित्य के बढ़न्ती खातिर हमेशा तत्पर रहल बानी। भोजपुरी शब्द-संपदा के भाषावैज्ञानिक अनुशीलन का साथ ओकरा अरथ-गाम्भीर्य आ बिस्तार का बारे में निष्ठा से बोले बतियावे वाला तिवारी जी संस्कृत के कई प्रसिद्ध नाटकन के भोजपुरी अनुवादो कइले बानी। भोजपुरी गद्य साहित्य के पोढ़ करे खातिर, बहुत सुलझल आ जियतार निबन्ध लिखले बानी। भोजपुरी वैयक्तिक निबन्ध लेखन में उहाँ के अवदान रेघरियावे जोग बा।

सिरजनशील-जीवट से भरल-पुरल सन्त, सहृदय तिवारी जी के सादा आ सहज 'रहनी आ जीवनचर्या' बा। आधुनिकता आ जथारथ का नाँव पर भौतिक दुनियाँ वाला अरकस-बथुआ परोसल उनका ना रूचे। साहित्यिक खेमाबाजी से दूर, उहाँ का अपना लोकोन्मुख सुचिन्तन आ बात-ब्यवहार से संवेदन-ज्ञान के अँजोर बाँटे में ढेर विश्वास राखीले। अपना प्रेम, करुना आ सनेह से अपना शिष्यन के अँजोर राह देखावे वाला गुनः धर्म का कारन उनके चाहे आ सरधा-सम्मान देबे वालन के लमहर जमात बा। ••

''पाती'' का रचनात्मक मंच से चितरंजन-पार्क, नई दिल्ली-110019 में विमर्श-बतकही आ रचना-पाठ

रचना-पाठ में सर्वश्री आनन्द सन्धिदूत, डा० ब्रजभूषण मिश्र, डा० जयकान्त सिंह, डा० अशोक द्विवेदी, केशव मोहन पाण्डेय, जलज कुमार मिश्र, डा० सुशील कुमार तिवारी एवं डा० लक्ष्मीनारायण चौबे आदि के सहभागिता।

पूर्वांचल एकता मंच, दिल्ली 10वाँ विश्व भोजपुरी सम्मेलन 2018

दादा देव मेला ग्राउन्ड, सेक्टर-8, द्वारका, नई दिल्ली में 7-8 अप्रैल के दू-दिनी कार्यक्रम आयोजित भइल। एह कार्यक्रम में विचार गोष्ठी, कवि गोष्ठी तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम में सिंगावादन, बटोहिया बैले ग्रुप, डफरा, पखाउज गोंड़ऊ नाच दुसरा दिन दू-गोला चइता भोजपुरी सिनेमा-सम्मान मुख्य आकर्षण के केन्द्र रहल

सवाल दर सवाल

डॉ0 प्रेमशीला शुक्ल

केहू कुछ कहे, जवन मजा गरमी के साँझि देले तवन मजा दूसरे कवनो मौसम के साँझि में कहाँ ? जाड़ा के साँझि आवते सब के घर में ढकेल–देले। दिने जवन तनी घाम से राहत मिलत रहे, ऊ साँझि होते खतम। चलऽ कउड़ा–बोरसी के इन्तजाम करऽ चाहे रजाई में मुँह तोपऽ। बरसात में साँझि कब्बो लउकी, कब्बो मेघ से तोपा जाई, कीच–कानो सगरी मजा बेमजा कऽ दी। गरमी में अहा–हा दिन भर का लमहर अगोराई का बाद साँझि धीरे–धीरे उतरी एगो उमीद लिहले–अब तपिस कम होई, चैन मिली, सूकून भेंटाई, सबसे बड़हन बाति–रात के अदभुत नजारा देखे के मिली, जगर–मगर आसमान फरल –फुलाइल आसमान। जाड़ में तऽ मूड़ी उठा के आसमान की ओर ताके के हिम्मत ना होखे, बहुत होंई तऽ तीन डँडिया के देख के सन्तोष करेके मिली। अब तिन डँड़िया उगि गइल, दू घरी राति बीति गइल, अब कपारे पर आ गइल आधा राति बीतल आ अब ओल्हि गइल, अब भिनुसार होई। बस के देखऽता सतहवा, खटमचिया आ सुकवा ? मारे जाड़े तऽ हाड़ काँपता आ गरमी में, साँझ होते छते पर सूति जाईं– सुरूज भगवान गइले बाकी उनुकर चिन्हा–अँजोर–अब्बे बा–अब जाता– अब संझा–बाती के जून हो गइल–अब अन्हार उतरी आ, आ–गइलि पहिलकी जोन्हीं, दुसरकी, तिसरकी, चउथकी आ अब थोड़े देर में अनिवन जोन्हीं, खोजे सब आपन–आपन.....।

हमार जोन्ही तऽ रूनधती हई ए जोन्ही का बारे में हमार नानी हमके बतवली। सुनिले बचपन में हम बहुत रोवनियाँ रहनी। बाते–बाते रोई आ रोई तऽ रोवत रहि जाई। हमके चुप करावे खातिर बुला भुलिआवे खातिर बहुते उपाय कइल जाय। ओही में से एगो रहे, रूनधती के खोजला घर के सब लइके जब नानी के घेर के छते पर बइठें आ किस्सा–कहानी होखे तऽ छोटो बाति पर हमरा रोंवाँस धइ ले। नानी किस्सा छोडिके कहें चलऽ लोगें, रूनधती के खोजऽ लोग। उत्तर ओर, उहे सतहवा, अब उपर के चारो पाया के छोड दऽ लोग। नीचे के टेढके जवन पूछि वाला तीनि गो जोन्हीं बा, ओही की बीच वाली–जोन्हीं का बगल में छोटी मुकी, रेत बराबर बाड़ी रूनधती, टिम–टिम, टिम–टिम करत। सब लइकन का साथे हमहूँ रूनधती के खोजे लागीं आ रोवल भुला जाई। ओह घरी रूनधती के खोजल, आसान ना रहे, ओतहत बड़हन आसमान में उत्तर खोजल, फेरू सतहवा, तब टेढ़की पूँछ की बिचलकी जोन्हीं का बगले बइठल रूनधती। धीरे–धीरे ई खेत हमरा आवत में शामिल हो गइल आ सयान भइला पर 'स्टार गेजिंग' का रूप में हमार शौक बनके हमके अन्तरिक्ष का ज्ञान–विज्ञान की ओर मोड़ दिहलस।

नानी जब एह खेल में हमके अझुरावे तऽ किस्सो सुनावें, सतहवा के ऋषि लोगन का बारे में बतावें। सब कहला–सुनला का बाद जब उपसंहार आवे तऽ उनुकर आवाज तेज हो जाये एगो अजब किसम के बल आ दृढ़ता आ जाये

''सुनऽ लोगन सातों ऋषि लोग बड़ा तपस्वी रहे, ज्ञानी रहे तऽ आकास में जगह पावल लोग बाकी सबसे अउव्वल रहलें ध्रुव, लइका रहलें बाकी परम पद पवलें, सातों ऋषि लोग उनुकर परिक्रमा करेला आ रूनधती?'' बोलें– ''रूनधती रहली मेहरारू। कहाँ उनुका ज्ञान आ कवन उनुकर तपस्या ? खाली अपना पति के सेवा कऽ के पतिबरता धरम के पालन कऽके वशिष्ठजी अइसन ज्ञानी का बगले बइठि गइली। देह छोड़ला का बादो पति से अलग भइला के दुःख उनुका भोगे के ना पड़ल।''

सेयान भइला पर ऊ समय बिला गइल बाकी ओ समय के इयाद मन–परान में आजुवो बसल बा। रहन–सुभाव में समाइल बा। रूनधती के खोजत–खोजत हम तरह–तरह के ग्रह–नक्षत्र खोजे लगलीं, तब्बो गरमी का साँझि के बीतला का इन्तजार आजुवो रहेला आ नंगी–आँखि से रूनधती के देखला के 'क्रेज' अब्बो बरकरार बा। रूनधती आजुवो हमरा खातिर 'रूनेधती' बाड़ी, अरूधती केहू दोसरा खातिर होइहें। बाति अगर इहें तक रहित तब्बों गनीमत रहे। ई तऽ हमरे हिया बीच सतहवा की पूँछिए अइसन टेढिया के बइठि गइली। जादू हमरे कपारे अइसन चढ़ल कि एके हम आसमान से उतारि के अपनी ध ारती पर उतारे के जतन करे लगनी। नान्हे उमिर एगो साध, मन में जागल–''हमरा एगो रूनधती होइहें।'' रूनधती–बहुते सुन्दर, हमरे बगले बइठिहें, जीवनभर, जीवन का बादो, जन्म–जन्मान्तर, –''रूनधती – हमार रूनधती''–टिम–टिम, टिम–टिम। ओह! एगो जुगूनू मुट्टी में अइले एतना चमकेला, एतना खुशी देला तऽ रूनधती के मिलले केतना खुशी ? केतना खुशी ??

रूनधती मिलली। पनवा अइसन धनि पातर लवंग अस, ढुरूहर, केसर अस धनि पीयर, कसूरी अस महमह। सँच्चे, हमार रूनधती अइसने रहली नोहे–नोहे जइसे खूबसूरती भरल–होखो एतना सुँकुवार कि चले तऽ मन करे हमहीं गोदी उठाके जहाँ कहें तहाँ पहुँचा दीं। उनके देखि के मन में अइसे सोधाए कि इनका साथे तऽ सूतल–बइठल गुनाहे बा। अइसने कवनो रूप के देखि के कहल गइल होई कि सुन्दरता छुए के ना, देखे खातिर होला। बाकी हमसे ई सँपरि ना पावे। मोरा लेखे रूनधती के रूप एगो नदी रहे, एगो वेग, एगो प्रवाह। हम कब्बो एकरा तट पर बइठि के एके एकटक निहारीं, कब्बो परसीं, कब्बो सँवसे डूब जाई नवहा होके निकलि आईं। रूनधती हमार गति रहली पति रहली, मति रहली। अपना के नदी के सँऊपि के हम निश्चिन्त रहनीं। बुझाए, इहे हमार लोक–परलोक सँवारी एही का साथे बहत–बहत हम एक दिन महासिन्धु में समा जाइब।

रूनधती का साथे हमरा जिनिगी के सब सुख मिलल। धन–दउलत, मान–सम्मान, पुत्र–परिवार–सबका छाँहें छँहात हम अपना कार्य क्षेत्र में नया–नया शोध कइला में मगन रहनीं। अन्तरिक्ष में कहाँ का बा कइसे बा, काहे बा, कबसे बा– इहे सब सोचत–गुनत दिन भागल जात रहे कि एक दिन सुख का सीझत पायस में माठा घोरा गइल।

बाहर घुप्प अन्हार रहे। काम के थकान से बोझिल, हम रूनधती का साथे 'वीक एण्ड' में, पहाडी पर बसल एगो गाँव में गइल रहनी। ई हमार पसन्दीदा जगह रहे। ई हमरा एगो रिश्तेदार के घर रहे। इहें दूसरी मंजिल पर एगो कमरा हमरा मिल जाए आ खाना–पीना के सामानों ऊ लोग दे दे। नौकर चाकर, सोहरत–सबाखन से दूर बीवी–बच्चा का साथे समय बिता के हम तरोताजा हो जाई। ओही दिन का जानी काहें बिजली ना रहे। नवंबर के रात। बाहर साँय हवा चलत रहे। रूनधती कुछ बोझिल–बोझिल रहली। बन्द खिड़की के पल्ला तनी–खोलत ऊ कहली–कइसन भयावन राति बा।''

''बा तऽ बाकी ओसे का, हम तऽ भयावन नइखी? हमार सवाल आमंत्रण के साथ उनुका तक पहुँचल।

''ना रउरा ना, रउरा तऽ सदा सर्वदा सोहावन रहनी, रहब, भयावन तऽ हम बानीं।''

'कैंडल लाइट' में उनुकर लिलार विषाद से झँवाइल लउकल।

बेटी कुनमुनाइल। ओके गोदी में उठावत रूनधती पलंग पर बइठि गइली।

''अँवाँसल बासन रउरा के सउँपे वाली हम भयावने कहाइब ।''

हमार आमंत्रण स्वीकार का प्रतीक्षा में रहे।

''का बोललू ? कवन भाषा में बोलेलू ? छोड़ऽ, सुनऽ।'' हम मनुहार का मूड में रहनीं।

''कवने भाषा में बोलीं ? कइसे बोलीं ? हमरा साथे बलात्कार भइल रहे।''

हमरा दिमाग में जोर से बिजली कड़कल।

तड़–तड़–तड़–तड़।

ई कहाँ गिरी, रामे जानें।

''कब ? कइसे ?''

एतना कहत हम थहरा के बइठि गइनीं।

रूनधती रोवत–सिसकत आपन आपबीती सुनावत रहली। घटना–दुर्घटना का तह–पेंच में हमार दिमाग तनिको ना जात रहे, बस एक्के बाति बवंडर बन के घूमत रहे–कहाँ पाईं ओके कि चबा जाईं। ओकरा मिले के ना रहे, ना मिलल, शराफत का बाजार में ऊ राजा बनके घूमत होई। महीनन हम भूत बन के डोलत रहनीं। जिनिगी कब रूकल बा ? ना रूकल, बाकी बहुत कुछ टूटि–फूटि गइल। कार्य क्षेत्र के बुलन्दी ढहे लागल। अन्तरिक्ष के रहस्य खोजना से मन उचट गइल, बल्कि कही कि जिनिगी से मन उचट गइल। अजीब मन स्थिति रहे। जे गुनाहगार रहे, ऊ ऊहे, कवन रेत दूनूँ का बीच के प्रेम का सोता के सोख लिहलस ? जो ऊ कवनो वजह से आन्हर हो गइल रहती, लूल्ह–लंगड़ हो गइल रहती तब ? तब्बो हमार मनः स्थिति अइसे रहित ? ना, तब सायद अउर प्रेम उमड़ित आ कि ऊ दया के असर रहत, खालिस प्रेम ना! मन में फेर–फेर बवंडर उठे। रूनधती से दूरी बढ़त, जात रहे।

बहुत हिम्मत कऽके एह दूरी के बूझे के हम कोसिस कइनी। अंग–प्रत्यंग तऽ उहे रहे। दुर्घटना के जानी गइनी तब्बो ना जानत रहनी तब्बो आ जो दुर्घटना ना भइल रहित तब्बो। तऽ काहें कुछ कसके करकऽता ? करेजा फाटे–फाटे काहें होता ? मन के केतनो समुझाई, समुझि ना पावे। रूनधती में कवनो प्रतिकिया ना रहे। ना स्वीकार के सहमति ना अस्वीकार के साहस ना मान के बाँकपन ना सहभाग के सुख। 'छोड़ऽ' सोचत हम किनारे हटनी, छोडदीं, हरदम खातिर छोड़ दीं। अहिल्या बना दीं इनके–ईहो भाव रूनधती के आपबीती सुनत का बेरा मन में आइल रहे बाकी जइसे गोदी में कुनमुनात बेटी पर नजर पड़ल, मन बदल गइल। अगर बेटी का साथे अइसन कुछ होखे तऽ का हम ओके छोड दब ? कइसे छोड सकेनीं, हम रूनधती के ? बुझाए रूनधती से हमार कई गो रिस्ता बा–प्रिय के, बेटी के, बहिन के । दिमाग चकराए लागल।

कहाँ त्राण मिली ? लोक–बेद खँघारे लगनी। हमरा साथे एगो लइका पढ़े, गरीब आ छोट घर के कमे उमिर में बिआह हो गइल रहे। पढ़े खातिर गाँव छोडिके सहर आइल। ओने मेहरारू दोसरा का साथे फँसि गइल। टोला–मुहल्ला में चर्चा होखे लागल। ऊ जब मेहरारू से पुछलसि तऽ मेहरारू कहे कि झूठ बाति हऽ। अपना माई बाप से कहलस तऽ ऊ कहें कि कवन नया बाति बा ? अपना समाज में ढेर केस अइसन बा, चुपाइल रहऽ, काल–बच्चा होई तऽ सब ठीक हो जाई। जीअत माछी ऊ घोंटि गइल। आ ओतना पीछे काहें जाई? ऑफिस में सुधीर के बीवी बास का आगे पाछे भइल रहेले, तब्बो सुधीर के गृहस्थी आराम से चलता तब, हमरा दिमाग में बवंडर काहें मचल बा। संस्कार के कवन गूरर्ही, प्रतिष्ठा के कवन पेंच बेर–बेर अझुरावता, रास्ता खुले नइखे देत।

का करीं रूनधती के ? छली अपवित्र स्त्री ! दू साल से साथे बिया आ हम कुछ जननीं ना। बाकी रूनधती तऽ आँसू की धारा से अँचरा भेंवत कहले रहली कि उनका गोदी भरला के प्रतीक्षा रहे उनुका डर रहे कि बतवला का बाद ऊ परित्यक्ता ना हो जावँ, स्त्रीत्व का पूर्णता के अनुभूति से बंचित न हो जायँ। का करीं, अरूंधती के ? का–करीं ? का जानो कइसे सुग्रीव तारा के स्वीकार कइलें? का राम के उपहार मान के ? का कहता ई दृष्टान्त ? शायद प्रेम के रहस्य इहें समाइल बा। प्रेम पारस हऽ, निर्मल जल हऽ। एकरा आगे कवनो कदम टिकी कइसे ? सब जरि–जुरि जाई, धोवाइ–पोंछाइ जाई। तब्बे प्रेम दू के एक बना पावेला। हम अपना आ रूनधती का अन्तस्तस में एक समय में एक साथ एक अनुभव के बहत पवले बानी।

ओहि दिन धरती पर हमरा एगो उज्जवल नक्षत्र मिलल। ••

❑ प्रदक्षिणा, दक्षिणी उमानगर, सी०सी० रोड, देवरिया.274001

अन्हार में समात सूरज

☑ डॉ0 आद्याप्रसाद द्विवेदी

ठाकुर खुशहाल सिंह इलाका क धनीमानी किसान त रहबे कइले, आस–पास जवार में उनकर ढेर सम्मानो रहे। उनके दुआर पर खेती नीम्मन ढंग से करे बदे जेतना साधन चाहीं, सब मौजूद रहे। दुअरा पर एगो दुधारू गाय–भइँस बराबर बँधल रहे। नामी बड़मनई रहले के नाते दुआर पर दिनभर केहू–न–केहू अवते रहे। उनके एक खूबी अवर रहे कि जे भी दुआर पर आवे चाहे ऊ थाना के आदमी होखे भा तहसील क लेखपाल होखे, चाहे ब्लाक के कवनो कर्मचारी होखे, सबके चाह–पानी के मुकम्मल व्यवस्था, ठाकुर साहब कइल करें। दू–चार कोस के गाँवन में अगर केहू के पर पंचायत फरियावे के होखे त सब ठाकुर साहब के बुला के ले जाय, सबके ई मालूम रहे कि ठाकुर साहब हमेशा नियाव के बात करिहें, काहें से कि फालतू लल्लो–चप्पो के बात कइला से ऊ बहुत दूर रहें। दुआर पर एगो नौकर बराबर रहत रहे, जवन अन्दर से लेके बाहर ले सब काम निवटावत रहे। ओकर नाँव बैजू रहे। बैजू के उमिर बीस–बाइस बरिस के आस–पास रहे।

ठाकुर साहब के तीन गो संतान रहे। बड़ संतान के नाँव विजय रहे। दुसरी संतान लइकी रहे जवने के नाँव राजलक्ष्मी रहे, तिसरकी संतान बेटवा रहे जेकर नाँव अजय रहे। बड़ संतान विजय ढेर मनबढ़ सुभाव के रहे। ओकर सोहबत आस–पास के कुछ बदमास किसिम के लइकन से रहे। ओकर रूचि पढ़ले–लिखले में ज्यादा नाहीं रहे, एसे ऊ हाईस्कूल पास कइला के बाद पढ़ाई छोड़ि के आपन ट्रैक्टर संभाल लिहले आ खेती–बारी देखले में आपन समय बितावे।

राजलक्ष्मी के उमिर हालाँकि उन्नीस बरिस के रहे लेकिन अपने कद–काठी के भारी भइले के नाते अपने उमिर से ज्यादा के लगें। खइले–पियले के नीम्मन जोर से देहि गदरा के लहसि उठल रहे। रंग चम्पई रहे। ओकर शिक्षा इण्टर तक हो पवलस, काहें से गाँव के नजदीक में बीए तक के शिक्षा देवे वाला कवनो कॉलेज नाहीं रहे। ओकर रूचि संगीत में रहे। इहे देखिके उनका के संगीत सिखावे बदे एक संगीत मास्टर घर पर आवें। ठाकुर साहब के संगीत में रूचि ज्यादा रहे, एसे ऊ अपनी लाडली बिटिया के संगीत सीखे बदे खूब उत्साहित कइल करें। तिसरका लइका अजय हाईस्कूल में जिला में नंबर एक जगह पवलस, ठाकुर साहेब आगे के पढ़ाई खातिर उनकर दाखिला अपने गाँव से दूर शहर के नामी कॉलेज में करा दिहले रहलें।

राजलक्ष्मी चंचल सुभाव के रहें। उनकर झुकाव धीरे–धीरे अपने घर के नौकर बैजू के तरफ बढ़े लगल। बैजू दुसाध जाति के रहे। अपने जाति के हीनता के नाते ऊ हमेशा दबल रहे। एही से अगर कहियो ओकर आँख राजलक्ष्मी के आँख से मिलियो जाय त ऊ तुरंत आपन आँख के पलक नीचे के तरफ झुका ले। लेकिन जवानी के बाढ़ नदी के बाढ़ से कम नाहीं हवे। बैजू राजलक्ष्मी से मन के बात बतिआवल चाहे लेकिन नीच जाति में जनमले के हीनता भाव से कुछ कहि ना सके।

एक दिन ठकुराइन कवनो काम से गाँव में गइल रहली आ ठाकुरो साहब शहर के तरफ गइल रहलें। घर में राजलक्ष्मी अकेले रहली आ नौकर बैजू रहल। कवनो काम से बैजू घर के अन्दर गइल त राजलक्ष्मी ओकरा आगे आके खड़ी हो गइली आ ओकर हाथ पकड़ि के कहली– 'बैजू! हमार दिल हरदम तहरे बारे में सोचत रहेला। हम सपनों में तोके निहारत रहेलीं। का तुहरे मन में हमरे बदे तनिको प्रेम के भाव नाहीं आवेला।'

'काहें नाहीं आवेला गुड्डी दीदी! हम त सपना में तुहँसे कई बेर मिल चुकल बानी। संकोच आ भय के नाते हम खुल के कुछ बतिया नाहीं पावेली। हमार मन कई बरिस से तुहँसे अकेले में मिले खातिर आतुर भइल बा।' एतना कहि के बैजू राजलक्ष्मी के अपने अँकवारि में भरि लिहलें। राजलक्ष्मी देर तक ले अपने चुम्मा से बैजू के मदहोस बना दिहली। कुछ देर बाद जब दूनो जने अलल भइलें त देर तक एक दूसरा के चेहरा पर उठत–गिरत भाव के निहारे लगलें। राजलक्ष्मी कहली– 'बैजू! आज के बाद से तूँ हमके भुला मत जइहे। दाँव समय देखि के बराबर मिले के उतजोग करत रहिहऽ। हम तुहरे संग कहीं जाये के तइयार बानीं। आगे तुहरे हिम्मत कइले के बात बा।'

बैजू राजलक्ष्मी के हाथ पकड़ के कहलस– 'गुड्डी! अबहिन कहीं बाहर भाग चलले के योजना मतऽ बनावऽ। भूसा रखे वाला कोठिला में एक किनारा पर हमार चौकी बिछल रहेले। तूँ जब मौका दिखाई दे त ओंही आ जाइल करा। हमके भूसा निकाले खातिर ओमे बराबर जाये के रहाला। हम तुहसे वही मिलल करब। जब हमके कहीं बहरा के ठौर–ठिकाना मिलि जाई त हम भगले के योजना बताइब।' कहि के बैजू बाहर चलि गइल आ राजलक्ष्मी आपन सितार लेके अपने संगीत के अभ्यास कइल शुरू क दिहलीं।

दिन सरकत गइल आ बैजू आ राजलक्ष्मी के अकेल में मिलले के सिलसिला बढ़त गइल। एक दिन दूनो लोगन के गलत स्थिति में चौकी पर सुतले ठकुराइन देखि लिहली। ठकुराइन के पारा सातवें आसमान पर चलि गइल। बैजू के देहिं पर सटहा से कई प्रहार कइली आ अपने लइकी के चेहरा पर दू–तीन तमाचा जड़ दिहली।

बैजू के हरकत के समाचार साँझ के बेर ठाकुर साहब के बड़का लइका विजय के ठकुराइन से मिलि गइल। ठाकुरो साहब के सब हाल मालूम हो गइल। बाप–बेटा के राय बनल कि बैजू के हमेशा खातिर खतम क दीहल ठीक रही। ऊ लोग सोच लीहल कि केवल मार के भगा दीहल काफी नाहीं रही। दूनो बाप–बेटा सोच लीहल कि न रही बाँस न बाजी बाँसुरी। ई विचार के सोंचि के विजय एह काम में अपने एक मनबढ़ साथी के साथ लिहलें ताकि लास के कहीं ठिकाना लगा दिहल जाय।

एक दिन राति में बैजू के गहरी नींद में सुतले के समय विजय अवर उनके साथी मिलि के गला दबा के हत्या क दिहलें। हत्या के बाद लास ले जाके गाँव से कुछ दूरी पर तलाब में फेंक के जलकुंभी से तोपि दिहलें। बैजू के गायब भइले के जानकारी राजलक्ष्मी के बेचैन क दिहल। ओकर संगीत सिखले के रूचि खतम हो गइल। अपने संगीत मास्टर से ऊ साफ कहलस– 'मास्टर जी, अब हमार संगीत में तनिको रूचि नाहीं रह गइल बा। एसे आप हमके सिखावे बदे आइल बंद क देईं।'

मास्टर साहब कहलें– 'संगीत प्रभाकर के परीक्षा बिल्कुल नजदीक आ गइल बा। बीच में संगीत बंद कइल ठीक नाहीं होई। आ, एक चीज अवर हम पूछल चाहब, तुहरे ये कला के सिखले के रूचि काहें खतम हो गइल?'

राजलक्ष्मी बोललीं– 'मास्टर जी, ई आप जानि के का करबऽ कि हमार रूचि काहें खतम हो गइल। आप कल आईं, आपके मालूम हो जाई कि हमार रूचि काहें खतम भइल।'

दूसरका दिन जब मास्टर साहब अइलें त देखत हवें कि ठाकुर साहब के दरवाजा पर पुलिस के गाड़ी ठाढ़ बा। राजलक्ष्मी अपने कमरा में अपने दुपट्टा के फँसरी बना के ओपर झूलि गइल रहली। अपने सिरहाना एक नोट लिख के छोड़ले रहली, जवना में अपने मौत खातिर अपने बड़का भइया, बाप के जिम्मेदार ठहरवले रहली। एहर पुलिस राजलक्ष्मी के लास के पोस्टमार्टम बदे सीलबन्द क के ले जात बा, तब तक हल्ला मचल कि पास के तलाब में बैजू के लास ऊपर आके पड़ल बा। पुलिस तलाब किनारे पहुँच के लास के पहचान करवलस त मालूम भइल कि लास ठाकुर साहब के नौकर बैजू के हवे। बैजू के महतारी–बापो आ गइलें आ बिलाप करत चिल्ला–चिल्ला के ठाकुर साहब के बड़ लइका विजय के बैजू के मौत खातिर जिम्मेदार ठहरावे लगलें। पुलिस ओह लास के पोस्टमार्टम बदे ले गइल आ ठाकुर साहब आ विजयो के थाना पर लिहले गइल।

बैजू के पोस्टमार्टम रिपोर्ट में गला दबा के हत्या कइले के बात, उजागर भइल। दलित के हत्या के

खबर हर अखबार में मोटे–मोटे अक्षर में छपल। क्षेत्र के विधायक दलित रहलें, ये से मामला काफी जोर–सोर से उछलल। बैजू के बाप के रिपोर्ट में, बैजू के हत्या के जिम्मेदार विजय के बतावल गइल साथ में साजिश रचले में, ठाकुरो साहब के नाँव रिपोर्ट में लिखाइल। दूनो बेकति जेल के अन्दर पहुँच गइलें।

जमानत खातिर बहुत प्रयास ठाकुर साहब के छोटका लइका अजय कइलें। ठाकुर साहब के तीन–चार महीना जेल में गुजरले के बाद जमानत मिलल। विजय के जमानत नाहीं मिलल। जेल से बहरा अइले के बाद ठाकुर साहब बुरी तरह टूटि गइले। विजय के कोर्ट से रिहा करवले के लाख प्रयास के बादो उनके आजीवन कारावास के सजाय जिला जज आ हाईकोर्ट दूनो से हो गइल। लड़ाई में ठाकुर साहब के ढेर जमीन बिका गइल। ट्रैक्टरो के चोरी हो गइल। सबसे बड़ घटना ठकुराइन के हार्टअटैक के भइल। लाख उपचार के बादो ठकुराइन बच नाही पवली आ ठाकुर साहब के अकेल छोड़ि के सुरधाम चल गइलीं।

ठाकुर साहब के अकेल जिनगी रहि गइल। विजय के शादी नाहीं भइल रहल। एसे कवनो प्राणी उनके भोजन बनावे खातिर घर में नाही रह गइल। अजय आपन पढ़ाई आगे बढ़ावत गोवा में कवनो नामी कम्पनी के मार्केटिंग मैनेजर हो गइले। एही कम्पनी में काम करे वाली एगो एंग्लो इंडियन लड़की से शादी कके गोवा में आपन परिवार बसा लिहलें। उनके दिल–दिमाग, से गाँव–खेत–बारी आ बूढ़–बाप एक प्रकार से उतरि गइल। कबों–कबों बूढ़ बाप के गाँव से फोन आ जाव त, ओकर जबाब हौं–ना में देके फोन काट दें।

गाँव में खुशहाल सिंह के जिनगी बड़ कष्ट में बीते लागल। गाँव के पट्टदारी के एगो लड़की सुबह–शाम आके उनके चाह बना देव आ भोजन ला दे। अइसन अवसर आइल कि ठाकुर साहब के चारपाई पर से उठलो–चलल कठिन हो गइल। अइसन लगत रहे कि अब ठाकुर साहब के चला चली के बेरा आ गइल।

एक दिन ठाकुर साहब से अजय के फोन नम्बर लेके लइकी फोन कइलस– 'हेलो भइया! मैं रुचिका आपके घर से बोल रही हूँ। बाबा के तबियत अचानक बहुत खराब हो गइल बा। तोहके इयाद कर रहल बाटें। तूँ जल्दी चलि आवऽ।'

ओहर से अजय फोन पर बतवलें कि हम आ रहल बानी।

अजय दुसरका दिन फ्लाइट से गाँव पहुँचि अइलें। अपने बाबूजी के एक डाक्टर से दिखा के नीम्मन ढंग से उपचार कइलें। तीन–चार दिन तक घर पर रुक के बेंचले–खोचले से बाँचल सब खेत के हुण्डा पर बाँट दिहले। पट्टीदारी वाली लड़की के पढ़ाई खातिर कुछ रुपयो दिहलें आ समय–समय पर रूपया भेजले के वादो कइलें। ठाकुर साहब के तबियत में सुधार भइल, ओहर अजय अपने ड्यूटी खातिर गाँव से बहरा गइले। ठाकुर साहब के आँख से लोर चूवे लागल। गोवा पहुँच के अजय अपने पत्नी से कहलें– 'तन्या, एक बात पर हम काफी परेशानी में चलि रहल बानी। ए मामला में हम तुँहसे राय लिहल चाहत हईं।'

'अजय! तू हमके आपन समस्या बतावऽ! मिल–बतिया के ओ समस्या के हल निकार लीहल जाई।' – अजय के बगल में सोफा पर बइठत तान्या जबाब में कहली।

अजय कहले– 'देखऽ हमारे समस्या क कारण हमार बूढ़ बाप बाटें, जवन गाँव में अकेल पड़ल हवें। उनके सेवा–टहल करे खातिर गाँव के एक लइकी आ रहल बा। कल जब ओ लइकी के बिआह हो जाई त ऊ अपने घर चलि जाई। तब बाबूजी फिर अकेल रहि जइहें। अगर हम उनके इहाँ ले आईं त जब हम दुनो बेकति अपने ड्यूटी पर चलि जाइल जाई त उनके फिर अकेले समय काटे के परी। दूसर बात ई बा कि उनके हरदम खोंखी आवल करेले। राति के बेर ज्यादा उहाँ का खोखीले। जब राति खाँ ऊ खोंखिहें त तुहरे नीद में बड़ा खलल पड़ी। मकान में एतना जगह नाहीं बा कि उनके एक किनारे ओर रहे खातिर व्यवस्था क दीहल जाई। एही उलझन में हम डूबत–उतरात हईं। कवनो रास्ता हमके नाहीं लउकत बा।'

तान्या जबाब दिहली– 'अजय, एतना लमहर पढ़ाई कइला के बादो तू एकदम भोंदू बनल रहि गइलऽ। ई त कवनो समस्या के बाति नाहीं बा। तुहके मालूम होखे के चाहीं कि अब हर जगह बूढ़ लोगन खातिर 'वृद्धाश्रम' खुलि गइल बा। कवनो–कवनो के सरकार खोलले बा आ केतना के समाज के कुछ लोग मिलि के चला रहल बाटें। उहाँ इकट्ठा पइसा जमा क दीहल जाला। बूढ़ लोगन के दवा–दारू आ मनोरंजन के सब सुविधा आश्रम में रहेला। एके उमिरि के सब लोक रहेले एसे सब आपुस में बोल–बतिया के आपन जीव बहला लेले। उहाँ समय पर चाह–नास्ता आ समय–समय पर भोजन मिलत रहेला। एकरे अलावा बूढ़ लोगन के अउर का चाहीं?'

अपने औरत के बात सुनि के अजय उनके दूनो हाथ पकड़ि के झकझोरत कहलें– 'तान्या आजु हम

तुहरे बुद्धि के लोहा मान गइली। अइसन बढ़िया विचार हमरे दिमाग में अबले काहें नाहीं आइल रहल। अब हमार सब चिन्ता फिकिर गायब हो गइल।'

बाबू खुशहाल सिंह के अपने जिला के वृद्धाश्रम में अजय पहुँचवा दिहल गइल। वृद्धाश्रम में अइले के बाद ठाकुर साहब एकदम गुम–सुम हो गइले। साथ में रहें वाले तमाम बूढ़ लोगन के तरह उनके मन में तनिको उछाह नाहीं रहें। अपने बिछावन पर पड़ल–पड़ल ऊ हरदम अपने जिनगी के बीति गइल समय के बारे में सोचत रहे। उनके मन में इहे बात हरदम आवे कि जवना संतान के बाप–महतारी पैदा कइले, पलले–पोसले, आपन जाँगर–पौरुख भर खर्च करके उनके ये लायक बनवले कि ऊ अपने पाँव पर ठाढ़ हो जा, अइसन संतान अपने बूढ़ महतारी–बाप के ए उमिर में लाके वृद्धाश्रम में डाल दे। अइसन संतान के का मालूम बा कि महतारी–बाप के प्यार–दुलार का होला, पिता के साया कइसन होला, परिवार के लगाव के कइसन सवाद होला। हम काने सुनले रहली हईं कि विदेशन में सयान लइका लोग बूढ़ महतारी–बाप के अइसने जगह पर पहुँचा देले। हमके कहाँ पता रहल कि अब ई बेमारी हमरहू देस में आ गइल बा।

खुशहाल सिंह के उदास देखि के उनके कमरा के बगल में रहे वाला एगो बूढ़ आश्रम के मैदान में बनल बैंच पर ले जाके उनके बइठा दिहले आ उनसे आपन रामकहानी बतावल शुरू कइले– 'देखीं ठाकुर साहब! अइसन हालत अब हमरे देस में अधिकांश बेटा–पतोह कर रहल बाटे। हमरे के देखीं, हम आपन खून–पसीना एक कइके शहर में बढ़िया मकान बनववलीं। हमार छोटहन नौकरी रहे। ओ नौकरी में तनखाह के पइसा से कइसो पेट–पूजा हो पावे। बेटा लोगन के कवने जतन से पढ़वलीं, हमहीं जानत हईं। फण्ड से मिलल पइसा के दूनो बेटवा लोग आपुस में बाँटि लिहलें। हमके इहाँ ले आके पटक दिहलें। हम अब जिनगी के आपन किस्मत मानि के जी रहल बानीं।'

खुशहाल सिंह कुछ बोलले नाहीं लमहर सांस छोड़ि के लान में बनल घास पर जाके टहरे लगले।

धीरे–धीरे खुशहाल सिंह के दिमागी हालत खराब होखे लागल। उनके दिमाग से कबो आपन दूनो लइका उतरबे नाहीं करें। कभी ऊ जेल में सजा भोगत अपने जेठ लइका के बारे में सोचें आ ओकर चरचा अपने साथी लोगन से करे त कभी गोवा के नामी कम्पनी में काम करत अपने छोट लइका अजय के बारे में सोचे लगे। बस आँखि से आँसू बहावल करें।

एक दिन अजीब दृश्य खड़ हो गइल। ओह दिन बाहर से कवनो परिवार आश्रम घूमे खातिर आइल रहल। ऊ परिवार काफी धनवान रहे। वृद्धाश्रम के सब बूढ़ लोगन खातिर ओह परिवार कऽ फल बटले क कार्यक्रम चलत रहल। एही बीच में ठाकुर खुशहाल सिंह बाहर से आइल परिवार के एको सदस्य के कहल शुरू कइले– 'का आप हमके पहले कभी कहीं देखले हईं?'

एतना कहि के खुशहाल सिंह के आँख डबडबा गइल। ठाकुर साहब के डबडबाइल आँख देखि के ओ परिवार के मुखिया कहले– 'हाँ बाबा! हम रउवाँ के कहीं देखले हईं।'

एतना सुनत खुशहाल सिंह के रूलाई फूट गइल अवर ऊ मुखिया के हाथ पकरि के कहे लगले– 'हम रउआ अपने बेटा के पता देइब। रउवाँ जाके हमरे बेटवा से कह दीं कि ऊ आके हमके इहाँ से ले चले। ई जेलखाना माफिक बा। हमार इहाँ तनिको जी नाहीं लागत बा।'

बाहर से आइल सज्जन के आँख भरि आइल आ ऊ कहले कि का समय हो गइल कि आज बुर्जुग लोग ताला के भीतर जानवरन जइसन बंद कके राखल जा रहल बाटे।

खुशहाल सिंह के दिमागी हालत एकदम गड़बड़ाए लागल। एक दिन फजिरे–फजिरे वृद्धाश्रम में बनल टेलीफोन बूथ पर जाके चोंगा कान प लगा के बोले लगले– 'हलो! हम खुशहाल सिंह बोलत हईं।.... इहवाँ सब ठीक बीत रहल बा।... हँ का पूछले बेटा.... खाँसी, अब हमार खोंखी ठीक हो गइल बा।.... का–का घुटना के दरद... अब एह समय ऊहो ठीक हो गइल बा।.... तू हमार चिन्ता फिकिर मत करऽ। अब हमके बढ़िया नींद आवेले। .... नाहीं नाहीं– हमके रुपया के कवनो जरूरत नाहीं बा। तुहन लोगन दूनो परानी खुश रहऽ हमार तनिको चिन्ता मत करऽ।' खुशहाल सिंह काँपत हाथ से टेलीफोन के चोंगा रख देहलें। ई स्थिति उ अक्सर करस। सब जानेला, उनके बेटा अपने विलायती मेम के साथे गोवा में बस गइल बा। वृद्धाश्रम के सब लोग इहे कहेलें कि ठाकुर खुशहाल सिंह पगला गइल बाटें। ठाकुर साहब के हालत डूबत सूरज माफिक बा जवन डूबत–डूबत अन्हार में समा जाला। ••

❑ मालती कुंज, सिद्धार्थ इन्केलेव विस्तार,
एच०आई०जी०-2/32, गोरखपुर

नाँव

आलोक पाण्डेय

भगवान केहुओ के कबो हीन बना के, धरती पर ना भेजेलन। अपना करम–कमाई से जो केहू कवनों कमी भा बिकार के सिकार होइयो जाला, त ऊ ओकरा के निःचिते कौनो ना कौनो अइसन गुन जरूर दे देलन, जवना से ओ जीउ बेचारा के बेड़ा, भवसागर से पार हो जाव। अगर बुद्धि ना दीहन त बरियार देहिं दे दीहन, अगर हीन काया दे दीहन त गतरे–गतर बुद्धि भरि दीहन। माने ई कि भगवान केहुओ के कबो हीन बना के ए धरती पर ना भेजेलन। भवसागर के ई नाइ सरीर जवना में जगहे–जगह छेद बा, एकरा तानाबाना खटिया नियर कुछ अइसन बिनाइल बा कि एक ओरि से बिनला पर दूसरा ओरि से अपने बिनात जाला।

बचपने से सरबेस अइसन फिनुराह लइका रहे कि एकरा पर जब जवानियो आवे के भइल त बड़ी असकतियाते आइल। सतरह–अठारह बरिस के लइका जले कइ बेर दाढ़ी–मोछि बनवा लेले रहेलें सन, तले इनकर पाम्हियो ना आइल रहे, एसे ऊ कुल्हि इनके बड़ी रिगाँवऽ स, कबो–कबो त आजिज आके इंनकर अइसन मन करे कि एकदम लँगटे होके अपना पौरुष के परदरसन करा दें बाकी सरीर में रोउँवो के चीन्हा ना देखि के मन मार लेसु।

सर्वेस के समउमिरिया चिक्का, कबड्डी, फुटबाल खेलें सऽ, ईं बेचारू लइकिन सँगे गोटी, बित्ती, चिरइया ढोल खेलल करसु। एक दिन जब ई खेले में अझुराइल रहलें तले का जाने केने से, एगो पीयर, उज्जर दग–दग, गोर चटकार ससि–बरनी, सगरी सौन्दर्ज लदले, सर्बेस के सोझा आ के खाड़ा हो गइल त ए बबुआ के मुँह खुलले रहि गइल। ओह मानिनी के इनकर आँखि फार के देखल अतना बाउर लागल कि ऊ इनके, अइसन जोर से धकियवलस कि ई भर मुहें माटी ले लिहलें।

सर्बेस बेचारा केहुँगने धूरि झारत उठल। ओकरा ई बुझाते ना रहे कि ऊ रोवे, कि हँसे, कि पलटि के उहो धकिया देव? मानिनी के जोर से ओकरा ई त बुझाइए गइल रहे कि कौनो तरह के प्रतिकिरिया कइला पर अब ओके दू–तीन बेरा हरदी दूध पीए से केहू ना रोके पाई। ए लिए बेचारा तनि फरका जाके गवँ से बइठ गइल। ओने, मानिनी के ए हरक्कत से सन्न भइल सब लइकी गते से मानिनियो के अपना में मिला के, अइसे खेले लगली स, जइसे कुछु भइले ना होखे। खेले–खेल में लइकी सर्बेस के कुल गुन बता दिहली सन। खेला खतम भइल। ठेहुना के बीचे अपना मूड़ी के हाथे से बन्हले सर्बेस, के लगे जब मानिनी आइके बइठल त जइसे सब कुछ रुकि गइल– हवा, लइकिन के झुंड, सर्बेस के साँस। जब मानिनी लइकिन के गिड़ोरलस त ऊहो सब भाग के दूर ठाढ़ हो गइली स। फेरू ध लिहलस सर्बेस के, इनकर त हवाई उड़े लागल बाकी जब भय परकाष्ठा पर होला नू त ऊ चपलूसी में बदल जाला। तनि डेराते, हिचकिचात ऊ मानिनी से बोलल–

– ए जी? हम से नाको धराइब?

– ना....क....को? ई का होला?

– हें हें हें..... मने रउँवा नाको नइखीं जानत? – ईहो एगो खेले हऽ। एमें अपना कान अँगुरी के रउरी कानी अँगुरी में सटा के आ झट देना हटा के एक मुक्का जेकरा पीठी मराई ओकरा के आपन अँगुरी अपना नाक पर दन दे, धइ देबे के परेला। फेर घंटा–घंटा पर जब मोका लहे, मुक्का गमकावल जा सकेला।

नीक लागल इ खेल मानिनी के, ऊ झट दे आपन कानी अँगुरी बढ़वलस आ सर्बेस के सटावते अइसन हुमचि के एक मुक्का पीठी पर जमवलस कि ऊ फेर भर मुहें माटी ले लिहलें। लम्मा खड़ा लइकी हँसत दऊरि के अइली स। सर्बेस के उलटली स, बेचारा बेहोस रहे, बाकी तबो बेचारा अँगुरी नाकपर सटवले रहे।

लइकी पानीं के छींटा मारि के कइसहूँ उनके उठवली सऽ। तहिया से सर्बेस के ई दिनचर्या बन गइल कि ऊ मानिनी से तीन–चार मुक्का पिटाइल करसु। पिछिला पाँच दिन से त सर्बेस दिनवों गिने लागल रहले कि अब अउरी चार दिन बा, दू दिन बा आ अब त, एके दिन बा। मानिनी आपन दूनो मुक्का इनिका पीठ पर धइके पुछलस कि– का हो अउरी एके दिन? चहकि के सर्बेस बतवलन– हमनीं के नाको धरवला के बरसगाँठ।

हँस दिहलस मानिनी– तूँ जान बूझि के पिटालऽ नू?

सर्बेस गंभीर हो गइल– हँ।

– काहें?

– रउवाँ अनराज हो जाइब?

– ना.... ना.... बतावऽ ना?

अब का बोलें सर्बेस कि इनिका ओसे प्यार हो गइल बा ओहि दिने से? मूड़ी गाड़ लिहले।

मानिनी कान्ह धइके हिलवलस, 'बतावऽ ना काहें पिटालऽ? सर्बेस लजा गइल– बेइ छोड़ी ना?'

मानिनी मुसकियाते सर्बेस के कान अइँठलस– 'अरे बता द ना मोरे राजा!....'

आहि ए दादा सर्बेस के महमंड चरचराइल, 'अरे, ई हमरा मटकोड़ के साफे नेवता हऽ का?' तले मानिनी इनका पँजरी में ठोंकलस, 'प्रेमी जब नादान होला नऽ त प्रेमिको के सतावे में मजा आवेला। मानिनी एगो चूड़ी अउरी कसलस, पूछिये दिहलस दुबारा 'काहें हमसे पिटालऽ ए हमार बौड़म?'

गाँव के लइकन के हिन्दी त अपने गजब होला ओपर से अतना नजाकत से कहल गइल 'बौड़म'। भारी बरसात के सलसलाइल बान्ह नियर बहि गइले सर्बेस,

'का कहीं? गलत अर्थ जनि लगाइब, जब रउवाँ हमरा ओर आपन गोड़ दाबत मुरुगी लेखा उचकि–उचकि के मूठी बन्हले आवेनीं, त हमरी जियरा में धक्–धक् होखे लागेला। अइसन लागेला जइसे चारू ओरि अन्हार हो गइल होखे, आ एगो चान के टुकड़ा आपन सगरी चाननी हमरा पर छींटे आवत होखे, हमार देहिं गनगना जाला। देहिं क खून आन्हीं लेखा दउरे लागेला, आ ओही बीचे जब रउँवा आन्हीं लेखा दउरे लागेला, आ ओही बीचे जब रउँवा मुक्का गमकावेनीं नूँ, त हमरा कपार में अनगिनत जोन्हीं पँवरे लागेली सन।

हम पूछल चहनी बाकि...।'

'का? मानिनी उदासल पुछलसि।'

– 'राउर नाँव का ह?'

'लहरी गुरु मिसरा.....!'

पाछा से आइल भारी भरकम आवाज के सुनते मानिनी त सर् से भागल, बाकी सर्बेस के त पराने टँगा गइल। ई केने से आ गइलन ए दादा? का जाने केतना बाति सुनलन हा आ केतना ना? उनका खीसि के थाह लगावे खातिर सर्बेस तनि टहकारे बोलल– 'गोड़ लागऽ तानी गुरुजीं?

लहरी कुछु ना बोललन, चुपचाप ओही घर की ओर डेग बढ़वले बढ़ि चललन जवना में मानिनी पिछिला साल भर से रहत रहे।' सर्बेस के माथ पर पसेना चुहचुहा गइल। 'ए लहरी मिसिर के मानिनी से का संबंध बा ए दादा?'

बाबा प्रेमी–प्रेमिकारूपी नवहा छत्रियन खातिर छछाते पसुराम हउवन। जिला जवार में अइसनों केहू बा का, जे ना जानेला कि इनकरा भइयवनों के ई हियाव नइखे कि इनकरा मेहरारू के 'भउजी' कहि देव। लहरी मिसिर के ई सोझ कहनाम हऽ कि समाज में छेछड़पन के सुरूआत कौनो भी औरत के 'भउजी'कहले से सुरू होले, खुद लंपट भइला के बावजूदो, जब इनकर बियाह तय भइल त इनके अपना होखे वाली पत्नी के सतीत्व के अइसन चिंता सतावे लागल कि ई आपन नाँवे बदल लिहलन–लहरी 'गुरु'। एसे इनका मेहरारू के सब केहू का 'गुरुआइन' कहे के पड़ि गइल। गुरुवाइन के बोली आजु ले देवालियो नइखे सुनले आ एह मानिनी से कवन हितई हो सकेला इनकर ई जाने खातिर सर्बेस उनकी घर का पिछुआरा लटकल लउकी के मोट बँवरि पकड़ि के छानी पर चढ़ गइल आ देखत का बा कि ऊहे बहुरिया, लहरी से मुसुकी छोड़त, बतियावते बिया– 'जाए ना दीं जीजा जी?'

लहरी घुड्डुकलन त बहुरिया के सुर बदलल–

– 'जाए ना दीं गुरुजी बबुआ जी नउवें न पूछत रहनीं हँ, ई बतवलसि ह ना नूँ?'

गुरु गरमइलें– 'देखऽ मल्लिका, तहार बाबूजी जब भरल समाज का सोझा तहरी दीदिया के हाथ हमरी हाथ में देले रहलन त सँगे–सँगे तोहन लोग आठो बहिनियनो के हाथ हमरा जिम्मे सउँपि के सरगे सिधरले रहलन, आ तहिया से तोहन लोग सात बहिनियन के एक से एक निमना घरे भेजि दिहँनी कि ना?'

– एमें कवन सुबहा बा?

लहरी झनकलें– 'तब ई तहार बहिन 'नौमम् सिद्धि दात्री' के हमरा पर भरोसा काहें नइखे? एके तहरा किहें एही खातिर हम पहुँचा दिहँनी कि ललित कुमार जबले खाड़ी में बाड़न तले ई तहरे किहाँ रहो, तोहरो मन लागल रही आ इहो कुछ खाए–बनावे सीख लीही।'

तले जोर से आवाज आइल– 'भदाक्!' देरी से छान्हीं पर लटकल सर्बेस जब धोइँ दे भुइँयाँ गिरल त चिहुँक गइल लोग। मानिनी, बड़ी तेजी से ओह आवाज का ओर लपकल, लहरी आपन कुर्त्ता काढ़ि देले रहलन आ जबले बहुरिया, मल्लिका कुरूता अपना कोठरी में से ले ना अइती तले लहरी बहरा निकलियो ना सकत रहलन। मानिनी झटकले पहुँचलि, सर्बेस ओकर गोड़ छान लिहलस– 'बचा लीहीं सीधीदात्री जी?' बानर के जनम पाईं कि फेर कबो.... छान्हीं पर चढ़ीं?

लहरी गुरु भितरे भइल अड़िंचलन– 'का गिरल बा रें?'

मानिनी ओतने टनकार बोललि– 'कुछु ना लउकी ह चूअल बा महाराज।'

लहरी हँसि दिहलें– 'ले आवऽ कोफ्ता बनी।'

सर्बेस के जीव में जीव परल– 'ई गुरुजी राउर पाहुन हवन का?'

– 'हँ'।

सर्बेस दाव लहवलस– 'राउर नाँव केतना सुघर बा जी सुनते हियरा में भगति उपट जाता– सिधीदात्री जी!'

मानिनी कटलस– बेइ, हमार ई नाँव थोड़े हऽ।

लहरी दहड़लें– त का हऽ?

मानिनी घघोंटलस– 'बतवनीं ह ना कि लउकी चुअल बे?'

लहरी के माथा भनभनाए लागल– 'लउकी का आम, अमरूध हऽ कि चूई?'

मानिनी के सह पाइके– सर्बेसवा ढिठाई प उतरि आइल– 'हँ, हमरी गाँव में लउकी आमे–अमरूध नियर चूवेले। रउरा कौनों एतराज?'

बहुरिया जोर से खिलखिलइली, मानिनी के करेजा 'धक्क' हो गइल, लहरी सोच में पड़ि गइलें? आठ–आठ सालियन के एकलौता जीजा लहरी के ऊ आतंक रहे कि पचास–पचास गाँव के नवहा, जब कवनो लइकी की ओर आँखि उठा के देखे लोग त माई त माई, बाबुओ ले ई कहि के घिरावसु लोग कि सुधर जा बेटा, ना त लहरी गुरु से कहि देब, फेर जिनगी कुँवारे बीति जाई। ओ लहरी के ई तीन दिन के लउंडा घघोट दिहलस हो। हमार सालियो कवन दूध के धोवल बिया लउकी चुअला के बहाना त एकरे नु गईल रहल ह? मने आगि दूनो ओर बरोबरे लागल रहे। एने लहरी से लड़ि अइला के समाचार सुनि के सर्बेस के बाबा सहमि गइलें।

ऊ त लहरी से कहि के अपना नाती के बियाह कहीं ना कहीं करावे के सोचत रहलें। त ई का जाने कवना इरिखे उनहीं से लड़ि आइल बा। बाबा लगलें सर्बेस के मारे। मार के हाला से ई त बुझाइए गइल रहे कि ऊ लहरी के सुनावत ढेर रहलन। मानिनी का भीतर हुलास जोर मारे बाकी गुरु के टस से मस ना भइला के चलते बेचारी आपन मन मारि के रहि गइल। सर्बेस के माता जी केहूँ तरे बाबा से बचवली।

होत भिनुसारे जब लहरी लोटा लेके खेत का ओर चललें त मानिनी सर्बेस के कोठरी की ओर लपकलि, बेचारा नाके पर अँगुरी धइले सुतल रहे, ओके सूतल देखि के जब ऊ लवटे लागल त सर्बेस कहँरलस– 'नाको ना बोलब का?'

– 'का बोलीं, जब नाके पर अँगुरी धइले बाड़ऽ। साँच बतावऽ बाबा ढेर मरूवन का?'

– 'आरे जब पुछनिहार रउँवा नियर होखे त कवन परवाह?' 'ए जी! आपन नउँवा बता दीं ना! हमरो तोख हो जाइत।'

– 'भक्क!'

कहि के भागल चहलस त सर्बेस बाँहिं पकड़ लिहलस। मानिनी नाकि ध लिहलस सर्बेस के– 'जाए. .. द राजा, बाभन के पेट भरे में समय लागेला, खाली होखे में ना। काल्हु से बतियइहऽ ना जेतना मन करे ओतना।'

प्रेमो एगो बड़ी अजीब दसा ह। का जाने कवन मुरुख कहि गइल कि 'बैर प्रीत मधुपान... जाने सकल जहान।।' इ दूनो ओर से प्रगट होइयो के जब साकार ना होला न, त पगलने के दसा हो जाले, 'हम' का

जाने केने बिला जाला आ 'ऊ' चहुँओर पसर जाला। उठत–बइठत–जागत–सूतत–चाल–चलन–खान–पान –रहन–सहन अइसन हो जाला कि देखनिहार देखिए के जान जाई कि ई सरीर केकर हऽ आ परान केकर।

आजु मानिनी मिले आई, ना जाने कहाँ खो गइल सर्बेस। वादा आ इरादा के का ठेकाना, बहेंगवा बादर हऽ, कतहीं गरजी कतहूँ बरिसी। तले पीठी पर गमकल दुग्गो मुक्का– 'नाक्को?'

भहरा गइल सर्बेस त मानिनी टिभोली मरलस– 'जब दूगो हाथ के भार पीठी पर सहाते नइखे त चूड़ी कंगन के भार छाती पर कइसे सहबऽ?' जानऽ ताड़ऽ काल्हु मल्लिका दीदी आ गुरु जी में जमि के तकरार भउवे?

सर्बेस अइसे चिहुँकल जइसे बैल के सही जगह खोदा गइल होखे, मानिनी बेपरवाह कहत चलि गइल– 'हमरा बियाह के ले के।'

गुरु जी हमार बियाह कहीं, करे चाहऽताड़न। पिनिक के भोरहरिये पयान क दिहुवन कि 'जो तोहँन लोगन के आपने वाली करे के बा त हम जा तानी।' अब हमार बियाह ओइजे होई जहँवा दीदिया चाही।

सर्बेस के मुँह से त आहि निकल गइल– 'तब हमार का होई ए ठाकुर जी?'

– 'का मतलब?'

सर्बेस बरबराइल – 'का पर करीं सिंगार पुरुष मोर आन्हर, जब इहें का अइसे कहऽ तानीं कि का मतलब त बताईं। हम साल भर, से का इहे सुने खातिर मूका खात रहनीं हँ जी?

मानिनी झँकझोरलस– 'ए! का भइल?'

– 'कुछु त ना?'

– त? 'अब हमार का होई' कहलऽ ह नूँ?

– 'हँ?'

– 'त का माने बा तोहार?'

– 'का रउँवा साँचो नइखी बुझले आजु ले?'

– 'तबे नूँ पूछऽ तानी'

सर्बेस हिमति देखवलस – 'हमके रउँवा बिना कुछु नीमन ना लागेला। आ हमार दुर्भाग देखीं कि हम राउर नउँवो ले नइखीं जानत?'

– 'अतना प्यार करेलऽ?'

– 'प्यार के कौनों नपनो होला का? सर्बेस झनकल।'

– 'तनकी सा बतावऽ', चोन्हा करत मानिनी पुछलस। फेरू गम्हीर होके बोलल...

– 'ई जनला के बादो कि हम ओह घर के लइकी हँईं, जेकरा घर से तहरा सात पीढ़ी के पानी के छुअउवल ले नइखे, तूँ हमसे प्रेम करे लऽ?'

सर्वेस सूत पकड़े चहलस– 'हमके आपन नाम बता दीं, हम ओही के सहारे जी लेइब।'

– 'प्रेम करेलऽ आ ओकरा पहिले शर्त ना जानेलऽ?'

– 'का?'

– 'प्रेम ऊ कस्तूरी ह, जवना में एक दुसरा के बीचे कौनो ना कौनो महक भुलाइल रहे के चाहीं, हमरा–तहरा प्रेम के बीचे अपना–अपना नाम के भुलाइल रहे द, ना हम तोहसे तहार नाँव पूछब आ ना तूँ हमसे हमार।'

सर्बेस अंतिम जोर लगवलस– 'त का हमनी के कबो ना मिले के?'

– 'जो प्यार सच्चा होई न, त जरूर मिले के।'

होत बिहाने लहरी गुरु के चल गइला से सर्बेस के बाबा चिंतित हो उठलन। ऊ अनुमान लगा लिहलन कि लहरी, अब अपना होती ई शादी कबो ना होखे दीहें। सर्बेस के माई ई सलाह दिहली कि नरेन्दर पांड़े के धइल जाव ऊहो लहरी ले कौनो कम जखाड़ बाभन थोड़े ना हउवन, उनुसे संपर्क साधीं आ कोसिस करीं कि एही लगन बितते भा जेठ ले, बियाह हो जाय आ लहरी के मामर हेठ हो जाव। नरेन्दर पांड़े एकइसवीं सदी के बड़ी जबर अगुवा उपराइल बाड़न, जवानी बीतले जब से बीस बरिस हो गइल, तब से राति के भोजन कबो अपना घरे नइखन कइले, अगुवाइए में इनकर दिन–रात बीतेला। बाबा, जब इनसे लहरी वाली बाति बतवलन त 'भले भवन अब बायन दीन्हा। पावहुँगे फल आपन कीन्हा।।' के संकलप ले के नरेन्दर पाँड़ें बाबा के भरोस दिहलन कि राउर आसीर्बाद आ गनेस जी के किरिपा से ई लगन हम बाँव ना जाए देब।

सुदिन, लगन, गनना, बनना आ कनिया ठीक कके पखवारा बितते नरेन्दर, बाबा के सोझा हाजिर हो गइलन। माता जी जब सर्बेस के ई सगरी कांड बतवली त सर्बेस रो पड़ल। माता जी से आपन दिल के बात बतावे चहलस, बाकी ऊ जानत रहे कि मरियो जाई तबो ओकर मानिनी से कबो बियाह ना हो पाई। आजु ओके लागत रहे कि ओकरा में पुरुष के लक्षण नइखे। ना त ओके बिद्रोह क देबे के चाहत रहल ह। बाबा आ माताजी पर लहरी के आतंको देखि के, ओकर हिम्मत ना बनत रहे। एही ऊहापोह में ऊ पड़ल रहे कि ओकरा पीठी पर एगो जोर के मुक्का पड़ल– 'नाक्को?' दू.... तीन.... नाको.... नाको.... ना सर्बेस हिलल, ना नाकि

पर अँगुरिये धइलस, पत्थर नियर जब टस से मसो ना भइल त मानिनी दुलराइ के पुछलस– 'का हो गइल हो?' सर्बेस के डबडब आँखि देखलस त चौंक पड़ल – 'आरे.... का भइल हो?'

– 'हमसे नाको अब कटा लीं? ई पीठि अब राउर ना रहल।' सर्बेस उदास होके बोलल।

मानिनी के धड़कन से सर्बेस के सरीर काँपे लागल– 'काहें?'

अभी त हम तहके देखि के मुसकियइबो ना कइनीं, तले लोग रोवावहीं लागल?

चीत्कार क उठल मानिनी। जब चोट मर्म पर लागेला न, त ओकरी पीड़ा से कि त मौन उपजेला आ ना त मुखरता आ जाले। तबे त राधा मौन साधि लिहली आ कृष्ण मुखर हो गइलें। एइजा सर्बेस चुप्पी साधि लिहलस आ मानिनी बिफर पड़लि– 'एही से सोहागिन अपना पति के नाँव ना लेली सऽ। ई संसार अइसहीं निरदयी ना कहला, जो जान जाव कि तहके 'ई' पसंद बा त कुल्हि दे दी बाकि 'ई' ना दी।'

मानिनी मरुआइल अपना घर की ओर चल पड़ल, एकाएक घूमलि आ चीख के बोललि– 'सुल लऽ कि हमार नाक्को काल के कटारियो से ना कटी।'

सर्बेस मुर्छित हो गइल रहे। जब ओकर आँखि खुलल त माता जी बतवलीं कि तहरा पर कौनो अप्सरा के छाया पड़ल बा, ए बबुआ तनि देखु त, पढ़ि के बताऊ तोरा कनिया के का नाँव ह?

सर्बेस लगन पत्री घुमा के फेंकि दिहलस।

भोजपुरिया समाज में मउवति टलि सकेले, तय बियाह ना। मानिनी फेर कबो ओ गाँव में ना लउकल। सर्बेस त ओ दिसा की ओरे देखले छोड़ दिहलस, जेने मानिनी के घर रहे। तय तिथि के लगन–बियाह सम्पन्न हो गइल। कनिया आ गइल, हीत, मीत जहाँ के तहाँ भागे पराए लगलन। सरबेस मानिनी के घर के कोनचारा ओहि लउकी के जरी बइठ के लागल सोचे।

ऊ बेर–बेर कहत रहली कि 'प्यार सच्चा होई त, जरूर मिले के' त का हमनीं के प्यार सच्चा ना रहें? ई प्यार होखबो करेला कि खाली एगो कोरा कलपना ह? का प्यार में कौनो सक्ति5 ना होला? ठीक बा कि हम कायर बानीं बाकी ऊहों कुछु ना कइली। का करीं? जाने दे दीं का? फेर माई के का होई, बाबा के ओ हुलास के का होई जवन हमरा बियाह में देखवलें हा। कनियवो के का दोष बा? ए भिरूग बाबा अब हम का करीं? तले का जाने केने से आके नरेन्दर पांड़े हुलकवलें सर्बेस के– 'ए मर्दे पुरा बोके हउवऽ का? ओ लउकिया का झुटवा में का करताड़ऽ? जा घरवा माताजी बोलावऽताड़ी।'

सर्बेस घरे गइलन त नाउन उनके कोहबर में ढुका के बहरा से सिकड़ी चढ़ा दिहलस।

सर्बेस कनिया के सोझा पड़लें त ओकरी आगा जाके बइठि गइलें जइसे थाकल–हारल सिकार, सिकारी के सोझा थथमि जाला। ओह कोठरी में दूगो बेमेल साँस के अलावा कुछु ना सुनात रहे। थोरी देर बाद कनिया जब पानी पीए खातिर उठलि त ओकर नजर सर्बेस पर पड़ि गइल, ऊ भरभरा के गिरलि, अकबका के सर्बेस ओके धइलें, तनि देर ले ऊ इनसे सँपटि गइल, ई फरका हटे लगलें, त ऊ इनके चभक के धइ लिहलस। सर्बेस तनि कनमनाए लगलन त ऊ इनकर मूड़ी नवाइ के बोलल, 'नाक्को?'

घंटन फेर रोवलन स, हँसलन स, लपिटइलन स, जब कुछ मन थिर भइल त फेर उहे सवाल सर्बेस पुछलस– 'अब त आपन नाँव बता दीं?' मानिनी बिहँसल– 'बिहने कार्ड पर पढ़ि लेब ना।'

– 'मने रउवाँ ना बताइब?'

– 'आपन नाँव जल्दी अपने ना लीहल जाला।' ••

❑ ग्राम-पोस्ट-रतसड़, जिला-बलिया-277123

रंग में भंग

कन्हैया पाण्डेय

दीनदेव बो पंडिताइन के आँखि लोरे डबडबा गइल। केतना उत्साह आ मेहनत से दलंगरा आँगन गोबर–माटी से लीपि के फरछिन कइले रहली। बिना गोतिन–देयादिन के दाज खोजले, नहा धो के सबेरही पुआ–पूड़ी–गोझिया छानल–बनावल शुरू क देले रहली, बाकिर हाइ रे संजोग, अपने बनावल पकवान खाए के मवस्सर ना भइल। उनकर पूरा परिवार उपासे सुतल।

दिनहीं उनकर देवर रामदेव पटना से सब सवांग खातिर कपड़ा लेके उतरल रहलें। कहिये से उनकर आवे के इन्तजार होत रहे। आँगन में ढुकते लरिका सेयान माटा के झोंझ नीयर टूटि परलें। कुल्हि भाई के मिलाके छोटे–बड़े दस–पन्द्रह गो लरिको–लरिकी त रहलें। सब अपना पसन्द के कपड़ा चुने–बीने लागल। जइसे बुझात रहे, कवनो फेरी वाला कपड़ा उतरले होखे।

राजेश अपना पसन्द के सियल–सियावल रेडीमेड कपड़ा उठवलें, दिनेशो के ओही जींस पाइंट पर नजर रहे, ऊ लपकि के रजेश के हाथ से कपड़ा छोरत कहलें– 'ई तोहार ना ह। तोहरा खातिर कुर्त्ता–पायजामा आइल बा' – कमजोर राजेश सुसुके लगलें आ चाचा के लग्गे जाइ के कहलें– 'भइया। कपड़वा छीनि लिहलें।' 'काहें?' चाचा पूछले।

– कहऽ तारे कि तोंहरा खातिर कुरुता आइल बा। 'हम कुर्त्ता ना लेबि। हम्हूं जिंस लेब।' राजेशवा बोलल

– 'जिंस लेबे? ससुर तू ना। जींस लेबे के बा, त जो अपना बाप से किनवा लें' – एतना कहि के रामदेव अपना भतीजा रजेश के कान अइँठत दू तमाचा ध राइ के ढकेलि दिहले। 'ससुर जींस पहिरिहें?' लरिका के रोवल देखि के दीनदेव बो अपना लरिका के दुलारे–पुचकारे लगली।

दुपहर से बेरा गिरि गइल रहे। सब लरिका फरिका आपन–आपन कपड़ा पहिरि के संगी–साथी के संगे अबीर–गुलाल लगावे निकलि गइल रहलें। दीनदेवबो के सासु पियर पंजी हाथ में लेले उनुका लग्गे पहुँचली, 'तहरा आपन कपड़ा जाइ के ना ले लेबे के चाहीं? हीत–पाहुन नीयर बइठल बाड़ू, कवनो नोकर ले–आके तोहरा हाथ के दीं, तब लेबू?'

'हम का करब कपड़ा। हमरा कपड़ा बाटे। लरिका त कपड़ा लेबे गइल ह तऽ मझिलू दू चटकन धरा दिहले ह।

– ई बदमाश! दिनेशवा वाला कपड़ा नूं माँगत रहल हऽ। त ऊ कइसे मिली? जानते बाड़ू ओकरा बाप के। अब्बे सब लगिहें मारे गरिआवे?' सासु समुझावत कहली।

– 'आ बड़को, तूँ भा तहार लरिका उन्हन के दाज खोजिहें, त तहन लो के मिली।'

– काहे ना मिली माई जी! ई घर के सवाँग ना हवे स, कि इन्हन के बाप झिंकड़ा कमाला? – दीनदेव बो रोसिआ के बोलली। – 'अब्बे देखी ना। हमरा खातिर खाँखर पंजी रउवां ले आइल बानी आ देआदिन लोग छपावल साड़ी लिहल हऽ। एक्के घर में दू किसिम के बेवहार।'

– देखऽ बड़को? हम कहब कि तूं दुख–सुख सहि के आपन दीन काटु। दाँजा–दाजी मति करु। ना तऽ अलगिया दिहें स तऽ दूगो दाना मिलल मुसकिल हो जाई, भीखि मांगे के परि जाई तोहरा?

– 'काहें? हम निखुरखी बानी का।' – दीनदेव बो जबाब दिहलीं।

ठीक एही समय रामदेव हाथ में दू गो मुर्गा उलटा टँगले अंगना में आ गइलें– 'भउजी! लऽ हई मुर्गा जल्दी बनावऽ तऽ' – रामदेव कहलें।

– 'हमसे ना बनी।' – दीनदेव बो जबाब दिहली। 'एही खातिर हम बानी। हम केवनो लउँड़ी हवीं? खटत–खटत सबेरही से तिजहरिया हो गइल। मुँह में अनाज के एगो दाना ना गइल।'

– काहें भउजी? नाराज बाडू का?

– हँऽ हो हमार बाति सुनऽ – उनकर माई बीच में टोकत कहे लगली। – 'जब से तूँ राजेशवा के दू चटकन मरले बाड़ तबे से नाराज बाड़ी। हई सड़ियो नइखी लेत।'

– ओ! त ई बात बा। छोड़ऽ–छोड़ऽ। जा, हई चुपचाप मुर्गा बनावऽ। ना तऽ अब्बे लथारि–लथारि पिटइबू। – रामदेव खीस में गुरनइले।

– 'हम ना बनाइब। अवरी लोग इहाँ हितई करे आइल बा कि हाथ में मेहंदी लगा के बइठल बा।' – जबाब सुनि के रामदेव के खीसि जइसे अवरी लहकि गइल। ऊ आव देखले ना ताव, लपकि के भउजाई के झोंटा पकड़ि के द्रौपदी लेखा घिसिआवे लगलें। दीनदेव बो जोर जोर से चिचियाये–फेंकरे लगली। घर के सब लोग आन्हर बनल देखत रहे।

मेहरारू के पिटाई आ बेइज्जती उनका मरद से जब ना बरदास भइल त बोल परले– "बस बहुत हो गइल अब, ई अन्हेरिया लउँड़ी ना हियऽ! तूँ आपन माल असबाब अपना लगहीं राखऽ, एही छन, एही घरी हम एह परिवार से आपन नाता तूरत बानी।"

– 'पगलाइल बाड़ऽ का? तिहुवार का दिने अलगा–बिलगी के बात कढ़ावत बाड़ऽ!' रामदेव के माई बोलि परली।

– 'अतना फिकिर रहल हा माई, त अबले काहें चुप खड़ा रहलू हा? अब हमार फैसला इहे बा।' दीनदेव जबाब दिहले। फेरु अपना मेहरारू के बाँहि पकड़ के उठवले आ चुपचाप अपना कोठरी का ओर चल दिहले।••

❑ आवास विकास कालोनी, हरपुर, बलिया

लघु–कथा

नया लेखक के किताब

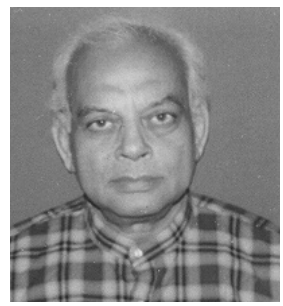

☑ राजगुप्त

बड़ी इज्जत मरजाद बा लेखक बनला में। आम के आम गुठलियो के दाम। नाँव गाँव के साथ इज्जत मरजाद। कवनो नेता से कम का कहाई? कमल कुमार के लिखे के सवख आ फेरु रपटा पड़ि गइल। लिखत–लिखत लिखाड़ हो गइले। पत्र–पत्रिकन में छपे लगले। साहित्यकारन से मेल–जोल बढ़ल, साहित्य का जलसा–गोष्ठी में जाये लगले। कईगो साहित्यकार कमल के सिखवनिहार गुरु हो गइले। गुरु मंत्र मिलल कि जदि साहित्यिक समाज में अपना के स्थापित कइल चाहऽ ताड़ऽ त जेतना जल्दी हो सके एगो किताब छपवा लऽ! गुरुवन के बाति सुनि कमल का कान्ह में पाँखि लागि गइल। पत्र–पत्रिकन में छपल रहे ओके जोड़ि बिटोरि के आ कुछ नया मिलाइ के एगो किताब छपवावे के सोचले।

किताब छपवावे के पहिले एक तोर सुधरवावे के जरूरत पड़ी। से बाति सोचि क गुरु साहित्यकारन किहाँ दउड़े धूपे लागले। तगादा आ चप्पल घिसइला के बाद जब सज्जी गुरु साहित्यकारन के शुभकामना–सम्मति जुटल– त किताब मोटहन हो गइल। पच्चीसन हजार का ऊपरे खरचा गिरल। ओखर में मूड़ी परल त, मूसर के का डर? किकुरि के रहि गइले बाकि कुछ बोलले ना।

किताब छपला के बाद परचार खातिर जलसा के बेवस्था करे के पड़ेला। जइसे लड़िका के जनमला के बाद सतइसा भा छठिहार। मकान बनला के बाद गृह प्रवेश। कार्ड छपवावे खातिर अपना साहित्यिक संस्था से मश्विरा कइले। संस्था के अध्यक्ष पाँच सइ न्योता के कार्ड छपवावे के राय दिहले। कहले – 'न्योता से पता चलि जाला कि जमात में एगो अउरी साहित्यकार अपना कृति के साथे आ गइल बा।' जतने करिऽ बँटी, ओतने लोग जानी।

एतना के बाद माइक, कुर्सी, जलपान आ बड़का हाल के खरचा ऊपर से मुख्य अतिथि के आवे–जाये के खरचा। आखिर सइ सज्जन जुटले। जेकरा हाथ में माइक मिलल बहत–गंगा में हाथ धोवल। जमि के फोकट में किताब बँटाइल। लेखक कमल कुमार अब कपारे हाथ धइके गुनावन करत बाड़े कि काहें अभी ले एकहूँ किताब बिकाइल ना। ••

❑ राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया, उ०प्र०

''पाती'' के पछिला पन्ना

(''पाती'' के अंक - 24, बरिस -जून, 1998)

अशोक द्विवेदी के कविता

(एक) - चउकठ के भीतर

एगो चउकठ का भीतर / बसल रहे जेकर संसार
घर क अँगनवे रहे / जेकरा खातिर दुआर
हँसी-रोवाई सनल
चुहल-चौकड़ी भरल
बाकि बन्हल (भा बन्हाइल)रहे
मरजादा के चउकठ का भीतर ।

मरजादा खाली ओह बेटी के
जेकर सुघर-सलोना मुँह/बात-बेबात
लाजे-सँकोचे लरुआ जाय
भरल-पुरल गदबद देंहि
मिसिरी घोराइल बोल पर/महुआ -फूल
अस ढुरुकि जाय
आ इ ढुरुकले त चीन्हा रहे
जइसे ओकरा शील-सुभाव के ।

मरजादा क कुछ नेम-धरम
डाँड़-सिवान होला तऽ
पालन करहीं के रहे ओके/जइसे
'जोर से ना बोले के'
'ढेर तेज ना चले के 'छुछुन्नर अस एने-ओने
ना घूमे के ! वगैरह वगैरह
एही से कबो-कबो दिक् बरे ।
छत पर ऊपर चढ़ि के चिरई उड़त देखल
भा भटर-भटर ताकि के
टोल-परोस क लिहल सुनगुन
भा अउँसाइल कोठरी के खिरिकी खोल के
बहरवार के हवा खाइल
मरजादा क डँड़ार फानल मनाय
ई डँड़ार हमेशा ओके धिरावत-डेरवावत
साजत रहे लाल-आँखि गुड़ेर के
साजत रहे ओकरा रहन-चाल आ सहूर के !

बहरा का मुदई ले ढेर/खतरनाक होला
जानल-चीन्हल हीत/ईहो कहल जाय

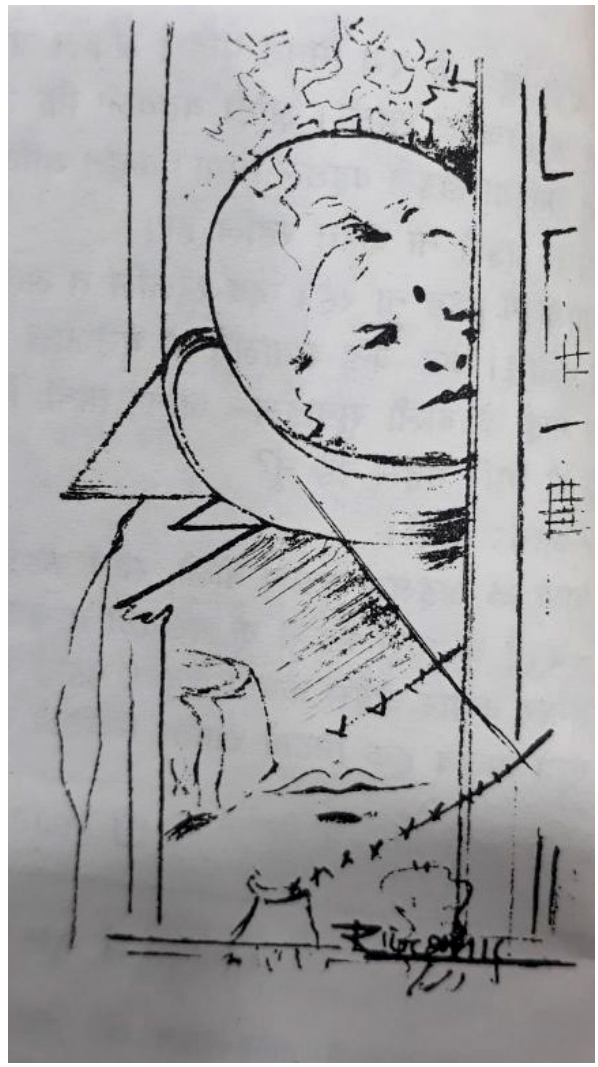

चउकठ के भीतर/कि लड़किन के
सजग आ छनकल रहे के परेला
कि कब कहवाँ से निकलि आई
कवनो दनवाँ-दइत आ टीप दी नरेटी
भा डँसि जाई दलानि का भितरी ढुकल
कवनो करइत साँप
ओकरा त ओघरी पता ना रहे
कि ई सब होला आ अचके, अनचितले
त एकरा बारे में का सोचे ?
का सोचे ओकरा बारे में, जवन सोझा नइखे आइल,
जवन ओकरा सँग कबो नइखे घटल/बाकिर भय त
बइठले रहे गेंडुर मरले भीतर
सयान भइला ले चिहुँकि परे
तेलचट -गोजर कुछऊ देखि चिचिया देव
ए माई !...माई रेऽ...!
माई जइसे सबले बरियार अंग-अलम होखे
जइसे माई आई, त पराइ जाई
उ अचके पैदा भइल मुसीबत
जवना का डरे अउरी फइल जाव ओकर आरत
बड़वर आँखि
कोना मे पंजा पर उचकल ओकर गनगनात देहि ।
उ नान्ह -बार बुचिया त रहे ना
कि लुकवा लेइत माई कोरा में आ
झुठहीं डाँट दिहित देवाल पर चलत
कवनो कीर-फतिंगा, बिछतुइया के ।
फेरु पीठ थपथपाइ कहित
''एतना डेराभुत ना होखे के हमार बाछी !
अभी त बहुत दुनिया देखे के बा तहरा !''

ऊ दुनिया चाहे जइसन होखो/कतनो बड़
बाकिर रही एही से कुछु मिलत-जुलत
बाछी का मन में होखे ओकर रूप रचना
ओह दुनिया में घर क एगो चउकठ रही
एगो चहरदिवारी रही/बनि के मरजादा
भले ओकरा भितरे से निकरि आई कहियो
इन्सान का भित्तर समाइल दइत
राछछ, आ तार-तार के घाली ओकर आँचर
चीभि घाली मय खून ओकरा देह के
इहो हो सकेला कि
बेबोलले, बतवले ढुकि आवे
कवनो करिया करइत आ डँस जाव ओके
चउकठ का भीतर । ••

(दू) ''चउकठ का बाहर''

चउकठ के बहरा
निकल त अइलू पारबती
चार घरे घूमि के जीति गइलू
चुनाव 'परधानी' के।

पारबती! तूँ ऊहे बोलबू
जवन तहार मरद तोहसे बोलवाई
ऊहे लिखबू, जवन लिखवाई
कवनो मेहरारुओ के होई अगर
कवनो फरियाद
त ऊ तोहसे पहिले,
तोहरा मरदे किहाँ जाई।

चउकठ के बहरा
तूँ निकलि त अइलू पारबती
बाकि अपना मने ना
मरद का दबावन
आखिर इहो त रहे एगो किसिम के मरजाद
कि मरद जवन कहे...
ओके माने के चाही
पति के परमेस्सर जाने के चाही।

चउकठ के बहरा तूँ
निकल त अइलू पारबती
बाकि तूँ अपना आँखी ना देखबू
अपना मने ना सोचबू
तूँ खाली टीप देबू
भा लिखि देबू नाँव/मरद का बतावल जगह पर

पारबती! ई राजनीति हऽ
ए गंदा खेल में
तूँही चढ़बू हरदम चंग पर
तूँही रहबू मोहरा हर धड़ी
भीतर भा बाहर
'तूँ' पिटइबू भा तोहार 'मरजादा'
बात एकहीं बा! ••

(दू) स्टेटस

आखिर ले आवत-आवत बदलि गइल
उनकर कौल-करार
उनके लइकी ना
नया माडल के कार चाहीं
सँगे-सँग उनका सपना के पूरा संसार
जवना से ऊनकर स्टेटस बनो !

जइसे कि हम अपराधी होखीं
लइकी जनमवला के
आ उनका चाहभर रुपया ना कमइला के ----
ऊ लगावेलन हमरा पर डाँड़
जुरमाना आ ब्याज में कई बरिस के भोग
'दहेज दियाई' करज भरला के ।

बुझला बेटी क बाप निरा गँवार
अपराधिये होला
आ बेटा के बाप परम बिद्वान जज
ऊ खाली फैसला सुनावेला
केस के बिना सुनवाई कइले ।
कटघरा का अन्दर खड़ा
भितरे--भीतर किरिसत, डहुरत
निहँसि जाला बेटी के बाप
एह निर्मम न्याय पर ।

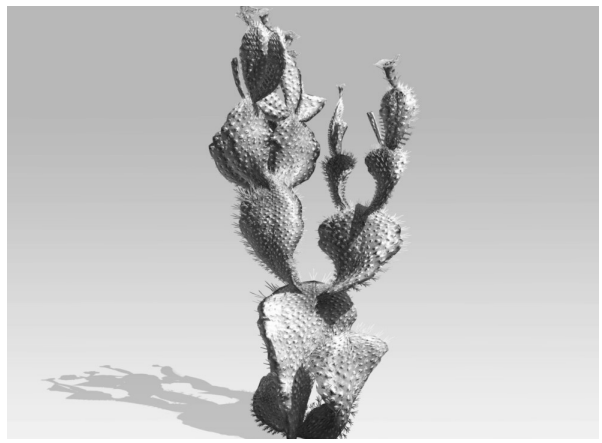

बिधाता अगर मिलितन त पुछतीं
कि इ कवन विधान हऽ तोहार?
आ अगर मिल जाइत कवनो
सिद्धि के शक्ति त दिहतीं सराप
'' जा ससुर ! तोहऊँ पाँच लड़किन के बाप होखऽ
एही समाज में आ तोहके
दू जून के रोटी , तन ढँपले के कपड़ा आ
एगो आश्रय का छत का अलावे
कुछ ना जुरे !
ना कार ,ना कार का पाछा के संसार
आ ना कार से बने वाला
स्टेटस । ••

गजल

जान के दुनिया अगर अझुराय तऽ फिर का कहीं ।
जाल फइलावे , खुदे फँसि जाय तऽ फिर का कहीं ।

ताल-जल तूँ हंसिनी आ नेह-बान्हल हंस हम
रात के सपना फुरे फरि जाय तऽ फिर का कहीं ।

आग पानी धूरि में तनिके हवा, तनिके अकास
बात सहजे बा मगर न बुझाय तऽ फिर का कहीं ।

आखरे आखर अढ़ाई के पढ़त कबिरा गइल
पोथियन के ग्यान जब छरियाय तऽ फिर का कहीं ।

सोत जीवन का नदी के बच सके, एकरा बदे
नाँव हमरो गर फना हो जाय तऽ फिर का कहीं । ••

ममता के तेयाग

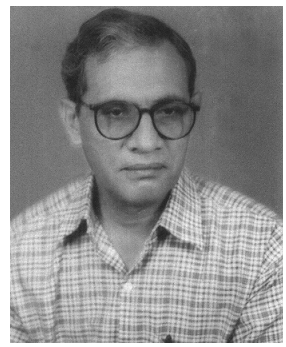

कृष्ण कुमार

सवाँग के धकिआवल
ओह दिन
ना बरदास कइली सोनामती
सोना के
निम्मन कपड़ा-जूता पहिरवली
ढेर सुन्नर लागत रहे बेटा
सोना के दोष अतने रहे कि
आपन दूध पिआ के
चार बरिस पलले रही सोनामती
जागे वाली राति
आ दिकदारी वाला दिन
अब ओकर गुजरि गइल रहे।
बाकिर ओह दिन नाचत खरवरिया में
साड़ी के अँचरा से कपार तोपली
बेटा के हाथ पकड़ली आ
सवाँग के खुशी खातिर
घर से बहरी निकल गइली सोनामती
ना कवनो पड़ाव
न कवनो ठेकाना
ना कवनो तदबीर
के पता रहे सोनामती के
ऊ घर से किरिया खा के निकलल रही, ओह दिन

कि आजु कुछुओ होई बाकिर
आखिरी दम तक तनिको कड़ेरई ना करबि
निम्मन-बाउर ना कहबि
ना मारबि अपना सोना के।
बाकिर लइका के मन बादशाह
ना मानल अपना हरकत से
अपना आखिरी जतरा के पेयान
गांव के गली में पहुंचते
दोकान लउकते घिघिआये लागल
बिसकुट-लेमचुस-बैलुन खातिर
अउँजाइल मन कड़ेर हो गइल
सोनामती के।

बतकही से धंसोरली बेटा के-
पहिले बइठल जाई बस में
फेरू सभ चीज किनाई....।
बस-पड़ाव तक गँवे-गँवे अइली
सोनामती
बाकिर बेटा पतौखिआइल
आखिर में बस आइल
सोना के साथे सोनामती
बस में बइठली।

सोना एक बेर फेरू कहलस-
मम्मी हमनी के कहवाँ जा तानी जा...?
बिना तजबिजले अनयासे
मुंह खुल गइल सोनामती के
पप्पा लगे....।
सोनामती के मुंह निरेखत
फेरू सवाल दगलस सोना-
कवना पप्पा लगे....?
धीरज के बान्ह टूटल
सोनामती के, डपटली-
खबरदार...!
अगर फेरू बोलबे
त कान खोलि के सुन ले
कवनो चीज ना किनबि।
सोनामती के बात के धमस से
डेरा गइल मासूम
चुप हो गइल सोना।
मलियाबाग चौराहा पहुंचि
बस रोकववली सोनामती
चौराहा के धुमगजर
गाड़िन के रेलम-रेल
दोकानिन के भीड़-भड़ाका देखि
हँसत रहे सोना

सोचि लेलसि
एइजा ढेर चीज किनवाइबि
मम्मी से।
आपन सोचल काम करे के
कसमसाये लगली सोनामती
बेटा के सवाल रहे
दिल बइठे लागल
हालत खराब हो गइल
घिध्धी बन्हा गइल
कंठ सूखे लागल
धीरज आ संयम
जबाब देबे लागल
माथा आ चेहरा
पसेना से सराबोर हो गइल
बेहूदा इरादा भुलवावे के
नाकाम कोशिश कइली सोनामती
ततलबजे दोसरका सवाँग के
तातल बतकही इयाद परल
इयाद रखिहऽ-
आजु दुपहरिआ में घरे आईं
त ई नालायक लइका
तोहरा लगे ना लउके के चाहीं।
तजबिजली सोनामती
ठीके कहले रहे
काहें राखी दोसरा के बेटा?
कहीं जे इहो सवाँग छोडि दी
तऽ कहवाँ के होखबि
ना घर के, ना घाट के
जिनिगी अबहीं लमहर बा
दिनहीं में तरेगन लउके लागी।

दिल के ढाढस बन्हली
मन-मिजाज कड़ा कइली
अपना के सम्हरली आ
दउरा में डेग डालत
चौराहा से थोरे पुरूब अइली
सड़क धइले छेरा नदी के पुल पऽ
सोना के साथे सोनामती
पुल के एह पार थथमली
सोना के चुम्मा लेली आ
सड़क के ओह पार
मिठाई के दोकान देखावत
इशारा से बतवली सोना से
हई रोपेया होह आदमी के दे दिहऽ
आ कहिहऽ, मिठाई दे दीं।
छोटी-मुटी सोना के
औकाते कतना....?
कबो कवनो चीज ना किनले रहे
घिघिआइल-
मम्मी तुहूँ चलऽ
दूनों आदमी चलीं जा।
सोनामती डपटली-
'हम एहिजे खाड़ बानी,
तू जो....!'
सड़क खाली रहे
झटकले, छोट-छोट गोड़ उठावत
सड़क पार कऽ गइल सोना
दोकान प पहुंचते
सोनामती ओरे एक बेरतकलस
फेरू मिठाई किने में अझुरा गइल
सन्नाटा घेर लेलस सोनामती के
आंखिन के लोर सूखि गइल
पसेना से देहिं तर-बतर हो गइल
साया-कुरती भींज गइल
मन-मिजाज हुटके लागल
एक बेर बेटा ओर तकली
फेरू हिरदया के हाह से
कपार नवा लेली
ममता के मरोड़ से
बहशत के पैदाइश भइल
तब तनिको देरी ना कइली सोनामती
ममता प खाक डलली
दुनिया आ हालात का
मुसीबतन के हवाले कइली
एगो लइका के
आ अपने
सड़क के किनारा
चले वाला भीड़ में
समा गइली...! ••

❑ महाबीर स्थान के निकट,
करमन टोला, आरा-802301 (बिहार)

दू गो गीत

निशा राय

(एक) बसन्त नाहीं जिनिगी में आइल

रहिया निरखत उमिरिया झुराइल
बसंत नाहीं जिनगी में आइल !

हमरा बुझाता गइल रजधानी
उहवें फुलाला, करेला मनमानी
देख चकमक नगरिया लोभाइल
बसंत नाहीं जिनगी में आइल !

सगरी सपनवा हेराइ गइल सजनी
आसा के दियरी बुताइ गइल सजनी
तीहा दे दे के हाकिम भुलाइल
बसंत नाहीं जिनगी में आइल !

अबकी के आइब करब नाहीं देरी
वादा प वादा करेला हर बेरी
झूठ बोलत ना तनिको लजाइल
बसंत नाहीं जिनगी में आइल !

पुरजी भँजल नाहीं गेंहुए कटाइल
धियवा के गवना के दिनवा धराइल
रोआँ-रोआँ प करजा लदाइल
बसंत नाहीं जिनगी में आइल !

रहिया निरखत उमिरिया झुराइल
बसंत नाहीं जिनगी में आइल !

(दू) योजना के नाम पर

पनियाँ में डूबल बाटे गलिया सड़किया
त गाँव के परधान के दुअरवा भरात बा
पी यम आवास वाली योजना के नाम पर
उनका भइँसिया क छप्पर छवात बा !

ग्राम सड़क योजना में एमपी आ एमेले जी के
भाई भतीजा लो के बिल्डिंग पिटात बा
लइकन के पोषाहार से गइया मोटात बिया
आइरन गोली अब भइंसियन के दियात बा !

माटी के तेल बिक जात बा बजरिया में
गाँव क गरीबन के त पनिये बँटात बा
करी जे बिरोध ऊ पहुँचावल जाई थाना पर
करनी दुकेकर ओकरे माथे मढ़ात बा !

करबि चापलूसी त सँवर जाई सात पुस्त
एही में सबका के फायदा बुझात बा
आवता चुनाव फेर गिरऽताटे ईंटा गिट्टी
फेर जीत जइहें इहे खबर सुनात बा ! ••

द्वारा- महेश राय, मकान नं० 841/022/515704,
रामअवध नगर कालोनी, सेंट जोसफ स्कूल के पीछे, जंगल
सिकरी, खोराबार, जनपद-गोरखपुर, -273010

दू गो कविता

अशोक कुमार तिवारी

(एक) जीवन राग

सुनिलऽ राज बतावत बानी।
जीवन राग,
सुनावत बानी!

दूबर बाटे भोजन पानी,
सोना-चानी हम का जानी।
हमरा त बस आग मिलल बा,
धरती अम्बर हावा-पानी
एही मे कुछ पावे खातिर
बीनत-चुनत बरावत बानी।

भूख-गरीबी अउरी सांसत,
अतने भर बा मिलल विरासत।
जीवन के आपा-धापी में,
बानी जिनगी रोज तलासत।
दूइ जून के रोटी खातिर,
जांगर-देह ठेठावत बानी!

रिश्ता-नाता नेह के जाला,
साइत ईहे मोह कहाला।
खून-पसेना से सींचेनी,
हर पल बोझा बढ़ते जाला।
जानेनी नइखे निकास बस,
मन के धीर-धरावत बानी।

सुनिलऽ राज बतावत बानी
जीवन, राग सुनावत बानी।

(दू) श्रम-सेवा के भेद

एगो किसान,
दबा दीहल करेला
बीया आसा के
धरती में
आ भुला ना जाला
बलुक ऊ ताकल करेला
टकटकी बन्हले,
जइसे कि खलिसा बो दिहल,
नइखे काफी।
सींचे के होई ओकरा के,
अपना नेह से, अँखुवइला के बाद
आ चलावे के होई बेर-बेर
खुरपी के अनुशासन
ठीक वइसहीं
जइसे बेर-बेर
डाँटे बोले के पड़ेला
सुधारे खातिर
अपना जमला के।
जब आवे लागेला
फूल फसलन में
तब अगराला किसान ठीक वइसहीं
जइसे हो गइल होखे
जवान, ओकर आपन बेटा,
आ अनासो उघर परल होखे
ओकरा सोझा, अपना श्रम-सेवा
के भेद। ••

ग्राम-पोस्ट-सूर्यभानपुर, बलिया-277216

दू गो गीत

✍ डा0 हरेश्वर राय

(एक) नया गीत गावे द

खोल द केंवारी आ तेज हवा आवे दऽ
कोना के सीलन के गरदा उड़ावे दऽ ।

साँस लिहल मुसकिल बा घुटऽता दम
फोरे द देवाल एगो खिड़की बनावे दऽ ।

रतिया सियाही से बिया नहाइल
दीया के टेम्ही से खाठी हटावे दऽ ।

चारू देने पसरल बा चुप्पी के जंगल
चुप्पी के जंगल प ढेला चलावे दऽ ।

बंदी जुबान के रिहाई जरूरी बा
जाए द बहरी आ नया गीत गावे दऽ ।

(दू) मन उदास बा

सुखात नदी जस
मन उदास बा ।

असरा के चान पर
लागल बा गरहन,
सपना के पाँखी प
घाव भइल बड़हन,
डेगे डेग पसरल
खाली पियास बा ।

आँखी के बागी में
पतझड़ के राज बा,
मन के मुँड़ेरा प
गिर रहल गाज बा,
उदासी के गरल से
भरल गिलास बा ।

हँसी के फूल प
उगल आइल शूल
खुशी के खेत में
जामल बबूल,

केकरा के कहीं
गैर, के खास बा ! ••

डा० हरेश्वर राय, सतना, मध्य प्रदेश
प्रोफेसर ऑफ इंग्लिश शासकीय पी.जी. महाविद्यालय
बी-३७, सिटी होम्स कालोनी, जवाहरनगर सतना, म.प्र.,

दू रंग के हरियर मन

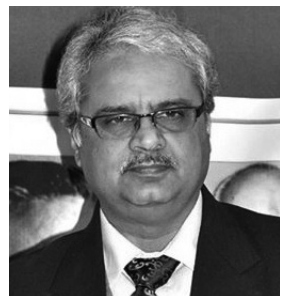

सौरभ पाण्डेय

तब के दक्खिनी बिहार, अब के झारखण्ड, के जमीन भोजपुरी भासा के लेके कबो ढेर आगा–पीछा नइखे कइले। हजारीबाग जिला के पतरातू थर्मल के बसावट जवन बलुक राँची के निकहा नजीक बड्डुए, 'पतरातू भोजपुरी परिवार' के उठान के गवाह बनल। सुरुआते से जवन लोग एह समूह से जुड़ले ऊ भोजपुरी भासा के मान आ उत्थान के लेके सचेत रहले। थर्मल पावर में काम करे वाला लोगन में भोजपुरी के लेके अइसन चेतना रहे, जे वकील चौधरी अइसन उत्साही मनई भोजपुरी छाँड़ि के दोसर भासा ना बोले। चाहें उनका सोझा कवनो राज्य के कइसनो अधिकारी काँहें ना होखसु। तवनो प लोग उनकर कहलका बूझे।

ईहे कारन भइल जे 'पतरातू भोजपुरी परिवार' अपना सुरुआते से भोजपुरी साहित्य के सरूप रचना के लेके आपन मानक नियत क लेले रहे। अइसना में भोजपुरी भासा के बेवहार आ गीत के संस्कार के जियत बिपिन बिहारी चौधरी जी, हमरा खातिर चौधरी चाचा, के रचनाकर्म अपना भाव पच्छ से निकहा ओद क देवे। चौधरी चाचा नैसर्गिक रूप से सुर आ लय के साधक हईं आ शब्द में भाव आ बिचार के पगा के उकेरे वाला रचनाधर्मी हईं। कहे के माने ई, जे सुर प चढ़ि जाय त भाव के बाढ़ि में शब्दन के जुटान भइल जाय। रचना के सरूप सधत जाय। सुननिहारन के कान के जोगे मन के निकहे खोराक मिलत जाय। चौधरी चाचाजी के 'माटी के गीत' के कई गो रचना बाड़ी स जेकरा से फेरु से गुजरल हमरा खातिर ओह घरी के आपन समय के बलुक एक हाली फेरु से जिये के मौका उपलब्ध करवला के बरोबर बा।

ओही घरी, अस्सी के दशक, लइकपन से सयान होत रहीं से अभिव्यक्त होखे के अथाह उछाह रहे, पतरातू के संस्था 'वातायन' से हमार जुड़ाव भइल। चौधरी चाचा सङे भाई ब्रजभूषण मिश्रजी से लगाव बढ़ल। जवन बढ़ते गइल। भोजपुरी आ हिंदी साहित्य के लेके सोच–बिचार बने लागल। तब ब्रजभूषण भाई के पीएचडी पर काम चलत रहे। आ उनका रचना में जवन तेवर रहे ओकरा माध्यम से भोजपुरिया समाज के उकताहट आ वर्तमान शाब्दिक भइल उजागर होखे। ओह संसार में हम तब अँखफोर होत रहनीं। हमरा साहित्यिक संसार के देखवावे आ बुझवावे वाला लोगन के सङ मिल चुकल रहे। 'वातायन' में पशुपति नाथ सिंह 'विप्लव' जी, रमेशचंद्र झा 'कृष्णधारी' जी, रामानन्द 'राही' जी, प्रेम सिंह 'पथिक' जी, परशुराम राय जी आदी–आदी भाव आ शब्दन के बूझे आ एह सङे बाझे वालन से हमार पीठ थपथपाये लागल रहे।

आजु फेर ब्रजभूषण भाई सोझा बानीं। उनकर 'खरकत जमीन बजरत आसमान' आ विपिन बिहारी चौधरी चाचाजी के 'माटी के गीत' हाँथ में आइल बा। बूझीं जे इतिहास सोझ ठाढ़ भइल बुझाता। चौधरी चाचा अपना जमीन के गंध में हर समै मताइल अइसन भावुक मनई हईं, जे अपना उद्‌गार में आमजन के जिनिगी के सुख–दुख, आह–वाह, नीमन–बाउर, उचित अनुचित के बखनले बानीं। उनकर

एह गीत से हमार मन खुलल आ आँखि बन बिया। पंक्तियन के सुनते हमार भाव समझल जा सकेला – माटी के गीत सुनावे दऽ / ... / जे जनम लिहल माटी में, पउढ़ल एही माटी में, बचपन अउर जवानी बीतल, संगे–संगे माटी में/ऊ माटी के बेटा–हेंठा, ओकरे के उठावे दऽ..। गीत के माध्यम से जवन संकल्प गोहरावल गइल बा, ऊ गाँव–जवार आ जमीन के लेके नेह–भाव के गहन बिचार बडुए। त एही लगले ब्रजभूषण भाई के गाँव के आजु के दासा प टटकार लगावत खर–खर बोल रहल बाड़े – बा खड़ा बारूद पर अब गाँव / ... / धन अरजइले ना अरजाइल/ दुश्मन अरजे लागल/लोग–बाग के गला रुन्हाइल/ गोली गरजे लागल/जहर समेटले जीयत बडुए/अब पीपर के छाँव !

एह दूनो गीत में लउकत अंतर दू मनई के सोच के अंतर भा गीत के भाव प्रस्तुतीकरण के अंतर नइखे, बलुक भोजपुरिया समाज के रोजाना गते–गते भहराइल जात दुर्दसा के वर्णन बा, जवन पिठइयाँ ठाढ़ भइल दू पीढ़ी के जियत यथार्थबोध हऽ। ब्रजभूषण भाई के नवगीत के धार एइजे नइखे थथमत, बलुक ऊ आगा बढ़त लगले कहे लागत बिया – चनक गइल मन के ऐनक बा / अइसन लागल चोट / भितरे–भीतर होखे लागल / अणुवन में विस्फोट / ... / खून–रेप–चोरी–बटमारी / सरहद–सीमा से गद्दारी / फटल आँख सब देख रहल बा / बाकिर सीअल ओठ ! ..

सरसी छंद के अतना सहज प्रयोग आ भाव के हतना सघन सरूप ! सहजे समझल जा सकऽता जे भोजपुरिया गाँव भा बसावट के लेके बनत उमेद में अब यथार्थ काँच नइखे रहि गइल। अब पउढ़ल यथार्थ बदकारी आ सोआरथ के रूप खूब बुझा रहल बा।

हम ब्रज भूषण भाई के ऑब्जरवेशन के तागद प तबहूँ भरोसा करीं जब 'वातायन' के मंच से उचकत–उतान भइल हम आपन आँखि फारल करीं। ऊ जब–जब पटना जासु, भा पटना में मिलसु, 'भोजपुरी अकादमी' लेले जासु आ पं० गणेश चौबे जी, पशुपतिनाथ सिंह जी, रामेश्वर सिंह कश्यप जी 'लोहा सिंह', अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी, भगवतीप्रसाद द्विवेदी आदि के साक्षात मिलन करवावल करसु। ई भेंट खलसा मुलाकात ना होखे, बलुक भोजपुरी के लेके ओह घरी के दासा प चर्चा होखे। समाज में साहित्य के नाँव प बिकरा अब त बड़ले बाड़े, तबहूँ रहले। साहित्य कवनो भासा के काँहें ना होखो, एक वर्ग खातिर ई सुरुए से नाँव–जस कमाए आ आपन धंधा चलावे के साधन रहल बा। तबहूँ साहित्यिक कर्मयोगियन आ साहित्यिक करमकोढ़ियन प बहसा–बहसी भइल करे। भोजपुरी भासा के लेके सही आ साँच सोचे वाला लोगन के तबहूँ नाक चढ़ल करे। तबहूँ भौंह सिकुड़ल करे। बहस होखल करे। बाकिर ना त तब ई भोजपुरी समाज साधल जा सकल, आ ना अबे कवनो सोझ रास्ता लउकत बुझा रहल बा। नाँव जस आ धंधा के जोगाडू लोगवा भाव–शब्द–शिल्प के लेके अनकथ तपस्या करे वालन प हर समय भारी पर जाता। भोजपुरी माई कवनो बड़हन सराप भोगत आजु ले बनल बाड़ी दुका। आ ना, त ई सउँसे दुनिया में कवन माईभासा के पूता होइहें जे माई के दूध प पलात–पोसात जवान होते अपना माई के खून चूसे लागत होइहें ? भोजपुरी में एक सुरुवे से ई हो रहल बा। बाकिर, विपिन बिहारी चौधरी चाचा तबहूँ चुप ना रहले, बोलत रहले – एही गरभवा में नव मास ढोवनीं / काहें दुधवा के आज तू लजा रहल बाड़ऽ ? / ... /ई जनती मूड़ी सोइरी में ममोरतीं / देखतीं ना दिन जे देखा रहल बाड़ऽ ! ..

कवनो बोली के हाल आ समाज के मनोविज्ञान के बीच खूब गहिर संबंध होला। एक दोसरा के उलट। समाज के सामूहिक हीन भाव ओह समाज के बोली के सम्मान थोर कऽ देला। आ ओकर अभिव्यक्ती बड़ा भदेस ढंग से बहिराला। ई मानल बा, जे जब–जब कवनो भासा में अश्लीलता के धमक बने लागे त समाज के अपना के लेके हीनता के भाव होला आ ओह भासा के बोलनिहारन के आर्थिक ढंग से तनिको सच्छम भइल वर्ग भासा के बोले से कगरियाए लागेला। समाज में तमस भाव के जोर बढ़े लागेला। 'अनुबन्धम क्षयं हिसां अनवेक्ष्य च पौरुषं' के बड़ घिनहा रूप प समाज अपनावत चले लागेला। हमनी के तब वोट के राजनीति आ ओकर नकारात्मक असर प निकहे चर्चा करीं जा। चौधरी चाचा के कहल्का सुनीं जा – पहिले देश खातिर / आपन कुर्बानी दियात रहे / ..आजु अपना स्व खातिर / देश के कुर्बानी दिया रहल बा ..।

चौधरी चाचाजी कहबो करसु, 'आहोऽ, आजु जब हई हाल बडुए त दस–बीस बरिस आगा का होई ?' हमनी के एह सवाल प भलहीं चुपा जाईं जा, बाकिर मन मथा गइल करे। ब्रजभूषण भाई जइसे चुपाइल भासा में बोलल करसु जेकर तासीर बड़ घवाह भइल करे – पंचन के प्रपंच में / एक अउर दिन बीत गइल / भाषण–भूषण–लंच में / एक अउर दिन बीत गइल / ... / राजनीत के वेश्या देखीं / लंगटे नाचत बाटे / जनता खातिर लोकतंत्र में / परचा बाँटत बाटे / अखबारन के अंक में / एक अउर दिन बीत गइल..

भा, एही लगले उनकर उद्‌गार छनकल बा – कहे के सुराज मिलल /जनता के राज मिलल / बाकी ना गरीबवन का / भरपेट अनाज मिलल / जुड़त नइखे पीयेवाला पानी / ... /सजी सुखवा लूटे रजधानी/कि, बड़का लोग काटत बाटे चानी ..।

बाकि ईहो ओतने साँच बा जे रिसियाइ के सवाल ऊहे पूछेला जेकरा समस्या के नब्ज प अँगूठा होखे। चौधरी चाचा के भाउक मन उजबुजाइल बोल उठे – जाईं कइसे आज हम अपने गाँव में / उग गइल बा नागफनी ठाँव–ठाँव में ! आकि, उनकर भाउक मन उचाट भइल फेर पूछ बइठे – का ईहे देश के कर्णधार होई ? / का एकरे कान्हा प देश के भार होई? /जेकरा हाँथ में नइखे इस्लेट–पेन्सिल–कॉपी / बडुए होटल के जूठा प्लेट, टेबुल साफ करे के साफी ? एह सवाल आ समाज के जियात दोहरी जिनिगी प मन खउँझा के रहि जाए।

बाकिर, राग आ छोह तवनो प शब्द के सँग पाइये जालन स। मन ढेर अनमानाइल करे त चौधरी चाचा जी अचके में आपन खुलल कंठे राग छोड़ दिहल करी – हाँथ–पाँव मरनीं ना मिलल किनारा / कतहीं से कवनो ना भेंटल सहारा / पिरा गइल जिनिगी लड़त ई लड़इया / ... / मँझधार बीच डोलत हमार नइया..

चौधरी चाचा वाचिक परम्परा के सर्जक हवन। लय आ सुर में भाव चढ़ि जाव त शब्द अपने मने डुगुरल आवेलन स। चाचाजी के परसिद्ध गीत 'मोर किसनवा हो' उनका कोमल भाव आ लयकारी के नमूना हऽ। दिल खोल के उहाँ का गावत अपनहूँ निहाल हो जासु। एह गीत के हर बंद सहजे उठत लय में बन्हाइल सोझ शब्दन से उठल जाला – टुटही पलनिया में काटेलऽ तू दिनवा / मोर किसनवा हो / लरिका बाड़े लँगटे उघार, मोर किसनवा हो.. ।

भाव प्रेमी चौधरी चाचाजी पशुपति बाबू के डेरा प अतवार के दुपहरिया भा कबहूँ चल जासु आ हारल–थाकल मन होखे त असहीं पटा गइल करसु। पशुपति बेअवाज कइले अपनहूँ चुपाइल रहसु। आखिर ई कवन लस भइल करे जे एगो विज्ञान पृष्ठभूमि के व्यावसायिक जिनिगी जिये वाला एह मनई के भावमुग्ध क दिहल करे ? शब्द आ कविता से दुलार बनावे ? बात बा ई जे, धधकत आगि के रूप साधल आ साजल हऽ, भावबोध के शब्द दिहल। आ ई ऊहे क सकेला जेकरा समाज के बीखि घोंटि जाये के, सभ के आपन बनावत लोटि जाये के, आ समस्या केहू के होखो ओकरा आपन बनावत जूटि जाये के भरसक करुणा होखो। कवनो दिल हाल्दे भाव–शब्द के बान्हत लय ना साधे। ओकर अपना से कठकरेज होखे के परेला। ब्रजभूषण भाई कहतो बानीं – एगो भीतर कुछ बा / जे बाहर निकले के चाहेला / चाहेला बान्ह तूर बहे के / आ कबहीं ज्वालामुखी अस फूटल ..

ब्रज भाई के अपना हिसाब से ई उद्‌गार केतना साँच बा ! सचकी, गीत के बहाव के रास्ता अइसहीं निकलेला।

जहवाँ ब्रजभूषण भाई के तेवर अपना सोझ शब्दन से शिल्प साधत लउकेला ओजुगे चौधरी चाचा भावमय भइल आपन हिरदै के उलीच दिहल करेले। कवनो लेखक भा कवि अपना माहौल के पैदाइश होला। जहँवाँ माहौल लेखक आ कवी के गढ़ेला, उहँवें एक अस्तर पर पहुँच के लेखक आ कविओ अपना मेधा आ तेज से समाज खातिर सकारात्मक माहौल बनावेले। त माहौल के सटीक ढङ से अभिव्यक्त करेले। एह बात के भाव चौधरी चाचाजी अकसरहाँ जियत रहल बाड़े। – धधक रहल बा मन के जंगल / पिघल रहल बा सोना / मोती बन–बन टपक रहल बा / भाग में बडुए रोना / तार–तार हो गइल साज बा / कइसे सुर सधाई ? / सखी रे, कइसे करीं अगुआई ?

भा, ई शब्द–चित्र के हमनी के चकित करत रहल बा – छोटका के मिरजई फाटल बा / आ बिटिया के सलवार / उनकरो लूगा हो गइल चिथरी.. / एके साथे सभ किनाई / बाकिर, सपना के महल चरमरा गइल / ... / बदरा धोखा दे गइल। सहजहीं ई कविता माहौल के शब्द–चित्र प्रस्तुत क देतिया। बाकिर, चाचाजी मूल रूप से गीतकार हईं। छंदमुक्त रचना में जवन लयात्मकता के चाचाजी के रचना जियेले ओकर सानी भोजपुरी भासा के कवितन में हाल्दे ना मिले। उहाँ अकसरहाँ बतकही के दौरान कहबो करत रहनीं – 'ए भाई, हम मातरा गिनला प का जाईं, सुर प शब्द चढ़त जालन स आ मातरा गिनात जाले।' सही बात बा, गीतात्मकता भाव–लयता के उच्च स्तर हऽ। जहवाँ आ जेकरा प सरसती माई के असीस मुखर होला, ऊहे अइसना ऊँचाई प भावमय होत रचनाधर्मी जीवन जियेला। एही परंपरा के बाकिर तेज तेवर में बनिस्पत नवहा पीढ़ी के ब्रजभूषण भाई अपना 'खरकत जमीन बजरत आसमान' आगा बढ़ावत सोझा आवऽतारन – उग्रवाद–आतंक से दुनिया भइल तबाह /सबसे बड़का पंच का अब कब लागी थाह ? भा, एह दोहा छंद में एगो शब्द–चित्र देखल जाव – उहँवें शहर घुसल मिली, जहँवा राखब पाँव / गाँवें चलके देख लीं, नइखे बाँचल गाँव ! एही संग्रह में 'तितकी' के अंतर्गत ब्रजभूषण भाई के आह प धेयान दिहल जरूरे उचित

होई – चिरकुट–चिरकुट / जिनिगी के सीयेला / कहिये से मुअत बानीं – / जीयेला ! .. एह पंक्तियन से, कहे के नइखे, ब्रजभूषण भाई के भावबोध के गहराई के झलक सहजे मिल जाता।

हमनी आ हमनी अस लइकन के ओह घरी भोजपुरी परिवार आ वातायन के माहौल में ठोपे–ठोप भाव आ बिचार के रस पियावल जाय। भोजपुरी के बढ़त राहता सरस भाव से सिंचाइल बनल बा। आजु के बड़हन जरूरत ई बा जे एह भाव आ धार के एक हाली फेर से चलन बनावल जाव। 'माटी के गीत' आ 'खरकत जमीन बजरत आसमान' के दूनो पाट के बीच हमार अनगढ़पन के साध के साहित्यिक बिचार के सीधा बनावल भोजपुरिया समाज के मूल चलन हऽ।

चौधरी चाचा जी आ ब्रजभूषण भाई के दूनो संग्रह अभिव्यक्ति के भाव–भावना हऽ। ••

❑ एम-2/ ए-17, ए० डी० ए० कह्लोनी, नैनी, इलाहाबाद-211008

लघुकथा

आधार कार्ड

विजयशंकर पाण्डेय

गेट खटखटाइल त मलकिनी आवाज दिहली, 'देखऽ बाबू, बाहर के आयल हौ ?'

–'रमई आयल हउवन!' बाबू बतवलन

–'कह दऽ बहरे, ओसारे में सफाई करके, गमलन में पानी देहले के बाद गइया के नहवा दें आ छाँहें बान्ह दें !'

–'अरे, पहिले ओके कुछ पानी पियै के त दे दऽ !' दादी बीच में टोकली

–'कमवा कइके आई तबो तऽ पानी पियै के देबे के पड़ी।' पियासल होई त बहरे नल हौ, चाँपाकल हौ। अउर हँ बाबू, ओसे कहि दे कि दू बल्टी पानी से करवो धोइ दीही।'

रमई कुछ देरी बाद फिर हाँक लगवलन, ''चच्चा घरे नाहीं हयेन का ? पानी दे दिहलीं बाबू अब, इ गइया आ कार हमसे ना धोवाई।''

मलकिन दू ठो रोटी आ गुड़ देत कहलीं, ''लऽ पानी पी लऽ, चच्चा घरे ना हउवन, जब रहिहन त अइहा!''

खइले–पियले के बादो रमई खड़ा रहलन।

–'अब काहें खड़ा बाटऽ? ''कुछ पइसा चाहत रहल। दस दिन से कउनो काम ना मिलल। ठीकेदारो आजकल काम बन कर दिहे हयेन सब। गाँव में सिकरेटरी शौचालय बदे पइसा दियवायेस। हमहूँ गड़हा खोनलीं पोखरी किनारे, फोटो खिचाइल। उहो रूपया खुराकी में खतम हो गइल''।

–काहें, पोखरी किनारे ? अपने दुआरे काहे ना खोनलऽ?' दादी पुछलीं

–'उहाँ जगहे कहाँ बा कि खोनब ? धान कटिया–पिटिया का अनाजे से दु महीना खर्ची चलल। मखन्चुआ पंजाब चले के कहलेस त भाड़ा ना जुटल। एहर आलू कोड़ले–बिनले से केतना दिन नौ परानी क पेट भरी ? कतना दिन कचालू खाइल जाई ?' रमई क बिरतान्त लमहर होत जात रहे तबले दादी टोक दिहली, 'अरे रमई, गाँव में रासन क दूकान हौ ऊ का होला? तोहार रासन कार्ड सिकेटरी बनउलहीं होई।'

–अरे ऊहो कोटेदार बहुत बदमास हौ, आधार कारड बनावै के कहत हौ। अब बताईं, बिना सौ रूपया खरच कइले कहाँ बनी अधार कारड ? ओही क मारे त बैंक वाले, बृद्धा पिन्सिन ना देत हयेन! केकर, केकर बनवाई आधार कारड ? दादी के कहले पर मलकिनी सौ रूपया, रमई के देत कहलीं, 'लऽ। कम से कम आधार कार्ड त बनवा लेबऽ। भले हमरे घर क काम ना कइलऽ!'

रमई के आँख में सौ क नोट देख के चमक आ गइल। ऊ फलगरे डेग बढ़ावत निकल गइलन।

बजार में पहुँचते, सौ क नोट टूट गइल। काम भर आटा, नून, तेल, माचिस–बीड़ी खरीदले के बाद चालीस रूपया बँचल त सीधे दारू के दूकान पर रमई के पाँव रूकल। दारू चढ़ते रंग आ गइल। गिरत, भहरात, गाँव परधान के गरियावत रमई अपने घरे पहुँचते चिल्लइलन– ''ले रे जिउता के माई, हई गठरी पकड़।''

जिउता क माई गठरी लेके ओहर घर में ढुकल, एहर रमई दुअरे बिछल झिलिंगाँ–बसखट का झोल में धँस गइलन।

रात के आलू क रसदार चटक तरकारी के सँग रोटी तइयार भइल, लेकिन खाये बदे रमई जगवलो पर नाहीं जगलन। ••

❑ गुंजन कुटिया, नारायणी बिहार, चितईपुर, वाराणसी-221005

स्व. परमेश्वर दूबे शाहाबादी जी के कालजयी नवगीत

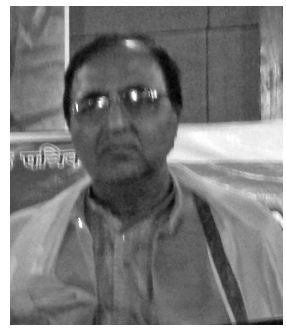

भगवती प्रसाद द्विवेदी

गीत आँतर के आवेग–उद्‌बेग के रागात्मक अभिव्यक्ति ह। चूँकि घनीभूत पीर के कोख से जनमेला गीत, एही से एकरा के 'आह से उपजल गान' कहल गइल बा। ओइसे त आदिम जुग से लोककंठ में रचि–बसि के लोकगीत आ गीत जन–मन के अभिभूत करत आइल बाड़न स, बाकिर कल्पना का हवाई उड़ान का जगहा जथारथ के ऊबड़–खाबड़ जमीन पर समकाल आ विचारपरकता से लैस होके जब मिथक, बिम्ब–प्रतीकन का जरिए गीत रचाए लगलन स, त नव्यता से भरल–पूरल ओइसन गीतन के नवगीत नाँव दिहल गइल। हिन्दी के नामची नवगीतकार देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' के ई कहनाम सर्वथा सही बा कि ओइसे त नवगीतों, गीते होला, मगर हर गीत नवगीत ना हो सके। दरअसल सामाजिक सरोकार देशज शब्द, मुहावरा, बिम्ब गीत के नवगीत बना देला, जेकरा व्यंजना से जीवन–संघर्ष आ जिजीविषा के अभिनव आयाम मिलेला।

जवना घरी हिन्दी में नवगीत के समहुत भइल रहे, ओही घरी पुन्नश्लोक डॉ0 परमेश्वर दूबे शाहाबादी के भोजपुरी नवगीत अपना टटकापन आ नव्यता का चलते चरचा में आइल रहे। एक तरफ शाहाबादी जी के पूर्वा।चल के भोजपुरी लोककथा पर कइल शोध मील के पाथर साबित भइल रहे, उहँवें दोसरा ओर उहाँ के भोजपुरी नवगीत पढ़निहारन–गुननिहारन के सुखद अचरज से भरि देले रहे। महज सवा पैंतीस बरिस के अल्पायु में दूबे जी के एह नश्वर देह के अवसान हो गइल रहे, बाकिर उहाँ के नवगीतकार अइसन–अइसन कालजयी रचना छोड़ि गइल, जिन्हनी के बिना ना त भोजपुरी नवगीत के चरचा हो सकेला, ना एह विधा के इतिहासे लिखल जा सकेला। आजुओ ऊ नवगीत ओइसहीं प्रासंगिक बाड़न स, किछु त पहिलहूँ से बढ़ि–चढ़िके।

सामाजिक विसंगति–विद्रूपता के मरमबेधी चित्र उकेरे में शाहाबादी जी के नवगीतन के जवाब नइखे। निचिला तबका के संघर्ष आ तबाही अधिकांश गीतन में मुखर भइल बा। आजु 'अपना हाथ जगन्नाथ' का जगहा हाथ के तिजोरी में (मेहनत के) पसेना के दउलत के बावजूद पेट में लंकेदहन नसीब होत बा। नवगीतकार के कहनाम बा–

महँगी के बहँगी पर
देह के सुखौता
बेकल जवानी पर
जीभ के सरौता
हाथ के तिजोरी में दौलत पसीना के
पेट में बा लंका दहन।

कवि कुदरती बिम्बन का जरिए आम मनई के घवाहिल मन के टीस

के एहसास करावत बा। हरसिंगार के झरल, मरुआइल, चंद्रमुखी के अरुआइल रूप आ सूरज पर पहरा से भला केकर दिल ना कचोटी!

फूल हरसिंगार के
मन के चउतरा पर
चुपे–चुपे रात भर झरे।
अँगना में पसरेला
अँजुरी भर धूप
मरुआइल चंद्रमुखी
अरुआइल रूप
सूरज पर पहरा परे!

व्यंगपरकता शाहाबादी जी के अधिकतर नवगीतन के खासियत रहल बा। ई व्यंग चोट–कचोट से लैस बाड़न स। कतहीं सामाजिक बेवस्था पर चोट कइल गइल बा, त कतहीं सियासी पैंतराबाजी पर। रामायनकालीन राम बन गमन के मिथक के आजु के संदर्भ में इस्तेमाल करत नवगीतार एह लोकतांत्रिक देश के राजनेतन के चाल–चरित्तर के उजागर करत कबो हँसावत बा, त कबो हँसावते–हँसावत नश्तरो चुभावत बा। मुखड़ा देखीं :

अबकी राम जे बन में अइतें
पर्णकुटी ना
चित्रकूट में डकबँगला बनवइतें!

एक तरफ आम आदमी के दिन–पर–दिन बढ़त जात तंगहाली बदहाली, उहँवे दोसरा ओर मालामाल होत दरबारी–चमचन के फौज। काका के संबोधित नवगीत में शुरू से आखिर ले चुटीला व्यंग के मार्फत रचनाकार देश के सउँसे दुर्बेवस्था के परत–दर–परत उघारत बा–

अरुआइल पीठा अस काहें
लटकल मुँह तोहार
काका हो
बड़ अजगुत सरकार!

का कहलऽ
कि दाना नइखे
कतहूँ सधत निशाना नइखे
फेंफरी परल ओठ तू चाटऽ
कवनो नया बहाना नइखे
हम त गदहन के देखलीं हँऽ
अबहूँ उहे लहार
काका हो
अब ओकरे दरबार!

नवगीतकार ना त कल्पित क्रांतिधर्मिता के नारा बुलंद करत बा आ ना रोटी, भूख के सवाल पर हो–हल्ला मचावत बा। ऊ त ईमानदार मेहनतकशन के नियति आ सत्ता पक्ष के नीयत–दियानत के इजहार करत आत्ममंथन खातिर लचार करत बा :

संकट के बेरा बा
कुछुओ मत सोचऽ
कइसन ई संकट बा, माथा खरकोंचऽ
जाँगर ठेठावऽ
देके जीभ पर लगाम!

सियासत में सत्तापक्ष होखे भा विपक्ष– सभ 'चोर–चोर मौसेरा भाई' लेखा मिलीभगत कऽके आपन गोटी लाल करि रहल बा, आ लूट–खसोट कऽ के 'दिन दोगिना रात चौगुना' माल सहोथे में लवसान बा। बेबस जनता बेरि–बेरि बेवकूफ बनत बिया, लुटात बिया। एगो नवगीत बतौर बानगी देखल ला सकेला–

आपुस में कऽ लीं जा
फैदा के बात!
दहार भा सुखार में
चरे के मोटाए के
दलदल में घूसि
माल मारे के, गोटाए के
नेताजी से सिखनीं ई
कैदा के बात!

डॉ. शाहाबादी के नवगीतन में कुदरत के अनुपम छटा देखते बनत बा। उमिर के बन्हन तूरत फागुन में गदराइल फसिल के बधार भला कवना कठकरेजी के मन नाम मोहे!

हरिअर–हरिअर
मनवाँ मोहेला रबी
जुलुफी उड़ावे पुरवइया
खेसरियो के
देखते बनेला अँगनइया।

इन्हनीं में प्राकृतिक बिम्बन का सँगहीं देहयष्टि के सौन्दर्यबोध वाला बिम्बो खड़ा कइल गइल बाड़न स, जवना में बतौर बानगी एगो तस्वीर देखीं–

ऐनक के अलबम पर
बिम्बन के पहरा!
तट के अवलम्ब बाँहि
लहरन के नाच
अतुलित गहराई के

नाभी सँवाच,
मादक मधुमदे गति
सावन छरहरा!

कतहीं गोड़ बसंती हवा आवत बिया, त कतहीं चउकठ पर अनपरिचित पुरवा के रेशमी दुपट्टा के फूल के अगुवानी होत बा। कतहीं दिनभर के थाकल संझा ओरियानी में पलभर बिलमते बिया, त कतहीं पत्थर के छाती से जीवन के सोता निकलत बा। गँवई बाल–गोपालन के लखि के कवि अइसन अगरात बा कि मन बृंदावन चलि जाता। संग्रह तरल अभिव्यक्तियन से भरल परल बा आ गाँव, जंगल आ आदिवासी बहुल कुदरती सुघराई के चटख बिम्ब पढ़निहार के आँतर में पइसि के जीवंतता से भरि देत बा। भाषा में पनिगर प्रवाह बा आ भोजपुरी के खाँटी शब्द, मुहावरा, लोकोक्ति से नवगीत अउर जियतार बनि जात बाड़न स। गाँव आ प्रकृति के टटका बिम्ब, प्रतीक, संकेत से मए नवगीत तरोताजा लागत बाड़न स। कथ के स्तर पर समकालीन जिनिगी के जथारथ के तींत–मीठ साँच एह नवगीतन के मार्फत गहिर संवेदना का सँगें उजागर भइल बा, जवन हर जगहा प्रकृति, स्त्री आ मनुजता का पक्ष में ठाढ़ लउकत बा। कथ, शिल्प आ संवेदना का दिसाईं ई नवगीत अनमोल बाड़न स, जवन रचनिहार के दृष्टिसम्पन्नता, प्रयोगधर्मिता आ जनचेतना जगावे के उतजोग के संकेत देत बाड़न स। सोन्ह–मीठ गंध–सवाद से लबरेज नवगीत आन्दोलन के शुरुआती दौर के ई गीति–रचना समकालीनता, जथारथबोध, गहिर–गझिन संवेदना आ टटकापन के खूबी के कारन कालजयी साबित होई। कई माने में त ई नवगीत आजु कहीं ज्यादा प्रासंगिक नजर आवत बाड़न स। जब ले सामाजिक विसंगति, विद्रूपता के सियाही गाढ़ होत जाई, ई नवगीत अउर आपन औचित्य सिद्ध करत जइहें स आ इन्हनी के कबो बासी होखे के त सवाले पैदा नइखे होत। एह अप्रतिम नवगीतकार के पावन स्मृति के हमार प्रणामांजलि! ●●

❑ शकुंतला भवन, सीताशरण लेन,
मीठापुर, पटना, 800001

लौट के आ जा!

मधुरेश नारायण

गाँव होखऽ ता उजाड़, भइया लौट के आ जा!
गुमसुम रहत बा दुआर भइया लौट के आ जा!!

गहगह करे जवन फुलवारी सहन के, ऊ सुखा गइल
रहलऽ जहवाँ तूँ, बरसों ऊ मड़ई उधिया गइल
बुढ़वन क सुनिलऽ तूँ गोहार, भइया लौट के आ जा!!

बेपानी बा ताल-तलई बहरवारा के पोखरा
खेलत रहनी जा जौना मैदाना ऊहो नइखे साफ-सुथरा
चट्टी प’ रोजे मचत बा हउँजार, भइया लौट के आ जा!!

हरियर लेहना बिना गाइ-भँइसि सब दुबराता
दूध दही का होई, उनहन के ठठरी देखाता
तोहरे राहि सब रहल बा निहार भइया लौट के आ जा!!

तोहरे अइले प- एह लोगन में कुछ उमेद जागी
तोहरे बुद्धी-बल से इहवाँ दुख-दलिद्दर भागी
गँउवाँ करत बा पुकार, भइया लौट के आ जा!! ●●

❏ 2, डी, गोविन्द एन्क्लेव, रामगोविन्द सिंह पथ,
कंकड़बाग, पटना, 800020

सन्धिदूत के गीत-संसार क सुघराई

(पूर्व प्रकाशित - 'भोजपुरी लोक' - अंक -83, 1993)

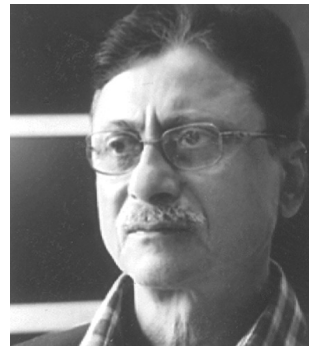

डा0 अशोक द्विवेदी

आनन्द 'संधिदूत' के शिकायत बा कि "गीत नापे के ठोस आधार ओह वर्ग का पासे नइखे जे गीत लेखन भा समीक्षा कार्य में लागल बा।'' दरसल काव्य–संसार के नाप जोख अउर चीजन मतिन मीटर; सेर, किलो ग्राम से ना होखे। अधिका से अधिका कवनो सहृदय आ समझदार अदिमी ओह 'अद्वितीय संसार' में पइठि के ओकरा कारीगरी आ संवेदनात्मक गहराई आ फइलाव के निहार सकेला आ लवटि के अपना भाषा में ओकर बखान क सकेला। आचार्य सम्मट के इयाद बरबस आव ता–

'अपारेकाव्य–संसारे कविरेकः प्रजापतिः
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते।'

रूचलानुसार संसार सिरजे वाला कवि क काव्य–सृष्टि 'नियतिकृत नियम सहिता' न होके नियति के नियमन से अलग, 'अनन्य परतंत्र' (दोसरा के अधीन ना रहे वाला) मानव के आनंद उत्कर्ष खातिर, सुरुचिपूर्ण आ मनोहारी होले। कवि के ई संसार आ ओकर चीज जइसन लउकेले आ रुचेले, ओइसने आपना संसार में ऊ सिरजन करेला। ब्रह्मा आ सृष्टि से सुन्दर आ अलग ओकरा काव्य–संसार के कवनो पैमाना से सही–सही नापलो न जा सके।

गीत कविता क एगो कलात्मक, भावपूर्ण आ सांकेतिक रूप (फार्म) हऽ जवना में लय, गेयता आ संगीतात्मकता का साथे अंदरूनी संगति (पॉजिटिव यूनिटी) जरूरी होला। आजु के बदलत परिवेश में गीतकार अपना संवेदनात्मक उठान आ गुनगुनहट में अगर साँच अनुभूतियन के सार्थक ढंग से उरेहे खातिर नया जमीन, नया रूप के तलाश करऽता त कवनो बेजायँ नइखे। पुरान शास्त्रीय छंद विधान ओकरा कथ्य के .....उक्ति वक्रता भाव–सघनता आ रचनात्मक सोच के वाजिब ढंग से उजागर ना क सके। भाषा के सृजनात्मक इस्तेमाल कवि के रचना के मूल्य बढ़ावेला। पुरान सौंदर्याभिरुचि आ सौंदर्यदृष्टि के आदी लोग नया दृष्टि सौंदर्य–चेतना से भड़की त भड़कल करो। संधिदूत ओह गिनल चुनल गीतकारन में बाड़न जवन लोक–प्रचलित छंदन के इज्जत देके, शास्त्रीय रचना–विधान के साँचा तूरे के प्रयास कइले बाड़न। साथ–साथ ऊ लोकराग आ लय से लगावो रखले बाड़न।

संधिदूत के एक कड़ी 'ना दिमाग में दिल बलकी दिलवे में रहे दिमाग' उनका गीत–संसार "एक कड़ी गीत के" में घुसे क कुंजी ह। एही कुंजी के लेके हम ओम्मे घुसे के कोशिश करऽ तानी। सिरजन के तन्मयता आ पढ़ला का तन्मयता में बहुत कम दूरी होला। ज्ञानात्मक संवेदना आ संवेदनात्मक ज्ञान के फर्क करही के परी। बे डूबल आ बे तन्मयता के एह संसार क सुघराई ना लउकी। आ ईहो रचना के सुघराई आ विन्यास के खिंचाव (आकर्षण) पर निर्भर करेला कि ऊ कतना खींचऽतिया आ डुबाव तिया। संधिदूत लेखा कवनो समझदार पारखी आ कवि–कर्म

का प्रति ईमानदार गीतकार के, अनुभूति के गहराई आ संवेदनात्मक संदर्भ के पकड़ला बिना ओकरा गीत के मर्म ना बुझाई। संधिदूत का गीतन में मानवता क प्रेम, जिनिगी के जिनगी बनावे क सोच–फिकिर, आशा–निराशा, चिन्तन आ संघर्ष क क्रियाशीलता या विसंगतियन पर सार्थक व्यंग्य बा।

सुघराई चाहे भाव के हो भा रूप के, विचार के हो भा कथ्य के, सहृदय ओकरा अंदरूनी आ बाहरी दूनो रूपन पर रीझेला। आज के सजग गीतकार अपना सुघराई आ बोध के दू रूपन के उकेरेला– भाव में आ कथन (अभिव्यक्ति) में। अभिव्यक्ति के औजार भाषा ह। ओकरा भाषिक रचाव में गुँथाइल संवेदना आ अनुभूति के ओकरा सहज सोभाव में ना पकड़ला पर भूल हो जाई। संधिदूत पुरान सौंदर्य–अभिरुचि से हट के लिखले बाड़न, गीत के लक्ष्य बा कि ऊ जेतना गेंदा–गुलाब के रक्षा करसु ओतने धतूरो के हिफाजत देसु। कवनो प्रकार के जीवन पृथ्वी पर विलुप्त ना होखे। सब पर्याप्त मात्रा में लहलहात रहे–हमरा गीत–के गेय वस्तु इहे बा।" ई दृष्टि महाप्राण निराला का ओह दृष्टि से मेल खाता, जवना से ऊ गुलाब आ कुकुरमत्ता के देखले बाड़न। संधिदूत का गीतन में रोमैण्टिक भावोच्छवास ना होके साँच–सहज अनुभवन के जियत–जागत चित्र बाड़न स। ईहे चित्र (बिम्ब) उनका गीतात्मक सहजानुभूति के जान बाड़न स आ कलात्मक सुघराई के प्रान।

'एक कड़ी गीत तके' मानुस जिनिगी के अंदरूनी आ बाहरी साक्षात्कार के गीत–संग्रह बा। कई गीतन में संधिदूत अपना भीतर उतरे, अपने के देखे आ 'देखल' के उरेहे के कोशिश कइले बाड़न। स्वामी दक्षिणा मूर्ति आ शारदा सन्यासी के थोर–बहुत प्रभाव का नतीजन ई कोशिश अवरु अर्थवान हो गइल बा। आत्म अन्वेषण आ साक्षात्कार का एह क्षणन में लोक संदर्भन के अलौकिक रूपो लउकि जाता। कबीर के रहस–भेद आ प्रेम–संसार के झलक ठावाँ–ठईं मिल जाता–बाकि उलटवासी नइखे होत। बिरोधाभास के बीच संसार के नश्वरता उभारि के कवि काव्य–रूढ़ियन के नया अर्थ देबे के कोशिश कइले बा।

जवना परतिया में दुबिया ना जमली
उड़ली असढ़वो में धूल
समय बनावे तहाँ निरमल तलवा
उगेला कँवलवा के फूल।

कवि के 'मानसर' भा 'निरमल तलवा' में कँवल के फूल (पूर्ण सौंदर्य) खोजे खातिर भीतर का–अगम तहखाना में उतरे के परत बा।

भइया नजर गड़लि असमनवाँ में
हम चितईं अगम तहखनवाँ में।

तहखाना में उतर गइला पर भित्तर क स्याह–सफेद लउके लागऽता आ अन्हार छँटला पर आपन बौनापन आ निरीहता उजागर होखे लागऽ ता। सरीर का 'टुटही बखरी' से अउँसल प्रेम बहरियाये लागऽ ता–एहू के कहे क लूर ढंग–निराला बा–

लागे हमरो ले नीक कहीं तार–रेंगनी।
एगो कोनवाँ बखरिया का सूप–बढ़नी
जे पोंछात रोज हाथ से अँगनवाँ में।

x x x x x

रोआँ रोआँ अंग–अंग सगरी टटोरलीं
जलवे में जल बिनु छछने परनवाँ।

प्रतीक आ मान पारम्परिक बाड़न स–कबीरी अंदाज में संधिदूत धरती के बिछावन आ आकास के ओढ़न बना ले ताड़न, फेरु खोज नया सिरा से जारी हो जाता आ नश्वरता उजागर होबे लागऽ ता–

सवख– सिंगरवा कोइलवा के लुतिया।
लहँगा चुनर चोली चोटी चुटपुटिया
लागत व्यर्थ, उतार फेंकत
हम पागल भइलीं ना।

आज के आदमी असहाय। आ उपास जिनिगी के मनःस्थिति, पीड़ा आ आह से आहत अनाम 'बालम' का आर्त आत्मनिवेदन करत कवि फिकिरमंद आ दुखी बा–

निकसे न पावे नाहीं कतहीं दुअरिया
छछनि रोवे मनवे में मनवा के देवता।

x x x x x

चिन्तवा फिकिरिया के चिन्तन बनवली।
जिनिगी रिन्हत दुख विनलीं बेंसवलीं
खाय केहू अउरो घुसल बखरी।

अन्त में कूल्हि सुख–दुख, चिन्ता–फिकिर सँउपि के ओही अंतर्मन का अरूप रूपवान के बारे में सोचला पर उनका मन के लहर थिराता– एही से कवि दुनियाँ का लउके वाला विद्रूप के देखला का बजाय अपना भीतर देखे के बार–बार जतन करत लउकत बा।

दुनियाँ सोचले माथ पिराला।
तोहेके सोचले लहर थिराय....
–अगली बगली जलन समाले।
अंदर देखले आँखि जुड़ाय।

अपना कई गो गीतन में संधिदूत वर्तमान व्यवस्था, समाज आ ओम्मे सामान्य जन के

छछनत–तड़पत–जूझत–बिलात जिनिगी के असली मार्मिक रूप उभारे के प्रयास कइले बाड़न। एह गीतन में नोकरिया के दर्द, मजूर आ किसान के समूचा परिवेश के सांकेतिक बाकि पुरहर अभिव्यक्ति मिलल बा–लोकमाषा का जियतार अर्थ–गम्हिराई का साथ–

हाथ–गोड़ नोकरिया में धइ।
तन रेकसा में जाय
आम अस झोरल बदन लागे मोर।
मन बन्हकी जनाय

x x x x x x

अतना उघार कि चिन्हार खोरी–खोरी।
जाईं हम कहवाँ छिपाय चोरी–चोरी

x x x x x x

मुट्ठी भर बीया के हो गइल तबाही।
आसा के खेती में लागलिबा लाही
आँखी से आँसू ना गिरल करे ठार।

x x x x x x

अपने जहाँ–जहाँ गोहरवलीं
ओहिजा एक गोड़ पर धवलीं
मुवलीं लाते तर कचरइलीं।
राउर जै जैकार मनवलीं
पर हम परिचय ना बन पाईं।

कठोर वास्तविकता का नाँव पर कोमल भाव के उपेक्षा आधुनिक कविताई के फैशन बन गइल बा। संधिदूत में ई बात नइखे। ऊ आज के तमाम विकृतियन आ कडुवाहट में कोमल आ मधुर के उभारे के कोशिश कइले बाड़न। उनका गीतन में क्रांतिधर्मी लफ्फाजी नइखे, कारुणिक स्थिति आ पीड़ा के मार्मिक अभिव्यक्ति बा। अनास्था के ज्वार के रोके खातिर ऊ सचेष्ट बाड़न आ जीवन मूल्यन खातिर चिन्तित। एही से उनका गीतन के भावात्मक–सघनता तरल बा आ काव्य भाषा आर्द्र। जन–जीवन के असहाय स्थिति, ऊहापोह आ व्यथा के अतना सहज उरेह उनका गीतन में बा कि मन अनासो बेचैन हो उठऽता। उदाहरण में उनका किसान के बेटी अपना मेहनत से खेत के सजावत आ सँवार तिया–'बइठे बइठान' बढ़ जा तिया आ सयान होके अपना पूरा गँवई–परिवेश के दर्द अपना में समेट ले तिया–

कहीं भीजे जौ गेहू कोठिला के धनवाँ
कहीं भीजे झाँपी झोरा ओढ़ना बिछौनवाँ
अँगना में भीजेला पथार के दउरिया।

x x x x x x x

दरे–दरे बेल–बूटा दरे–दरे बिलुकी
अँधी कोठरिया में झोरा बिनाला।

x x x x x x

तोहरा कन्यादान के बहनवा बा हो बाबू जी।
केहू नाहीं आवे ई मेहनवा बा हो बाबू जी।
एहिजा त जर तिया कोइना के दियरी
कवना भावे गाँवे किरसनवा बा हो बाबू जी।

x x x x x x

फँड़वा में ढूँढ़ा ढूंढ़ी फुफुती में कचरी
जवरा के धइले, होई कपरा पर गठरी
अवते होई माई जो/कमइले होई बखरी

संवेदना के अइसन भीजल छुवन अपना बिम्ब का साथ एह गीतन में बा कि संदर्भ–चित्रन के मार्मिक रूप सामने आवते मन बेचैन हो उठऽता। गाँव के प्रति लगाव के अइसन मार्मिक कथन दुर्लभ बा, जवना में कवि गाँव से बिछोह के पीर–पसावत बा–

गोरुवो गोड़वा रोकेला, बछरुवो गोड़वा रोकेला।
कइसे जाईं जात खानी गोड़वो गोड़वा रोकेला।
गाँव गइले गाँव के धतुरवो गोड़वा रोकेला।

सामान्य कथन से अलग हटि के कहल कवित्व आ वाग्विदग्धता के विशिष्ट बनावेला। संधिदूत का गीतन में कथन के एगो विशिष्ट अंदाज आ लोकज 'टोन' बा। सहज सोभाव का अनुरूप, संदर्भ–चित्रन आ प्रतीकन से लैस, नया उपमा से उजागर होत, उक्तियन का वक्रता से चमकत उनका भाषा के निठाह आ धारदार रूप के देखि के साफ समझ में आवऽता कि कवि क भाषा पर बहुत गहिर पकड़ बा–

कहाँ जइब ऽ एकारी अन्हारी बारी घेरे ले
उल्टा पल्ला फेरेले बदरिया रहिया रोके ले।

x x x x x x

घर में ना केहू खाली घरवे पड़ल बा।
फटली न धरती तबहियों गड़ल बा
ऊँच–ऊँच खोरि भइली, नीच भइली बखरी।

बदलाव के संदर्भन के अतना सजीव अभिव्यक्ति संधिदूत के भाषिक रचाव में छिपल सृजनात्मकता के उजागर करऽता। उनका भाषा में एगो दीप्ति बा जवन उनका भाव–संवेदना के दीपित क देता। उक्ति वक्रता एह भाषा के धार बा–

नई बाजन ना सम्हरे/आँचर उधियाला

x x x x x x

लाज बरे कुछऊ के कुछऊ कहाला

x x x x x x

सिरफल का पतई पर कनइल मुस्काला।

x x x x x x

टुटला बटाम अस कोट के इजतिया
रोसनी छोड़त आवे सुधि के बरतिया।

x x x x x x

डुबलो सवाद के इयाद परे तितिया।

भाषा के वाजिब इस्तेमाल में कुच्छे जगह बा– कुछ गीतन में–जहाँ संधिदूत ढील परल बाड़न; ना त नया उपमा, नया चित्र, नया प्रयोग के परोसे (प्रस्तुतीकरण) में ऊ विशिष्ट बाड़न। गीत के रचाव आ ओकरा रूप–विन्यास पर उनकर कारीगरी सराहे जोग बा–

देवता घुमत बा उघार खोरी–खोरी
गोड़ तर फाटेला दरार चारुओरी।

x x x x x x

अतना गड़ेलू बात अँतरा समाइ के
ठोरवन खोजेला पखेरू छितराइ के।

x x x x x x

करिया सरिरिया/सुखाई भइली पोखरी
फाटि गइली कनई/ओराइ गइली मछरी।

गिहिथिन आ कलावन्त मेहरारू जइसे नया–नया रूप में, नया–नया तरीका से घर संसार के सँवारे सजावेले; संधिदूत अपना गीत–संसार के भाव प्रवण, संवेदनात्मक क्षणन के सांस्कृतिक आ सृजनात्मक धरातल पर उरेहे लन। छंद–विधान, लय, गीत, संगीतात्मकता आ कलात्मक सांकेतिकता का लिहाज से उनका गीतन के ई संग्रह बहुमूल्य बा। संधिदूत, लोकधुन–सोहर, कजरी आ बियाह आदि गीतन का 'फार्म' में बहुत असरदार आ मार्मिक अभिव्यंजना कइले बाड़न। एकर उदाहरण संकलन के गीत सं0 25, 52, 68, 69, 75, 77, 79 आदि देखल जा सकेला। लोक–धुनन आ लोक–तर्ज पर त एह संग्रह में उनकर कुछ गजल बहुते जोरदार, मार्मिक आ असरदार बाड़न स।

संधिदूत का कविताई पर संक्षेप में कहल बहुत कठिन बा। कोशिश कइल जाव त इहे कहाई कि ऊ रचना–विधान का दिसाईं सजग, उक्तियन में माहिर, कारीगरी में दक्ष, संवेदना आ अनुभूतियन से भींजल गीतकार बाड़न। जीयत–जागत गृहस्थ मानव के हास–विलास, नेह–छोह, सुख–दुख, चिन्ता–फिकिर, बेचैनी आ सोच–संघर्ष के नया चितेरा आ ओकरा आत्म–अवलोकन के गायक बाड़न। उनका गीतन में करुणा के जल–धारा बा, 'अँजुरी भर असरा' आ 'अरघा भर आँसू' बा, सगुनवती दूब आ अँकुरल हरदी का सँगे अच्छत के लहरत धान बा। सभ्यता के बदलाव में फैशन उनका के चिउँटी काटऽता– शहर में रहत गँवई हिरोह बा, आ परिवेश से सहज लगाव बा। ऊ कहीं किसान का बेटी से ज्ञान–संस्कृति के खेती करावऽ ताड़न कहीं आधुनिक सीता से परदोष भुखवावत बाड़न। हर जगह उनकर तेज आधुनिक दृष्टि बा– 'ऐक्शन' के सही पकड़, संदर्भन के सार्थक उरेह बा आ बाटे अभिव्यक्ति के नया तेवर आ ठेठ अंदाज। 'एक कड़ी गीत के' भोजपुरी गीत–विधा का क्षेत्र में, अनुपम गीत–संग्रह बा। ••

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से निहोरा.....

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा कृतीदेव 10 फॉन्ट में टाइप कराके रचना–सामग्री आ फोटोग्राफ रजि0 ड़ाक से भेजीं अउर **paati.bhojpuri@gmail.com, ashok.dvivedipaati@gmail.com** पर मेल करीं।

(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे। आपन संक्षिप्त परिचय आ नया फोटो साथ में भेजीं। (रजि0 डाक से)

(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं। पता पत्रिका में छपल बा।

(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवें ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट रजि0 डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।

(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

पौराणिक पात्रन का बहाने, आत्ममंथन के कथा : ''ओह दिन ''

('ओह दिन' (कहानी संग्रह) - श्रीमती शारदा पाण्डेय, प्रकाशक-हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद मूल्य-300/-)

महाभारत के कथा खाली बितला युग, बीतल कालखण्ड के कथा ना हऽ , बलुक भारतीय मनीषा के अनुभव,बोध आ ज्ञान से भरल ऊ कथा सिरिष्टि हऽ जवन आदमी आ ओकरा जीवन–संस्कृति के समझे के विवेक आ दीठि देबे में अजुओ महत्व राखत बा । एकरा बड़हन कथा–फलक में विविध पात्र बाड़े सऽ, जेमें मनुष्य के अपना श्रम–संघर्ष आ पुरुसारथ से श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बनला आ अपना ऊपर उठला का प्रक्रिया में, ओकरा से चाहे–अनचाहे भइल भूल, भटकाव आ अझुरहट का बीच प्रतिकूलता आ बिषम से पार पावे क अनुपम संघर्ष लउकी । जहाँ आदमी के सगरी बिपरीत परिस्थितियन का बीच ,छल छद्म, कुटिल दुरभिसंधियन आ बिपदा से त जुझहीं के बा, अपना अग्यान, अहंकार, मोह का बीच से उबरि के अपने राह उजियार करे बदे मनसा, वाचा, कर्मणा लड़े आ विजय पावे के बा । सत्य, न्याय, धर्म खातिर अमानवी अधर्म, अन्याय आ नृशंसता पर बिजय पावे के बा । 'नर' से 'नरोत्तम' होखे क दुर्गम जात्रा में भितरी–बहरी का संघर्ष के जियतार कथा हवे महाभारत।

आर्ष ग्रन्थ कहाये वाला एह दीरघ कथा–समुद्र का कुछ प्रमुख चरित्रन के केन्द्र में राखि के बुनल गइल शारदा जी के भोजपुरी कहानियन के पढ़ला के एगो अलगे सवाद बा । नियति आ प्रारब्ध के साथ, तेजी से घटत घटनन में एह पात्रन के भूमिका बा । संग्रह में संकलित एगारह कहानियन में केन्द्रीय पात्रन के प्रश्नाकुल अस्तित्व के चिन्तन आ मूल्यांकन के कोसिस बा ।पात्र स्मृतियन का सहारे स्वगत चिन्तन का माध्यम से आत्मसाक्षात्कार करत लउकत बाड़न सऽ आ उनहन का जरिये कथालेखिका मन में उठत सुभाविक सवालन के जबाब खोजत लउकत बाड़ी, एही बुनावट में उनका चिन्तनधारा आ वैचारिकता के झलको मिलत बा । शारदा जी अध्ययनशील, विदुषी लेखिका हई, एही से ऊ तलस्पर्शी कथा–बिन्दुअन के सरियाइ के राखत–सझुरावत बाड़ी –कहीं वातावरण का जियतार उरेह से त कहीं नाटकीय परिवर्तन से।

महाभिष शान्तनु, सत्यवती, गान्धारी, कुन्ती, द्रौपदी, अर्जुन, सुभद्रा अम्बा, भीष्म और आ कर्ण जइसन चरित्रन का गहन व्यक्तित्व अन्तर ग्रंथियन आ मनोबिज्ञान के परत दर परत खोलत कथाकार शारदा जी अपना कल्पनाशीलता से नाटकीय गति देत बाड़ी जवना में 'फ्लैश बैक' तकनीक आ वातावरन क जियतार उरेह सहायक बनत बा, संबादो योजना कथानुरूप बा आ कहाये वाली कथा के गति देत बा । एह कहानियन में पात्र विशेष का अन्तर्यात्रा आ आत्मसंघर्ष के प्रत्यक्षीकरन होत बा। सोच–बिचार गहिराई देत बा। एगो कहानी बा 'अपने में'। एमे केन्द्रीय पात्र बा अर्जुन । लेखिका कहनी में, द्रौपदी के लेके ओह चरित्र का अन्तर्द्वन्द में कुछ सुभाविक मनोबैज्ञानिक सवाल उठावत बाड़ी । प्रसंगवश नागकन्या उलूपी, चित्रांगदा आ सुभद्रा का प्रति अर्जुन के प्रेम–आसक्ति आ साहचर्य–भोग के चरचो आवत बा आ सवालो उठत बा कि बनयात्रा का ब्रह्मचर्य, साधना का बीच में अर्जुन के चारित्रिक स्खलन काहें भइल बा, दुसर पक्ष ईहो बा कि देवलोक का उर्वशी का सान्निध्य में,

ओकरा नेह आ भोग का आमंत्रण के अस्वीकार से ओही अर्जुन के शाप, प्रशंसा आ जसो मिलत बा । कहानी के नाटकी अन्त पढ़े वाला के तोख देत बा, बाकि अझुरावतो बा । कहानी से उपजल द्वन्द पढ़वइयो में समा जाय, ई खूबिये कहाई कहानी के ।

'अभिशापित' में महाभिष का दीठि के अनुरागी भाव उनका स्वर्ग से हटला (च्युति) के कारन बनत बा, फिर ओही अनुराग के निवारन आ तोष खातिर शान्तनु बने के परत बा । लेखिका स्वर्ग का एह घटना का कथा–सूत से रोचक कथा सृष्टि करत बाड़ी। एहू में प्रश्नाकुलता बा ..सुघराई का प्रत्यक्ष भइला पर, देखल अपराध काहें ? स्वर्ग में, देवनदी गंगा के अप्रतिम उज्जर रूप सुघराई के देखल आ देखत रहि गइल महाभिष का अभिशाप आ स्वर्ग च्युत भइला के कारन बनल। कथा में एकरा संकेतिक उरेह में महाभिष के अंतरद्वन्द आ अपना (स्वगत) चिन्तना में अचरज भरल अकुलाहट बा कि देखल सुभाविक क्रिया रहे फेर काहे ? एह आचरन पर कवनो गलानि आ पछतावा ना रहे उनका भीतर, दुख जरूर रहे कि ओह आदरास्पद स्थान से उनके खाली अतने खातिर अपमानित–दण्डित होखे के परल । साधारन पाठक का भितरी कचोट उठत बा बाकि कहानी का अन्त में, अनुराग फलित भइला के संकेत मिल जाता। कथा लेखिका संकेतिक रूप में अनुराग का ओही भाव सहित शान्तनु के बिम्ब खड़ा कर देत बाड़ी ।

सत्यवती के निज के अस्तित्व (इयत्ता) आ ओकरा नियति के नाटकीय जीवन– परिस्थियन में उतारत खा चिन्तनात्मक धरातल का साथ मरम छुवे वाली अभिव्यक्ति '' अनगराहित'' कहानी में मिलल बा लेखिका स्त्री मन आ ओकरा भीतरी अन्तर द्वंद के प्रभावी चित्रण कइले बाड़ी। कथाशिल्प में, परिवेश–वातावरन–सिरजन, सन्दर्भ के जियतार रूप देत बा आ कथारस भरत बा, एही का चलते बोझिल चिन्तना का बीच से पढ़निहार, कथासूत पकड़ले सत्यवती का भीतरी हलचल के अपना आँखी देखि पावत बा। एही तरे एगो अउर कहानी 'आचमन किरिन के' महाभारत के चर्चित चरित कुन्ती का प्रारब्ध आ नियति के बीच उलझल स्त्री–अस्तित्व का अन्तर द्वन्द के कहानी बनत बा। बियाह से पहिलहीं अचके घटल संयोग आ घटना से संचालित एह स्त्री पात्र कुन्ती के समझे आ समझावे क भरपूर कोसिस भइल बा। कथालेखिका सुभाविक तर्कन से चरित्र का उलझल रूप के सझुरावे के कोसिस करत लउकत बाड़ी बाकिर बिचार–बिन्दुअन का साथ । महा ऋषि दुरवासा के देव–आवाहन मन्त्र के प्रतिफलन कुन्तिये पर घटित होत बा आ आजीवन खातिर उनका के चकोह में डाल देत बा । गान्धारी आ दुर्योधन का दृष्टिहीनता का ब्यंगार्थ के '' आँखि रहत'' कहानी में कुछ एह तरह से बीनल गइल बा कि ऊ लोग आँखि अछइत साँच का पाछा छिपल साँच के (जथारथ का भीतर का सत्य के) नइखे देखि पावत । दुर्योधन के अहंकार आ हठ में विवेक आ बिचारशीलता के क्षय हो चुकल बा । ओकरा अतनो नइखे लउक पावत कि गान्धारी के तप के दिब्यता आ शक्ति के महता का बा आ गान्धारी आँखि अछइत ओपर पट्टी बन्हले साँच से मुँहे फेर चुकल बाड़ी । फ्लैश बैक में महभारत के युद्ध बा, जहाँ दुर्योधन के जाँघ टूटत बा, उहाँ छिन भर खातिर द्रौपदी के भीषण अपमान आ भीम का प्रतिज्ञा के जिकिर बा बाकि ओकरा स्मृति में कृष्ण के भूमिका के होखला क संकेतिक महत्व बा ।

'अतने में' आ 'अग्नि स्नान 'जइसन कहानियन में स्त्री मन के दू गो पक्ष के भावप्रवण अभिव्यक्ति मिलल बा ।कहानी के नया रूप में बुने–उरेहे में जदि लेखिका का कलम के कला लउकत बा त उनकर आपन चिन्तन आ बिचारो साफ झलकत बा।' अनासहीं' याज्ञसेनी द्रौपदी का आत्म अवलोकन के कहानी बा, जेवन बन में स्वगत चिन्तन आ भीतर का सवालन से उपजत बिया आ स्मृति–बिम्बन का सहारे आगा बढ़त बिया । पाण्डवन के संकट में डाले का उद्ददेश्य से दुर्योधन का आग्रह पर, बन में दुर्बासा आ उनका शिष्य मण्डली के औचक पहुँच के भोजन करावे के अनुरोध द्रौपदी के धरम संकट में डाल देत बा । शारदा जी, नारी मन के भावुकता, अन्तर्द्वन्द आ बिकलता के सूक्ष्म अंकन कइले बाड़ी। कृष्ण त अइसहीं द्रौपदी के सदा सहाय रहल बाड़न । इहाँ उनका सार्वभौम अलौकिक शक्ति के संकेत में अभिव्यक्ति भइल बा।'

ओह दिन' कहानी में द्रौपदी का अन्तः संघर्ष के दूसर पक्ष बा ––कर्ण के लेके भीतर से उठत सवालन में द्रौपदी के सोच, पूर्वग्रह आ जथारथ का बीच उद् बेग के शान्त करे खातिर कृष्ण खुदे उपस्थित होत बाड़न। नियति का घटना चक्र आ ओसे उपजल बिषम स्थितियन से जूझत द्रौपदी के मन, बस उनहीं का सोझा खुलत बा । कथाकार स्त्री–बिमर्श का संदर्भ में अपना कई कहानियन में कुछ सुभाविक सवाल उठावत, ओकर तार्किक जबाब ढूँढत लउकत बाड़ी । एह सब का बावजूद कहानी त कहानी हवे, ओम्मे बहुत ढेर चिन्तना आ बिमर्श के गुंजाइश ना होला, ओतने होला, जतना से कथा के प्रवाह ना रुके आ बोझिलता ना आवे । हरेक पढ़वइया रुक के देरी ले बिचारन के बोझिल भार सहे का स्थिति में ना होला । एही से कथाकार अति वैचारिकता से बचत, कहानी के गति देला आ कथारस बनवले रहला के जतन करेला। शारदा जी विदुषी लेखिका हई, साइत एही से उनका कहानियन में उनका अध्ययन आ बोध के वैचारिकता के अंश तनी अधिका बा।

कुल मिलाइ के संग्रह के कहानियन के आपन प्रासंगिकता बा। मानव जीवन आ मन के समझे खातिर ई कहानी एसे महत्व राखत बाड़ी सन, काहें कि इन्हनी में आदमी के शक्ति–संभावना आ मानवी मूल्यन के खोज में चलत सतत् बाह्यन्तर संघर्ष आ द्वन्द्व के रेघरियावे आ ध्वनित करे क लेखकीय जतन बा। महाभारत के चरित्रन का बहाने मनुष्य के अस्तित्व आ ओकरा चिन्तन–मूल्याँकन के ई कोसिस हमहन का जीवन के बोध ज्ञान का साथ, दिशा देव, एहू दिसाईं ई अरथवान कहानी बाड़ी सऽ !

अपना प्रारब्ध ,परिस्थिति आ नियति का उलटफेर से उपजल दबावन का बावजूद आदमी का भीतर अन्तर्निहित अन्तःशक्ति, साधना, पुरुसारथ आ विलक्षणता के निदर्शन महाभारत का कई पात्रन में भइल बा, साथ–साथ इहो कि ऊ अपना क्षुद्रता, मोह, लिप्सा, अहंकार, हठ आ संकीर्ण बिचारन के परित्याग कइसे कर सकेला। अपना जीवन के साधे आ निरन्तर ऊपर उठे के उदाहरनो एह महाभारत में बा । आज के बदलत युगीन सन्दर्भ में, अपना सांस्कृतिक चेतनता आ अपना भीतर का शक्ति–संभावना के जाने खातिर महाभारत का चरित्रन पर बुनल एह कहानियन के प्रासंगिकता बा। भोजपुरी कथा साहित्य में, श्रीमती शारदा पाण्डेय के ई कहानी संग्रह स्वागत आ सराहना जोग बा। ••

लघुकथा

घर कऽ आड़

डॉ. आशारानी लाल

उहे दादी जे जब ना तब ओह पोती के दुरदुरावत रहत रही, कबो डाँटत–फटकारत रही, त कबो गरियावत रही आ कबो इहो कहँस कि ई बड़ा बइलर बिया। एकरा कवनो बात के हब–खब हइये नइखे। बेटवन संगे गुल्ली–डन्डा खेलत रहेले, नाचेले आ करिहाँव मटकावेले। हरदम बहरा–भीतर खेलहीं खातिर दउरत रहेले। इहे ना– अपनाके ई बेटवे बुझेले। बाप–भाई का सोझा तनिको नवेले ना। घर के भितरी काम में तऽ एकर मन इचिको लगबे ना करेला। एगो गोड़ चउका में राखेले तऽ एगो बहरा। कवनो काम करे में एकर दीदा नइबे ना करेला। लागता कि इ बेटी हमरा कुल के नाश करे खातिर जनमल बिया।

अइसने कुल कुबोल दादी से सुन–सुन के उनकर पोतियो अब पाक गइल रहे। हरदम अनसाइए के ऊहो अपना दादी से बोलत बतियावत रहे। उनकर हुक्का चीलम त कबो ऊ चढ़इबे ना करे, ना त हुक्के–पानी देबे, इहो कहे कि ई ददिया केतना लमहर उमिर लेके आइल बिया कि जब देखऽ तब बिखियइले बतिया बोलत रहेले।

पोती अपना दादी के कबो हँसत–मुस्कियात देखलहीं ना रही– अचक्के में उनका लउकल कि एक दिने दादी–ओही गाँव के– ओह टोला के पकड़ी तरे के रहवइया नन्हकू बाबा जे उनकर देवर लागत रहन– से हँसत–बिहँसत बतियावत रही। – 'ए बबुआ अब हमरो अँगना क दिन लवटल बा। बबुनिया के बियाह तय भऽ गइल बा। हमरा अँगना में अब माड़ो गड़ाई।'

दादी क पोती आज बइलर से बबुनिया बन गइल रही, काहें कि अब माड़ो गड़ाए जाता– सुन के उनकरा पोती क कान खड़ा भऽ गइल। पोती सुनली कि उनकरा घर में दू–पुश्त से एकहूँ बेटी भइले ना रहे। बिना बेटी के ई अँगना सुन्न परल रहे। अब अँगना क दिन लवटल बा– 'ए बबुआ! माड़ो में दिया इहँवें जरी आ गीत–गवनइयो होई। अँगना क शोभा इहे न होला।'

बेटी लगली सोचे– 'अरे–ई–का– उहे बेटी जे दादी का आँख के किरकिरी बनल रही, जेके हरदम ऊ दुरदुरावते रहली– ओही के दान करे से ई घर अँगना ना, पूरा खानदाने तर जाई– उनका बड़ा अचरज भइल।

दादी कहत फिरस कि हमरा अँगना में अब कन्यादान होई, जेके महादान कहल जाला– ए बबुआ। हमार बाबू गाय कीने गइल बानऽ। बबुनिया के संगही, अपना हाथे गउवो दान करिहन। कवनो जनम में हमार बाबू ई पुन्न कमइले रहन, तबे नऽ उनका कोरा में ई बेटी अइली। अब इनहीं से उनकर जाँघ पवितर होई। ई घर–दुआर आ पूरा खानदानो उनका एही पुन्न से तर जाई। हमरो मनवा नाचत रहऽ ता– 'ए बबुआ! जइसे हमार दिन लवटल ओसहीं सात घर दुश्मनो क दिन लवटे– हे–इस्सर।'

पोती के बुझाइल कि ई ददिया त बड़ा गूढ़ मन भितरी लुकअवले बिया। एकर मन अबे बुढ़ाइल नइखे। ऊ–तऽ बड़ा गहिर बा। एकरा अबे मरे के ना चाहीं। माई सहिए कहत रहे कि बूढ़े लोग घर–क–आड़ होला। ••

डी–2, 147–काटा नगर, नईदिल्ली।

मानवी संवेदन के लोकोन्मुखी कबिताई : हमार पहचान

(हमार पहचान - कविता-संग्रह - जलज कुमार मिश्र' अनुपम 'हर्फ मीडिया' प्रकाशनय नई दिल्ली, मूल्य-200/-)

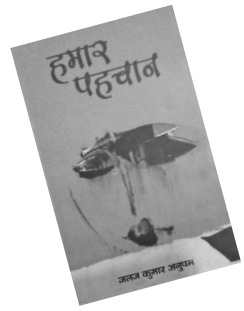

जलज कुमार का कविताई में भोजपुरी संस्कृति आ परम्परा के चेतन स्वर का साथ छीजत मानवी सम्बन्ध आ मूल्यन के चिन्ता बा । उनकर कवि जिनिगी के तीत–मीठ, सपना–जथारथ के सादगी आ सहजता से अभिव्यक्त करत बा आ विसंगतियन पर संकेतिक कमेन्ट से नइखे चूकत । जलज खाली कविताई खातिर कविता नइखन रचत, बलुक ओकरा जरिये ऊ आपन व्यथा, चिन्ता प्रगट करत, मानव–मूल्यन आ परम्परा के जियतार आ उपयोगी तत्वन के बचावे आ जोगावे के आवाहन करत लउकत बाड़न ।

संग्रह के पहिले कविता 'कृष्ण–कन्हाई' के संबोधित बा, जवना भें कवि तेजी से छीजत – खियात मानव मूल्यन के देखि के दुखी लउकत बा। बनावटी आ देखावटी सम्बन्धन में नेह छोह, करुना, सहानुभूति आ पारस्परिकता के अभाव ओकरा खोखलापन के उजागर करत बा। कवि व्यथित बा, ई देखि के कि मानव संवेदना आ प्रेम के लोप होत जा रहल बा आ ओकरा जगहा विद्वेष, क्षुद्र सवारथ, छल प्रपंच, इरिखा डाह आ कुटिलता बढ़ल जा रहल बा । ऊ अमानवीयता का बढ़त दबाव से छुटकारा खातिर कृष्ण कन्हाई से गोहार लगावत बा ———

बुतल जात बा दियरी देखीं /
सत् अँजोर के
परोपकार के
सत्य – ज्ञान के
स्वाभिमान के !

दर असल अब अराजक वैयक्तिकता आ कुटिल राजनीतिक दुष्चक्र में मानवता का जरिये

मूल पर खतरा बा, आ एसे निस्तार खातिर कवि का सोझा लोक आस्था आ विश्वास के कर्णधार कृष्ण कन्हाइये बाड़न .... ''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति'', का अनुसार अइबे करिहें उबार करे ।

आजकाल सिरजन कला (कविता) के भोगल जानल जथारथ का नाँव पर, जस के तस कहला –बयान कइला भा तुक बइठाइ लिखला के कवि–कर्म मान लिहल जाता। विशिष्ट अनुभूतियन खातिर शब्द–चयन आ प्रयोग के सुभाविक संगति–सन्तुलन के नजरअन्दाज कइला से अभिव्यक्ति के प्रभाव ओइसन ना बने, जइसन चाहीं । फ्री–वर्स में शब्द–अर्थ के लय (रिद् म) कविता के असरदार बनावेला। जलज मिश्र एह लय के विधान का दिसाईं प्रयत्नशील लउकत बाड़न।

प्रेम का सरूप आ सुभाव पर आदिकाल से अनेक कवि अपना अपना ढंग से बहुत कुछ लिखले गवले बा लोग ।जलजो एह प्रेम के अपना शब्दावली में सादगी आ सफाई से बयान करत बाड़न –

स्वारथ जहवाँ जर मर जाला
सोरि अहम् के जब जर जाला
प्रेमी, प्रेमी में भर जाला !

कविता समय का बदलाव के रेघरियावत समय–सन्दर्भ के चित्र उरेहेले । ऊ बदलाव खातिर उकसइबो करेले, ताकि जड़ता के तूरल जा सके । जलज के कवि एह बदलाव में, गाँव का शहरियइला के कारकन के रेघरियावत अइसन चित्र देखावत बा, जवना में खाली चीजे–बतुस ना, जिये क तौर–तरीका आ नीमन सुभावो ले बदलत लउकत बा । ईहे कटु सच्चाई बा।'' गँउवाँ हमार सहरियात बा ..'' में लोगन का बीच के आपुसी प्रेम, सद्भाव आ सामूहिकता के कमी खटकत बा, अरसा से चलत आइल सांस्कृतिक चेतना पर गरहन लागल शुभ नइखे। कवि एह विसंगतियन पर अपना ढंग से अँगुरी धरत बा ।

एही तरे देखल जाय त आज के बेवस्था, समाज आ जीवन में बेवहार में अनगिन विसंगति लउकिहें से ।कदम कदम पर, चुनौतियो मिलिहें सऽ आ एह सब का बीच अदिमी के द्वन्द आ संघर्षो लउकी । गौर से देखब त आस–निरास के भँवरजाल में, भितरे–भीतर पसरल नकारात्मकता मिली, जवन रचनात्मक शक्ति के छिदिर –बिदिर आ खीन करे में लागल बिया, बाकि अन्हार का माहौल मैं उजास वाली डहरियो लउकी, जवन समय के कवि कलाकार आ लेखक रचनात्मक निष्ठा से बनवले होइहें । तमाम चुनौतियन आ संकटन का बावजूद अच्छाई का कामना से, कइल सिरजन अकारथ ना जाला .....

अच्छा दिन आई, अच्छा सोच/अच्छा चाल से
जिम्मेदारी का खेयाल से
पुरुषारथ से हँसत खेत––खरिहान
आ गाँव का मनसायन चउपाल से
हमार –तोहार सबका खुश हाल से !

युवा कवि जलज एही भाव–बोध आ सकारात्मक सोच के सूत पकड़ले अपना रचना–यात्रा पर निकलल बाड़न। उनकर कवि दुनिया का प्रति ''पाजिटिव अप्रोच'' रखले, अपना रचनात्मक से जड़ता आ निराशा के तूरे खातिर आकुल लउकत बा। जलज जी अपना भाषा–समाज के चेतन सनेस देत सही दिशा में चल रहल बाड़न। एह पहिला कविता–संग्रह से उनका भीतर का सिरजन शक्ति के संभावना उजागर होत बा। उमेद बा, भोजपुरी के गुनग्राही साहित्यिक जगत ए कविता–संग्रह के हिया खोलि के स्वागत करी। हमरो असीस आ शुभकामना बा कि कवि जलज आगा अउर प्रखर आ परिपक्व रचना–सृष्टि से भोजपुरी कविताई के सुघराई बढ़इहें । ••

❑ संपादक ''भोजपुरी पाती''

Anjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

भोजपुरी नाटक आ एकांकी

डॉ0 अशोक द्विवेदी

लोकभाषा भोजपुरी में गीत–संगीत आ नाच का बाद सबले लोकप्रिय आ दमगर बिधा नाटक रहल बा। अनुरंजन का साथ समाज पर सर्वाधिक असर डाले में नाटक आ प्रहसन सशक्त माध्यम बनल। भोजपुरी लोक में पँवरियन के पँवारा आ जातीय नाच (धोबी, गोंड़ आ दुसाध जातियन के प्रचलित नाच) आ औरतन में जलुवा, डमकच पहिलहीं से प्रसिद्ध रहे। भिखारी ठाकुर एही सब नृत्य–नाट्य रूप के माँजि के अउर लोकप्रिय कइलन। ऊ सहज, सुभाविक अभिनय आ कला से एके सँवार के, गँवई–समाज में फइलल कुरीतियन आ विषमता के उजागर कइलन। नारी के अकेलापन, कमजोरी, आ यौन भटकाव के देखवला का साथ, मानव–समाज के स्वारथ, लिप्सा, छल आ परपंचो के रेघरियवलन। नाजायज संबंध से जनमल औलाद 'गबरघिचोर' का जरिये सामाजिक समस्या से रूबरू करवलन। 'विदेसिया' शैली में उनकर युगबोध भोजपुरिहा–लोकजीवन के सामाजिक–समस्यन का साथे प्रकट भइल। उनकर लिखल, खेलल नाटक मनोरंजन का साथ, लोगन का चेतना के प्रभावित करे में सफल रहे।

1942 के आसपास अपना समय सन्दर्भ में उजागर करे वाला 'सुदेसिया' (स्वदेशी) नाटक, छांगुर त्रिपाठी लिखबो कइलन त अंग्रेज–हूकुमत ओके जब्त क लिहलस। एही समय राहुल सांस्कृत्यायन के नाटक किताब महल, इलाहाबाद से छपल– 'नइकी दुनिया', 'जोंक' आ 'ई हमार लड़ाई हऽ'। एही साल उनकर कुछ अउर नाटक (एकांकी) 'मेंहरारुन के दुरदसा', 'जपनिया राछछ', 'जरमनवा के हार निहचय', 'देसरच्छक' आ 'ढुनमुन नेता' नइकी दुनिया प्रकाशन छपरा से प्रकाशित भइलन स। एह कूल्हि नाटकन में राहुल जी के साम्यवादी सोच–विचार आ चिन्तन के स्पष्ट प्रभाव झलकत रहे। राजा, जमीनदार, सेठ–साहूकार, मिल मालिकन आ दोकानदारन के शोषण, छल, जोर–जुल्म आ अनेति के विरोधी स्वर त एह नाटकन में रहबे कइल, राष्ट्रीय आ वैश्विक परिवेश के परिवर्तन, युद्ध के काल्पनिक स्थितियो उभारल गइल रहे। समाज में फइलल, अंधविश्वास धर्मान्धता, अंधविश्वास आ पाखण्ड आदि कुरीतियन पर खुला चोट आ उपहास भावो परिलक्षित होत रहे। औरतन के दुर्दशा, आ समाज में ओके बरोबरी क अधिकार आ जिमवारी उठवला के सामयिक वकालतो रहे। विश्वजुद्ध का सन्दर्भ में उपनिवेशवादी जर्मनी, जापान के भर्त्सना का साथ, हर दकियानूसी सोच शोषन आ छल के मुखर विरोध करे के आपन नाटकीय शैली राहुल जी के खासियत रहे। समकालीन भोजपुरी साहित्य में ऊ नाटक का जरिये, बदलाव खातिर एगो वैचारिक हस्तक्षेप करत लउकत बाड़न। ई कतना सार्थक आ सोद्देश्य रहे एकर पड़ताल ओह समय संदर्भ में कइला पर जाहिर होई कि समाज पर ओकर कतना प्रभाव पड़ल।

1857 के स्वतंत्रता संघर्ष के नायक कुँवर सिंह के नाटक के चरित्र बना के लिखल दुर्गाप्रसाद सिंह 'नाथ' के नाटक 1962 में भले आइल बाकिर 'नाटक' के समस्या प्रधान

बनवला के कोसिस 'नाथ' जी के दुसरका नाटक 'न्याय के न्याय' में लउकल। एमे जुग के बदलाव का साथ, समाज के कुछ अनसुलझल सवाल खड़ा कइल गइल रहे। सामाजिक दशा के अपना आंचलिक ताव–तेवर का साथ शिवमूरत सिंह के 'नयकी पीढ़ी' आ माहात्म्य सिंह के 'निरमोहिया' (1962) नया आ पुरान पीढ़ी के द्वन्द्व, कशमकश उभारे के उतजोग करत लउकल। समकालीन सोच–विचार में आधुनिकता के पइसार से आइल बदलाव भोजपुरी नाटकन में, कमोबेस झलकल सुभाविक रहे। गँवई–लोकजीवन के छबि उभारे में, भोजपुरी नाटककारन के दिलचस्पी जादा भइला का बावजूद, ई सब नाटक मंचित ना भइला का कारन साहित्यिके रहि गइलन सऽ। श्रीनिवास मिश्र के पाँच–छव गो नाटक प्रकाशित भइलन स, ओसे भोजपुरी नाटक साहित्य क बढ़ोत्तरी जरूर भइल, बाकिर सफल मंचन ना भइला का कारन उनहन का सार्थकता आ प्रासंगिकता के आकलन ना हो पावल, जवन होखे चाहत रहे। 'माई के लाल', 'तीन भाई' (1968), 'गवना के रात (1970)', 'अरघ के बेरा' (1974), 'हीरा रतन' (1974), 'भोजपुरिया जवान' (1980) आदि में श्रीनिवास जी, गँवई जीवन के अच्छा–बुरा आ विसंगतियन के परोसला का साथ ओकरा आस्थापरक पक्ष आ राष्ट्रीय भावना के अभिव्यक्ति देबे के भरपूर कोसिस कइले बाड़न। एह सब में गँवई जीवन के दुख–दरद आ समस्यो बा।

भोजपुरी समाज में, साहित्यिक रचाव वाला नाट्कन के मंचन से, नाटक बिधा के लोकप्रिय बनवला के मजिगर उतजोग ना भइला से, नाटककारन के सिरजनशीलता के नया–नया सर्जक रूप ना विकसित भइल। सतीश्वर सहाय 'सतीश' के 'माटी के दीया, घीव के बाती' (1971), नन्दकिशोर मतवाला के 'बिरहा सतावे दिन रात' (1972), विमलेश जी के 'आल्हा–ऊदल' जइसन नाटक भोजपुरी लोकरुचि का लिहाज से रचल गइल रहे। मतवाला के दू गो अउर नाटक 'दिनवाँ भइल बदनाम' (1976), 'अँगना भइल बिरान' (1977), रोमांटिक विषय–वस्तु वाला रहे, तबो भोजपुरी नाटक अपना समय–सन्दर्भ में अपना जोरदार उपस्थिति आ सिरजनशीलता के आभास ना करा पवलस। गरीब आ धनी वर्ग के विषम संबंध के रेखांकित करत परमात्मा पाण्डेय के 'अत्याचार' आ महेन्द्र गोस्वामी के 'लुकवारी' (1980) से भोजपुरी नाटक के विषय–वस्तु बदलल। लुकवारी के नायक समाजिक चेतना से भरल–पुरल, रहे। ऊ लूट, छल प्रपंच अन्याय के विरोध में खड़ा भइल त कइसे ओके राजनीतिक कुचक्र क शिकार बनावल गइल ईहो साँच देखवला का कारन, नाटक समकालीन जथारथ के उभारे में सफल बुझाइल।

सूर्यदेव पाठक 'पराग' के 'जंजीर', सुरेश काँटक के 'रहमान चाचा' समकालीनता के अपना अंदाज में अभिव्यक्ति देत बुझाइल। काँटक के दोसर नाटक 'हाथी के दाँत' आ 'वन्देमारतम्' में एगो वैचारिक दखल करत 'जथारथ' लउकल। ई जथारथ नाटककार के 'आपन गढ़ल जथारथ' रहला का कारन, जथारथ के आभासे भर करावत रहे। सुरेश काँटक के नाट्यकला, साहित्यिक रचाव में, 'पक्षधरता' के पक्षधर बा। फत्तेशाही पर लिखल गइल उनकर नाटक 'पहिला नाटक' एगो समय के जियत जागत तस्वीर खड़ा करे वाला प्रभावी नाटक बन सकल बा। नाटक लेखन का साथ ओकरा मंचन आ प्रस्तुतीकरन का दिसाईं महेन्द्र प्रसाद सिंह के 'रंगश्री' संस्था का योगदान के चर्चा जरुरी बा। उहाँ के 'बबुआ गोबर्द्धन' हास्य–व्यंग्य के लोकप्रिय नाटक रहे जवना में नया–पुरान पीढ़ी के द्वन्द्व आ बेरोजगारी के समस्या देखावल गइल बा। 'रंगश्री' भोजपुरी नाट्यविद्या आ कला का प्रचार प्रसार में अच्छा आ रचनात्मक कोसिस कर रहल बा।

समकालीनता के अपना–अपना सोच–समझ का मुताबिक उपयोग करे क कोसिस में, कहीं कहीं नाटककार के कृति एगो खास वैचारिक फार्मूला फ्रेम में, कल्पित जथारथ चित्रित करत लउकत बाड़ी सन। तटस्थता, निरपेक्षता भा 'इम्पार्शियलिटी' नाटककार का कृति के श्रेष्ठ बनावेला। भोजपुरी नाट्यविधा, कहानिये लेखा यदि अपना सुभाविक ढंग–ढर्रा में विकसित होइत त मौलिक लागित। उधार के विचार, सोच आ बेमतलब बेतुका प्रयोग 'रचना' के सुभाव बदल देला। नाटक समय–सापेक्ष जन–जीवन के चित्रण करत खा, व्यक्ति का अन्तर्वाह्य संघर्ष आ वैचारिक द्वन्द्व के जियतार ढंग से उकेरेला, एही से ऊ अपना दर्शक भा पाठक का भीतर करुणा, टीस, क्षोभ भा हलचल पैदा करेला। मूल्यहीनता के एह दौर में, जहाँ सामूहिकता, पारस्परिकता आ समाजिक समरसता टूटल–छीजत जा रहल बा, अर्थवान नाटक, जड़ता के तूरे का साथ, बदलाव के चेतना पैदा कर सकेला, मानवी संबंधन में रचनात्मक ऊर्जा भर सकेला। भोजपुरी भाषा–समाज के अइसन जीवन्त आ प्रभावी नाटकन के जरुरत बा। ••

भोजपुरी साहित्य मण्डल बक्सर : पुस्तक-लोकार्पण समारोह

श्री भगवान पाण्डेय 'निरास' के किताब ''किसिम-किसिम के फूल''

(25 फरवरी 2018)

विश्व भोजपुरी सम्मेलन, गाजियाबाद इकाई का आयोजन में
जे0पी0 द्विवेदी के गीत संकलन ''जबरी पहुना भइल जिनिगी' के विमोचन

शिलीमुख के कबिताई

(एक)

जेकरा पर बा तोहके नाज
ओकरे से बा बिगरत काज !

अँइचा के ऊजर ना लउके
आन्हर के सूघर ना लउके
सब बाउर , नीमन कुछ नाहीं
ओकरा के बस गद्दी चाहीं
जाति -बरग में भेद बढ़ा के
सुबिधा - शक्ति -अफीम चटा के
जतना चाही लूटी खाई
खुरचुन के परसाद खियाई
पुहुत दर पुहुत ओकरे राज!
गद्दी छिनते भइल नराज !!

रहि- रहि रोज रसाई छेरे
फइलावत दुर्गन्ध घनेरे
धिक् इरिखा, धिक् धिक् अन्हरउटी
धिक् ओकर दूमुँहाँ कसउटी
खन तोला, खन माशा- रत्ती
अगरु- धुआँ के बारे बत्ती
टुकी -टुकी में तन्त्र बाँटि के
बार जोगावे, माथ काटि के
चिरइन पर जस झपटे बाज !
ओइसे ताक में लउके आज !!

कुछ बिखधर बक्ता उपरवलस
इनिके कुछ उनके उसकवलस
जहवाँ लउके खर भा पुअरा
लुत्ती लेसे पहुँचे दुअरा
आगि लेसि फिर -फिर चिचियाय
हेली -मेली ले फोंफियाय
खन जलूस , खन नाराबाजी
थेथर मतिन करे लफ्फाजी
हाय -हाय बँट गइल समाज !
हाय - हाय छिन गइल सुराज !!

(दू) ऊधो हम नव जुग के ग्यानी !

ऊधो, हम नवजुग के ग्यानी !

काम-क्रोध-मद-लोभ, कुटिलता गइल न लोभी मन से
पद,साधन सुख-सुबिधा के लस लसत गइल जीवन से
जब जइसन, तब तइसन कइनी, मरम हमीं बस जानी !
ऊधो, हम नव जुग के ग्यानी !

पोथी पढ़ि पढ़ि बढ़ल जटिलता कुमति बढ़ल अभिमानी
भौतिक द्वंद - छन्द, दलबन्दी में पुरुषार्थ समानी
ग्यान कहाँ ले होइत भीतर, लोग कहे अग्यानी !
ऊधो , हम नव जुग के ग्यानी !

साँच - साफ हम कुछ ना बोलीं हमरो कुछ लाचारी
समता के पचरा गावत में, गारी दिहल लचारी
बेद - शास्त्र के पछँउड़ बन्हले कचरा रोज डँसानी !
ऊधो , हम नव जुग के ग्यानी !!

(तीन) एकतारा

उहो बजावेले एकतारा !

तुलसी -सूर प' मूड़ी झाँटसु
लेइ कबीर के नाँव सरापसु
भेद भाव के टाफी चाभत, कबिता -कहनी लीखसु नारा !
भइया, उहो बजावेले एकतारा !!

पढ़सु फारसी, बेचसु हिन्दी
उर्दू में अँगरेजी बिन्दी
अनचितले, जब-तब चिहाइ के, नापसु भोजपुरी के पारा!
उहो बजावेले एकतारा !!

सवख क्रान्ति के जब-जब उमगे
नकली अहरा भित्तर सुनुगे
ढकचसु ग्यान, करस गोलबन्दी, लफ्फाजी के लेइ सहारा !
उहो बजावेले एकतारा !!

चिहुँकस देखि के बिहिटी लुगरी
रोज बनावसु नया कटेगरी
भेद करसु अदिमी, अदिमी में, समता के बोकरसु फउहारा !
भइया , उहो बजावेले एकतारा !!

धरम निबाहे में रिसियालन
प्रेम कचरि के रोजे खालन
बाकिर दया, मोह, ममता पर, धइ लेलन सरकहवा नारा !
उहो बजावेलन एकतारा !!

देह , भूख के बाटे बन्डल
रोजी-रोटी में भूमण्डल
मायावी बाजार घुमावे, घुमसु उहो बन के बेचारा !
भइया, उहो बजावेले एकतारा !!

(चार) चैनलिया गीत

हमहूँ चलाइब एगो चैनल
प्रचार करब चोकर के !

मैदा के झूठ-साँच अएगुन गिनाइब
झुठहीं के गाइ-गाइ जाँता चलाइब
पीसब मोटन्जा समाजवाद गाइब
लछिमी के रात-दिन मनाइब
बहार परो नोकर के !
हमहूँ चलाइब एगो चैनल/प्रचार करब चोकर के !

नव जुग में 'चोकर' क महिमा अपार बा
गाइ -भइँस के पूछो, अदिमी तेयार बा
रोगियन ले बेसी त बैदे बेमार बा
जेकर न खुद के ठेकाना
भरोस करो ओकर के !
हमहूँ चलाइब एगो चैनल/प्रचार करब चोकर के !

हद से बेहद्दी बा, आपुस का रार में
अब केहू का लागी, इहवाँ कतार में
चउचक चटकार लगी डिजिटल -बजार में
सरपट कलम दउराइब
उजार देइब ठोकर के !
हमहूँ चलाइब एगो चैनल/प्रचार करब चोकर के !

••